जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

जालोर

Rashtradoot

फोनः- 226422, 226423 फैक्सः- 02973-226424 वर्षः 20 संख्याः 200 प्रभात जालोर, मंगलवार, 28 अक्टूबर, 2025 पो. रजि. /RJ/SRO/9640/2022-24 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

अमेरिका के विदेश सचिव रूबियो ने ढूँढ कर एस. जयशंकर से मुलाकात की और बहुत मीठी-मीठी बातें कीं

रूबियो के इस प्रयास से भारत का विदेश मंत्रालय अचंभित, पर खुश भी है

- रूबियो ने अपनी मीठी बातों से ट्रंप की तल्खियों को बैलेंस करने का प्रयास किया।
- भारत में यह धारणा जोर पकड़ती जा रही थी कि ट्रंप भारत से संबंधों को तत्कालिक आर्थिक लाभ के चश्मे से देखते हैं, न कि दीर्घकालीन स्थाई आर्थिक लाभ दृष्टि से।
- कुछ समय पूर्व तक 65 प्रतिशत भारतीय जनता अमेरिका से मैत्रीपूर्ण संबंध रखना चाहती थी जो 2023 में 50 प्रतिशत रह गई।
- भारत का विदेश मंत्रालय रूबियो के प्रयास से इसलिए भी प्रसन्न है, क्योंकि इस प्रयास से यह स्थापित हो गया कि वॉशिंगटन से भारत की मित्रता ऑटोमैटिक नहीं हैं, बल्कि यह रिश्ता भारत के आर्थिक हित व स्वायत्तता के आदर पर ही स्थापित हो सकता है।

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 27 अक्टूबर। कुछ दिन पहले 48 वें आसियान शिखर सम्मेलन के दौरान कुआलालंपुर में अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो की भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर से हुई मुलाकात ने कूटनीतिक हलकों से कहीं आगे तक ध्यान खींचा है। यह भेंट भले ही एक शिष्टाचार भेंट प्रतीत होती है, लेकिन इसके पीछे यह गहरा संदेश छिपा है कि डॉनल्ड ट्रंप की तीखी बयानबाजी और टैरिफ की धमकियों के बावजूद, वाशिंगटन नई दिल्ली को एक रणनीतिक साझेदार के रुप में महत्व देता है। भारत के लिए, यह मुलाकात इरादों की परीक्षा थी: क्या ट्रंप का अमेरिका अब भी एक विश्वसनीय मित्र है, या फिर हितों को तोलने वाला लेन-देन आधारित साझेदार?

एक प्रमुख रिपब्लिकन नेता और ट्रंप के सबसे करीबी सीनेट सहयोगियों में से एक, रुबियो, चीन के खिलाफ सख़्त रुख और इण्डो- पैसिफिक साझेदारी को मजबूत करने के समर्थक रहे हैं। जयशंकर के साथ उनकी यह भेंट, शांत कूटनीति, ट्रंप की आक्रामक शैली और संस्थागत स्थिरता के बीच संतुलन बनाने की कोशिश थी। भारत के लिए द्विदलीय समर्थन को रेखांकित करके, रुबियो का उद्देश्य था, इस वर्ष की शुरुआत में अमेरिका द्वारा भारतीय इस्पात और दवा कंपनियों पर नए टैरिफ लगाए जाने के बाद नई दिल्ली के नीतिगत हलकों में उभरी आशंकाओं को शांत करना।

समय महत्वपूर्ण था। भारत में जनता की भावना, जो कभी अमेरिका के प्रति अत्यधिक सकारात्मक थी, अब फिसलने लगी है। सर्वेक्षणों के अनुसार, 2023 में जहाँ 65 प्रतिशत भारतीय अमेरिका के प्रति सकारात्मक रुख रखते थे, वहीं 2025 के मध्य में यह आंकड़ा बमुश्किल 50 प्रतिशत रह गया और यह धारणा बढ़ती जा रही है कि वाशिंगटन भारत जैसे साझेदारों को दरकिनार कर रहा है। व्यापक चिंता यह है कि ट्रम्प 2.0 में अमेरिका अपने सहयोगियों को दीर्घकालिक रणनीतिक विश्वास के बजाय, मुख्य रूप से अल्पकालिक आर्थिक लाभ के नज़रिए से देख रहा है।

इस प्रकार, रुबियो का हस्तक्षेप इसलिए भी अहम था, क्योंकि उन्होंने भारत-अमेरिका साझेदारी के स्तंभों- प्रौद्योगिकी सहयोग, रक्षा सहयोग और लोकतांत्रिक मूल्यों को दोहराया। उन्होंने कथित तौर पर सेमीकंडक्टर निवेश के विस्तार, संयुक्त रक्षा उत्पादन और लचीली आपूर्ति श्रृंखलाओं पर चर्चा की, जो ग्लोबल मैनुफैक्चरिंग में चीन के विकल्प के रूप में उभरने की भारत की महत्वाकांक्षा के अनुरूप हैं। नई दिल्ली के लिए, ये प्रतिबद्धताएँ मायने रखती हैं: ये संकेत देती हैं कि अमेरिका के साथ संबंध सिर्फ़ एक बैलेंस-शीट गणना से कहीं बढ़कर हैं।

फिर भी, ये प्रतीकात्मकता इस विषमता को छिपा नहीं सकती। हालाँकि अमेरिका अपनी हिंद-प्रशांत रणनीति में भारत को एक महत्वपूर्ण साझेदार मानता है, फिर भी उसने व्यापार बाधाओं, डेटा स्थानीयकरण और

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

स्वदेशी सर्वेक्षण पोत नौसेना में शामिल होगा

- कोच्चि नौसेना बेस पर नौसेना प्रमुख की उपस्थिति में 6 नवम्बर को 'इक्षक' को बेडे में शामिल किया जायेगा।

नयी दिल्ली, 27 अक्टूबर। देश में ही निर्मित सर्वेक्षण पोत इक्षक को अगले महीने कोच्चि नौसैनिक बेस में नौसेना के बेड़े में शामिल किया जायेगा। नौसेना के प्रवक्ता ने सोमवार को बताया कि इस पोत को 6 नवम्बर को नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश के. त्रिपाठी की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में नौसेना में शामिल किया जायेगा।

इक्षक नौसेना में शामिल किये जाने वाला अपनी श्रेणी का तीसरा पोत है और यह उन्नत, अत्याधुनिक प्लेटफार्मों के निर्माण के प्रति नौसेना की दृढ़ प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। साथ ही इससे क्षमता संवर्धन और आत्मनिर्भरता की गति को आगे बढ़ ाते हुए स्वदेशी जल सर्वेक्षण के क्षेत्र में उत्कृष्टता में एक नया मार्ग प्रशस्त हुआ है।

गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स (जीआरएसई) लिमिटेड, कोलकाता द्वारा निर्मित पोत इक्षक में 80 प्रतिशत से अधिक स्वदेशी सामग्री का उपयोग किया गया है। यह पोत जीआरएसई और भारतीय एमएसएमई के बीच सफल सहयोग का प्रमाण है, जो आत्मनिर्भर भारत की भावना और शक्ति को गर्व से दर्शाता है।

जल सर्वेक्षण कार्यों की प्राथमिक भूमिका के अलावा इसे दोहरी भूमिका

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'अगर जनरल लड़ाई छोड़ भागे तो सेना कब तक टिकी रह सकती है?'

प्रशांत किशोर की स्वयं चुनाव न लड़ने की घोषणा के बाद उनकी पार्टी साइड लाइन्ड सी हो गई है बिहार चुनावों में

- शायद यह भांपते हुए, प्रशांत किशोर ने यह टिप्पणी की है कि चुनाव के बाद या तो वे अर्श पे होंगे या फिर फर्श पर।
- कांग्रेस भी कुछ नाखुश सी लगती है, तभी पटना में मंगलवार को तेजस्वी यादव द्वारा जारी होने वाले महागठबंधन के घोषणा पत्र के समारोह में न तो राहुल गांधी होंगे और न ही मल्लिकार्जुन खड़गे।
- भाजपा भी कुछ मायूस सी है कि अब तक प्रधानमंत्री के पूरे शासनकाल में पार्टी अपने किसी नेता को मुख्यमंत्री नहीं बनवा सकी।
- भाजपा को आशा है कि इस बार उसकी इस आकांक्षा की पूर्ति होगी।

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 27 अक्टूबर। भारी उतार चढ़ाव का सामना कर रहे बिहार विधानसभा चुनाव में प्रचार जोरों पर है और चुनावों में सीधे मुकाबले के आसार प्रबल हो रहे हैं। तेज़ी से हो रही उथल-पुथल एनडीए और महागठबंधन के बीच सीधी टक्कर की ओर बढ़ रही है।

राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि प्रशांत किशोर का बहुचर्चित तीसरा पहिया धीरे-धीरे हाशिये पर जा रहा है।

माना जा रहा है कि जिस दिन प्रशांत किशोर ने खुद चुनाव न लड़ने की घोषणा की, उसी दिन उनका चुनावी दांव उल्टा पड़ गया। इसके बाद यह आरोप लगने लगे कि अगर जनरल मैदान छोड़ दें, तो क्या सेना उनके पीछे आ सकती है?

प्रशांत किशोर पहले ही कह चुके थे कि या तो वह पहले होंगे या आखिरी। अर्श पे या फ़र्श पे।

महागठबंधन का चुनावी घोषणापत्र कल जारी होगा, लेकिन दिलचस्प बात यह है कि तेजस्वी यादव के साथ न तो राहुल गांधी और न ही मल्लिकार्जुन खड़गे मौजूद होंगे। राहुल गांधी के खास माने जाने वाले के.सी. वेणुगोपाल पटना में हैं और उनके पार्टी का प्रतिनिधित्व करने की संभावना है।

राहुल गांधी 28 अक्टूबर को तेजस्वी यादव के साथ बिहार में तीन जनसभाएँ करेंगे और उसके बाद प्रियंका गांधी के साथ राहुल की सभा के लिए कुछ और दिन निर्धारित किए गए हैं।

चुनाव के बाद अगर महागठबंधन सत्ता में आता है, तो कांग्रेस का एक उपमुख्यमंत्री होगा, लेकिन इसकी घोषणा अभी नहीं की गई है। वे सहनी को उपमुख्यमंत्री बनाने पर इसलिए सहमत हुए क्योंकि वे कम सीटों पर चुनाव लड़ने को तैयार थे। सहनी की वीआईपी पार्टी का कई इलाकों में अच्छा-खासा प्रभाव है और उनके गठबंधन में शामिल होने से महागठबंधन को फायदा होने की संभावना है।

भाजपा ने मुख्यमंत्रियों, केन्द्रीय मंत्रियों और अन्य लोगों को बिहार में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

आखिर बिहार चुनाव प्रचार से क्यों दूर हैं राहुल

राहुल ने आखिरी बार एक सितम्बर को बिहार में सभा की थी, उसके बाद से वे बिहार नहीं गए हैं

- यहाँ तक कि महागठबंधन का घोषणा पत्र मंगलवार को जारी किया जा रहा है, पर, उसमें भी राहुल उपस्थित नहीं हो रहे हैं।
- चर्चा है कि राहुल एक तो प्रदेश कांग्रेस के नेतृत्व से नाराज़ हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि पार्टी लालू यादव से सीटों के लिए सही तरीके से सौदेबाजी नहीं कर पाई।
- इसके अलावा तेजस्वी को मुख्यमंत्री पद का प्रत्याशी घोषित किए जाने के कारण, राहुल बिहार में दूसरे दर्जे की भूमिका निभाना नहीं चाहते हैं।

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 27 अक्टूबर। राहुल गांधी को बिहार में आखिरी बार 1 सितम्बर को देखा गया था, जब उन्होंने अपनी 'वोटर अधिकार यात्रा' की समापन रैली को संबोधित किया था। इसलिए सवाल यह उठता है कि आखिर क्या कारण है कि वे चुनावी राज्य बिहार में इतने लंबे समय से अनुपस्थित हैं? क्या उनका अनुपस्थित रहना महागठबंधन की इस रणनीति का हिस्सा है, कि राहुल बनाम मोदी का मुद्दा मुख्य रुप से सामने न आए? क्या इसका कारण यह है कि राहुल राज्य पार्टी नेतृत्व से नाखुश हैं, क्योंकि वह आरजेडी के साथ सीटों के बंटवारे पर दृढ़ता नहीं दिखा सका? या फिर क्या ऐसा इसलिए है कि तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार के रुप में नामित किए जाने के बाद, वह नहीं चाहते कि उन्हें आरजेडी नेता के सामने दूसरे नम्बर के नेता के रुप में देखा जाए?

सूत्रों के अनुसार, राहुल गांधी, प्रियंका गांधी, मल्लिकार्जुन खड़गे और पार्टी के कई अन्य नेता जल्द ही बिहार का दौरा करेंगे और 6 नवम्बर को प्रचार अभियान के समापन से कुछ दिन पहले एक जोरदार प्रचार करेंगे। संकेत मिल रहे हैं कि राहुल 2 नवम्बर को बिहार पहुंचेंगे और पहले चरण में खगड़िया और सीमांचल क्षेत्र के अन्य स्थानों पर रैलियों को संबोधित करेंगे। हालांकि, सवाल यह भी है कि कांग्रेस के लिए यह बहुत देर से की गई कोशिश तो साबित नहीं होगी?

शीर्ष भाजपा नेताओं में नरेन्द्र मोदी, अमित शाह और योगी आदित्यनाथ पहले ही प्रचार में जुट चुके हैं, और यहां

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

प्रधानमंत्री ने छठ पूजा की शुभकामनायें दी

- उन्होंने कविता पोडवाल का छठी मैया का भक्ति गीत एक्स पोस्ट पर साझा किया।

नयी दिल्ली, 27 अक्टूबर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को देशवासियों को छठ पूजा के पहले अर्ध्य के मौके पर शुभकामनाएं दीं।

मोदी ने इस अवसर पर अपने एक्स पोस्ट पर कविता पोडवाल द्वारा गाया हुआ छठी मैया को समर्पित भक्ति गीत भी साझा किया।

प्रधानमंत्री मोदी ने सोशल मीडिया एक्स पर अपने एक पोस्ट में लिखा, "देश भर के अपने परिवारजनों को महापर्व छठ के संध्या अर्ध्य की अनंत शुभकामनाएं।

इस पावन अवसर पर अस्ताचलगामी सूर्य को अर्ध्य अर्पित करने की हमारी परंपरा बहुत विशिष्ट है।

सूर्यदेव की कृपा से सबका कल्याण हो, सबको जीवन में सुख-संपदा और सफलता की प्राप्ति हो, यही कामना है। जय छठी मइया!"

भारत-अमेरिका ट्रेड वार्ता ब्रेकथ्रू निर्णायक दौर में पहुँची

ट्रंप द्वारा रूस की ऑयल कंपनियों से कारोबार करने वाले बैंकों को प्रतिबंधित करने से धीरे-धीरे सभी देशों ने अन्यत्र रास्ता खोज लिया

- भारत ने भी मिडिल ईस्ट, लैटिन अमेरिकी कंपनियों से तेल खरीद शुरु कर दी, जिससे अमेरिका ने भारत पर लगाये रेसिप्रोकल टैरिफ हटाने का इरादा दिखाया।
- इस घटनाक्रम से भारत-अमेरिका ट्रेड, लाईन पर आना शुरु हो गया है।
- भारत के चीफ इकोनॉमिक एडवाइज़र ने कलकत्ता में पत्रकारों से बात करते हुए संकेत दिए।

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 27 अक्टूबर। कहा जा रहा है कि भारत और अमेरिका एक व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर करने के करीब हैं। इस समझौते के तहत, भारत से अमेरिका जाने वाले निर्यात पर लगाए गए "रैसिप्रोकल टैरिफ" हटाए जा सकते हैं।

रूसी तेल की खरीद के लिए भारत पर लगाए गए भेदभावपूर्ण शुल्क को भी इस दौर की व्यापार वार्ता में शामिल किया गया है और संभावना है कि इसे भी वापस लिया जा सकता है।

अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने रूस से तेल खरीदने पर भारत पर एक विशेष दंडात्मक शुल्क लगाया था। उन्होंने रूस के साथ ऐसे तेल व्यापार में लेन-देन की सुविधा प्रदान करने वाले बैंकों और वित्तीय कंपनियों पर भी अतिरिक्त प्रतिबंधों की घोषणा की थी।

इन प्रतिबंधों के बाद, अधिकांश बैंकों ने रूसी तेल कंपनियों के साथ किसी भी तरह के लेन-देन से परहेज़ करना शुरु कर दिया है। ट्रंप ने अपने ताज़ा आदेशों के तहत, रूस की दो सबसे बड़ी तेल कंपनियों, रोसनेफ्ट और लुकोइल पर स्पष्ट रूप से प्रतिबंध लगा दिए हैं।

कई भारतीय कंपनियाँ कथित तौर पर अब मध्य पूर्व, लैटिन अमेरिकी और अमेरिकी कंपनियों से तेल खरीदने पर विचार कर रही हैं, जो रूसी तेल कंपनियों के साथ अपने खरीद समझौते समाप्त कर रही हैं। एक बार जब ये कंपनियाँ रूसी तेल खरीद से दूर हो जाएँगी, तो विशेष दंडात्मक शुल्क हटाया जा सकता है।

यह घटनाक्रम अमेरिका के साथ एक बड़े द्विपक्षीय व्यापार समझौते का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। अमेरिका चाहता है कि भारत और अमेरिका के बीच व्यापार संबंध, नए सिरे से तय किये जाएं, जैसा कि उसने अन्य देशों के साथ किये थे।

भारत ने व्यापार वार्ता शुरु तो की थी, लेकिन उसने अमेरिकी माँगों के आगे घुटने नहीं टेके और अपने व्यापारिक हितों पर डटा रहा। इसके परिणामस्वरूप, अमेरिकी राष्ट्रपति ने मनमाने ढंग से "भारतीय निर्यात पर रैसिप्रोकल टैरिफ" लगा दिए।

अब तक दोनों देशों के बीच पाँच दौर की वार्ताएं हो चुकी हैं, ताकि मतभेद दूर कर एक "फ्रेमवर्क एग्रीमैंट" (रूपरेखा समझौता) तैयार किया जा सके। लेकिन यह प्रयास सफल नहीं हो पाया, क्योंकि दोनों देशों के विचार कई मुद्दों पर अलग-अलग थे, विशेष रूप से कृषि क्षेत्र में बाज़ार तक पहुँच को लेकर।

जहाँ अमेरिका ने अपने कृषि उत्पादों के लिए अधिक पहुँच की माँग की थी, वहीं भारत ने भारतीय किसानों, खासकर छोटे किसानों, की चिंता के कारण अमेरिकी अनुरोधों को स्वीकार नहीं किया। इसके अलावा, दवाओं और

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सीजेआई गवई पर जूता फेंकने वाले के खिलाफ अवमानना की कार्रवाई नहीं

- सुप्रीम कोर्ट ने जूता फेंकने क आरोपी राकेश किशोर के खिलाफ अपराधिक अवमानना की कार्यवाही से इन्कार कर दिया, क्योंकि सीजेआई गवई ने राकेश किशोर को माफ कर दिया है।

नई दिल्ली, 27 अक्टूबर। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को वकील राकेश किशोर के खिलाफ चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया (सीजेआई) बीआर गवई के खिलाफ अभद्र व्यवहार के मामले में अपराधी अवमानना की कार्रवाई शुरू करने से इनकार कर दिया। कोर्ट ने कहा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मुख्यमंत्री की प्रधानमंत्री से भेंट के बाद राजनीतिक सरगर्मियाँ बढ़ीं

यह माना जा रहा है कि 2028 के चुनावों की रणनीति बनाने के लिए संगठन व सरकार में व्यापक फेरबदल हो सकता है

- मुख्यमंत्री की प्रधानमंत्री से तीन माह में तीसरी मुलाकात है। वे पहले जुलाई और सितम्बर में भी प्रधानमंत्री से मिले थे।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात की और प्रदेश के विकास कार्यों की जानकारी दी व प्रशासनिक चुनौतियों से भी अवगत कराया।

जयपुर, 27 अक्टूबर। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा सोमवार सुबह विशेष विमान से अचानक दिल्ली पहुंचे और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात की। मुख्यमंत्री कार्यालय ने इसे दीवाली के बाद की शिष्टाचार भेंट बताया है, लेकिन राजनीतिक हलकों में इस मुलाकात को लेकर काफी चर्चा हो रही है।

सूत्रों के अनुसार, इस दौरान मंत्रिमंडल विस्तार, राजनीतिक नियुक्तियों और सरकार के कामकाज को लेकर विस्तृत वार्ता हुई। राज्य में पिछले 22 महीनों से सीमित मंत्रियों के साथ सरकार चल रही है, जिससे कई विभागों का कार्यभार बढ़ा हुआ है और प्रशासनिक निर्णयों में देरी भी सामने आ रही है। इसलिए अब जल्द ही मंत्रिमंडल विस्तार की संभावना और मजबूत मानी जा रही है।

बताया गया कि मुखमंत्री ने प्रधानमंत्री को प्रदेश के विकास कार्यों की जानकारी दी और प्रशासनिक चुनौतियों से भी अवगत कराया। इसके साथ ही 10 दिसंबर को आयोजित होने वाले पहले राजस्थानी प्रवासी दिवस का निमंत्रण भी दिया।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की प्रधानमंत्री से यह तीन महीनों में तीसरी मुलाकात है। इससे पहले वे जुलाई और सितंबर में भी पीएम मोदी से मिल चुके हैं। लगातार हो रही इन मुलाकातों को लेकर यह कयास भी लगाए जा रहे हैं कि संगठनात्मक स्तर पर भी बड़ा बदलाव हो सकता है।

प्रदेश भाजपा में कई पद लंबे समय से खाली हैं और राजनीतिक नियुक्तियों को लेकर भी देरी हो रही है। ऐसे में पार्टी के भीतर संतुलन साधते हुए सभी गुटों को प्रतिनिधित्व देने की तैयारी दिखाई दे रही है। राजनीतिक जानकारों का मानना है कि कांग्रेस शासन के बाद मिले बड़े जनादेश को मजबूत दिशा देने और 2028 के विधानसभा चुनावों की रणनीति बनाने के लिए भाजपा संगठन और सरकार में व्यापक फेरबदल हो सकती है।

दिवाली बाद के समय को शुभ समय मानते हुए प्रदेश की राजनीति में अब बड़े फैसलों की राह खुलती दिख रही है। मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री को दी गई अपनी रिपोर्ट में विकास कार्यों की गति और तेज करने की इच्छा जताई है, ताकि जनता के भरोसे पर खरा उतरा जा सके।

प्रधानमंत्री मोदी ने भी मुख्यमंत्री शर्मा को जनसेवा के पथ पर और तेजी से आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है। अब इस मुलाकात के बाद पूरे प्रदेश की निगाह मंत्रिमंडल विस्तार की तारीख और नए चेहरों की सूची पर टिकी है।

राम मंदिर परिसर के सभी 15 मंदिरों का निर्माण पूरा

- श्रीरामजन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने यह जानकारी दी व कहा कि ध्वजारोहण समारोह के बाद श्रद्धालु सभी मंदिरों में दर्शन कर सकेंगे।

अयोध्या, 27 अक्टूबर। श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के मुख्य मंदिर समेत परकोटे के छह मंदिरों (शिव, गणेश, हनुमान, सूर्य, मां भगवती, मां अन्नपूर्णा और शेषावतार मंदिर) का निर्माण पूरा हो गया है। साथ ही, इन सभी पर ध्वजदंड और कलश भी स्थापित कर दिये गये हैं। परिसर के सभी 15 मंदिर अब पूरी तरह से बनकर तैयार हैं। यह जानकारी श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने दी है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

यदि देश भक्ति का मतलब व्यापक मानव मात्र का हित चिंतन नहीं है तो उसका कोई अर्थ ही नहीं है। –महात्मा गाँधी

नोट के बदले वोट, लोकतंत्र पर चोट

लोकतंत्र में सर्वाधिक महत्व नागरिक- मतदाता का होता है । उसी के वोट के आधार पर यह तय होता है कि 5 वर्ष के लिए राज्य अथवा केंद्र में किस दल को बहुमत मिलेगा और किसकी सरकार बनेगी? चुनाव को निष्पक्ष और स्वतंत्र रूप से संपादित करने के लिए चुनाव आयोग का गठन किया गया है। चुनाव प्रक्रिया से संबंधित जनप्रतिनिधित्व कानून 1951 बनाया गया। इस कानून में चुनाव की प्रक्रिया का विस्तृत विवरण दिया गया है। इसमें उम्मीदवारों के लिए व्यय की अधिकतम सीमा लोकसभा के लिए 95 लाख तथा विधानसभा के लिए 40 लाख निर्धारित की गई है। इस कानून की अवहेलना होने पर किसी भी जीते हुए उम्मीदवार का चुनाव न्यायालय द्वारा निरस्त किया जा सकता है।

कानून के अतिरिक्त, चुनाव के दौरान मतदाताओं को प्रलोभन देने या प्रताड़ित करने के प्रकरण कुछ समय पहले तक बहुत अधिक सामने आते थे। कुछ दशक पहले, मतदान के एक दिन पहले शराब, सामठी और नकद बांटना आम बात थी । ऐसा राजनीतिक दलों द्वारा इस सोच के साथ किया जाता था कि इस प्रकार सामग्री वितरण से मतदाता उनके पक्ष में मतदान करेंगे और वे सत्ता में आएंगे। अनेक बार ऐसा हो भी जाता था, क्योंकि भारतीय मतदाता अधिकांशतया अशिक्षित और निर्धन थे। तब मीडिया भी इतना अधिक जागरूक नहीं था । यह उल्लेखनीय है कि चुनाव खर्च की निर्धारित सीमा में, संबंधित उम्मीदवारों के दलों द्वारा किया गया खर्च सम्मिलित नहीं किया जाता है। इसीलिए चुनाव से पूर्व किया गया बड़ा खर्चा वह होता है जो किसी उम्मीदवार के खाते में तो नहीं जाता, किंतु मतदाताओं को रिझाने के लिए होता है । रैलियों, सभाओं के साथ ही आवश्यकता से अधिक वाहनों का प्रयोग, मतदाताओं को कई प्रकार से प्रलोभन देने का प्रयास, दलों की इसी धनराशि से होता आया है।

कानून के साथ ही, चुनाव प्रचार के दौरान शुचिता और गरिमा बनी रहे ,इसके लिए आदर्श चुनाव संहिता या "मॉडल कोड ऑफ कंडक्ट" बनाया गया। इसका उद्देश्य भाषा की मर्यादा बनाए रखना तथा सत्ता के दुरुपयोग को रोकना था। इस अवधि में सरकार के मंत्री, सांसदों एवं विधायकों पर सरकारी सुविधाओं का उपयोग करने पर भी प्रतिबंध लग जाता है। चुनावों की घोषणा होने के बाद सरकार कोई नीतिगत निर्णय भी नहीं ले सकती है।

चुनाव आयोग पर हाल ही के दिनों में यह आरोप लगते रहे हैं कि वह सत्ता धारी दल पर आदर्श चुनाव संहिता लागू करने में विपक्षी दलों की तुलना में कम सख्ती दिखाता है। आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन की अनेक शिकायतें चुनाव अधिकारियों को प्राप्त होती हैं जिन पर केवल नोटिस देकर अपने कर्तव्य की इतिश्री कर ली जाती है। सामान्यत: ये शिकायतें चुनाव होने के बाद फाइलों में दबी रह जाती हैं । संभव है, इसी कारण, राजनीतिक दल एवं उनके नेता आदर्श आचार संहिता को बहुत गंभीरता से नहीं लेते। इस हेतु कोई कानूनी कारवाई भी नहीं की जा सकती क्योंकि आचार संहिता को कानूनी मान्यता प्राप्त नहीं है।

हाल ही के दिनों में, मतदाताओं को प्रलोभन देने का नया तरीका सामने आया है, जो एक प्रकार से मतदाताओं को खरीदने जैसा ही है । इस प्रकार का कार्य वे सभी दल करने में लगे हैं जो सत्ता में हैं । इसके कुछ उदाहरण देने उपयुक्त होंगे।

गत महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के पहले लगभग सभी चुनावी सर्वेक्षण यह बता रहे थे कि महा विकास अगाड़ी, जिसमें कांग्रेस, शिवसेना (उद्धव) और राष्ट्रवादी कांठोस पार्टी (शरद पवार) सम्मिलित थे, को बहुमत मिलेगा।

चुनाव से कुछ दिनों पूर्व महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री ने 'लाड़की बहिन' योजना की घोषणा कर दी, जिसके अंतर्गत प्रत्येक निराश्रित महिला के खाते में प्रतिमाह 1500 रुपए जमा करा दिए गए। इस कारण, चुनाव से ठीक पहले महिलाओं के खाते में 1500 रुपए जमा हो गए। क्योंकि योजना की घोषणा चुनाव की तिथियां घोषित होने से पूर्व की गई थी, चुनाव आयोग का कोई अधिकार इसे रोकने का नहीं था। यह पैसा सरकारी खजाने से दिया गया जो सारा जनता का पैसा था। इसका असर यह हुआ कि जब चुनाव के परिणाम आए तो सभी सर्वेक्षणों के विपरीत, भाजपा-शिवसेना (शिंदे) और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (अजीत पवार) के गठबंधन महा युति को अच्छी खासी जीत मिली एवं उन्होंने दुबारा सरकार बनाई। इस बात पर किसी ने ध्यान नहीं दिया कि इस योजना के कारण महाराष्ट्र सरकार की वित्तीय स्थिति पर क्या प्रभाव पड़ेगा? सत्ताधारी दल ने जनता के पैसे से प्रलोभन देकर चुनाव अपने पक्ष में कर लिया । सब जानते हैं कि सरकार का धन जनता से ही तो वसूल किया जाता है। इसे मनमाने ढंग से खर्च करना और चुनाव से ठीक पहले किसी वर्ग को 'रिश्वत' देकर अपने पक्ष में करना आदर्श आचार संहिता का स्पष्ट उल्लंघन है । चूंकि तकनीकी रूप से आदर्श आचार संहिता, चुनाव की घोषणा होने के बाद ही लागू होती है, अत: इसके अंतर्गत सत्ताधारी दल पर कोई कार्यवाही नहीं हो पाती ।

बिहार का चुनाव परिणाम यह तय करेगा कि बिहार का मतदाता क्या अपने खाते में एक बार सीधी धनराशि प्राप्त करके संतुष्ट हो जाएगा और इसके आधार पक्ष में मतदान करेगा? प्रशांत किशोर की जन सुराज को छोड़कर शेष सभी दल केवल मतदाताओं को नोट देकर वोट लेने की बात कर रहे हैं । इस प्रक्रिया में हम यह भूल गए कि नोट बांटकर वोट बटोरने का काम लोकतंत्र पर चोट करने वाला है।

6 और 11 नवंबर को होने वाले बिहार के विधानसभा चुनाव के लिए भी नीतीश के नेतृत्व में एनडीए सरकार ने यही तरीका अपनाया। बिहार सरकार ने चुनाव की तिथियां घोषित होने से पूर्व मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना की घोषणा की जिसके अंतर्गत पहली किश्त में 75 लाख महिलाओं के खाते में 10000 जमा करा दिए गए। इसका उद्देश्य यह बताया गया कि इसके माध्यम से वे स्वरोजगार प्रारंभ करेंगी। इस बात का कोई उत्तर सत्ताधारी दल के पास नहीं है कि इस प्रकार की 'अच्छी योजना' का खयाल सरकार को 20 वर्षों तक क्यों नहीं आया? चुनाव से एक या दो महीने पहले महिलाओं के खाते में पैसा जमा करना, उन्हें रिश्वत देने से किसी प्रकार अलग नहीं है।

वास्तव में यदि बिहार सरकार बेरोजगारी को कम करना चाहती तो वह महिलाओं को स्वावलंबी बनाने के लिए कई योजनाएं चला सकती थीं, किंतु ऐसा नहीं किया गया। मतदाताओं को पैसे बांटने के काम में कोई दल पीछे नहीं है। सरकार द्वारा चुनाव से ठीक पहले योजना बनाकर सीधा पैसा मतदाताओं के खाते में स्थानांतरित करना तो स्पष्ट रूप से रिश्वत देने के बराबर ही है। जब मतदाताओं को मतदान के एक या दो दिन पहले पैसा बांटने को आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन मानते हुए कार्रवाई की जा सकती है, तो फिर सरकार द्वारा मतदान से पूर्व पैसा बांटने वाली योजनाओं पर कोई अंकुश नहीं लगाया जाना, चुनाव की निष्पक्षता पर प्रश्न चिन्ह खड़ा करता है ।

यह सब पैसा जनता से वसूल किया गया है। इस का अब तक चुनाव आयोग ने संज्ञान नहीं लिया है एवं न ही इस योजना पर कोई रोक लगी है। बिहार की वित्तीय स्थिति वैसे ही अत्यंत खराब है और इस प्रकार अचानक चुनाव से पहले मतदाताओं को पैसा बांटने की योजना बनाना केवल उन्हें प्रलोभन देने के समान ही है। बिहार में बेरोजगारी चरम पर है । बेरोजगारी की भयंकर समस्या के चलते हुए ही बिहार के लाखों युवा देश के अन्य राज्यों में जाकर काम करने के लिए विवश हैं।

बिहार चुनाव में 'जन सुराज' अकेली ऐसी पार्टी है जिसने चुनावी घोषणा पत्र में इस प्रकार धनराशि सीधे मतदाताओं को देने की योजना का जिक्र नहीं किया है। जन सुराज पार्टी के संस्थापक प्रशांत किशोर ने दो सालों तक बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों की निरंतर पदयात्रा की और वहां की समस्याओं को समझने के बाद उन्होंने इसके लिए एक 'रोड मैप' तैयार किया है। वे वहां के मतदाताओं को समझाने के काम में लगे हुए हैं। प्रशांत किशोर वही व्यक्ति हैं जिनके सलाहकार रहते हुए प्रधानमंत्री ने 2014 का चुनाव जीता था तथा नीतीश कुमार ने बिहार के विधानसभा का चुनाव जीता था । इसके अलावा बंगाल के मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को भी जीत दिलाने का इन्हें श्रेय जाता है । इस बात को वह बहुत अच्छी तरह से समझाने का प्रयास कर रहे हैं कि जब प्रधानमंत्री बहुत बड़ी संख्या में गुजरात एवं अन्य स्थान के लिए बिहार से ट्रेन चलाने की बात करते हैं तो वे भी बिहार के लोगों को अन्य राज्यों में रोजगार के लिए ले जाने का काम करेंगी। वे जनता से प्रश्न करते हैं कि बिहार के लोगों को बाहर जाना ही क्यों पड़ता है?

बिहार का चुनाव परिणाम यह तय करेगा कि बिहार का मतदाता क्या अपने खाते में एक बार सीधी धनराशि प्राप्त करके संतुष्ट हो जाएगा और इसके आधार पक्ष में मतदान करेगा? प्रशांत किशोर की जन सुराज को छोड़कर शेष सभी दल केवल मतदाताओं को नोट देकर वोट लेने की बात कर रहे हैं । इस प्रक्रिया में हम यह भूल गए कि नोट बांटकर वोट बटोरने का काम लोकतंत्र पर चोट करने वाला है। यदि हम चाहते हैं कि लोकतंत्र पर चोट न पहुंचे और वह स्वस्थ रहे तो हमें किसी भी रूप में मतदाताओं को अनावश्यक रूप से लुभाने और सरकारी पैसा उन पर लुटाने की प्रवृत्ति पर रोक लगानी होगी।यदि बिहार चुनाव में मतदाता नोट लेकर के भी नोट बांटने वालों को नकार दे तो "नोट के बदले वोट" देने की प्रवृत्ति पर अंकुश लगेगा और उन्हें सबक भी मिलेगा। ऐसा करके वे लोकतंत्र पर चोट होने से बचा पाएंगे और उसे स्वस्थ रख पाएंगे। लोकतंत्र का भविष्य मतदाताओं की समझ पर ही टिका हुआ है।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

शब्दों का अद्भुत चितेरा और जयपुर का बेजोड़ नगीना थे "पियूष पांडे"

पियूष पांडे ने 2014 के लोकसभा चुनाव में अबकी बार मोदी सरकार चुनावी स्लॉगन भी बनाया था

गोपेन्द्रनाथ भट्ट

भारत के विज्ञापन जगत में शब्दों का अद्भुत चितेरा माने जाने वाले और जयपुर के बेजोड़ नगीनों में से एक पियूष पांडे अब इस दुनिया में नहीं रहे। वे स्वयं पंचतत्व में विलीन होकर दिवँगत पाण्डे उपनाम से ईश्वर के स्लॉगन बन गए। पियूष पांडे की बहन विख्यात गायिका ईला अरुण के अनुसार वे साँस से जुड़ी बीमारी से पीड़ित थे। पद्मश्री अलंकरण से सम्मानित दिवंगत पाण्डे ने सात दशकों की अपनी जीवन यात्रा में दिल को छूने वाले कई अनूठे प्रिण्ट और श्रव्य दृश्य विज्ञापन और स्लॉगन बनाये। उन्होंने 2014 के लोकसभा चुनाव में अबकी बार मोदी सरकार चुनावी स्लॉगन भी बनाया था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उनके निधन पर गहरा दु:ख व्यक्त करते हुए अपने सोशल मीडिया अकाउंट एक्स पर लिखा कि वर्षों तक हमारें बीच हुई बातचीत को मैं हमेशा सहेज कर रखूँगा।

जानें क्या दिख जाए के लॉंचिंग के दौरान मेरी उनसें नई दिल्ली के बीकानेर हाऊस में पहलीं बार मुलाक़ात हुई थी। उनकी एक बहन रमा पांडे चाणक्यपुरी, नई दिल्ली में हमारी पड़ौसी थी। इस सन्दर्भ से उनसे हुए परिचय के दौरान मैंने उनकी रचनात्मक दृष्टि पर खुल कर बातचीत की थी। तब उन्होंने बहुत ही आत्मीयता से कहा था कि ईश्वर ने हम सभी को अपनी-अपनी भूमिका निभाने के लिए धरती पर भेजा है और एक दिन ईश्वर में ही विलीन हो कर हम भी एक स्लॉगन बन जाएँगे। उनके ये शब्द आज मैरे कानों में गूँज कर मुझें भावुक कर रहें है। जानें क्या दिख जाए राजस्थान पर्यटन का प्रसिद्ध विज्ञापन स्लोगन था, जिसे पियूष पांडे ने वसुंधरा राजे के मुख्यमंत्री कार्यकाल (2004-2008) के दौरान तैयार किया था।यह स्लोगन सिर्फ एक पर्यटन नारा नहीं था बल्कि पियूष पाण्डे की राजस्थान की आत्मा और अनदेखे सौंदर्य को दर्शाने वाली एक रचनात्मक दृष्टि थी। उस समय राज्य सरकार ने प्रदेश के पर्यटन को नई पहचान देने के लिए एक व्यापक प्रचार अभियान शुरू किया था। इसके लिए जिस विज्ञापन एजेंसी ओगिल्वी एंड माथर (Ogilvy & Mather) को विज्ञापन बनाने की जिम्मेदारी दी थी। उसके क्रिएटिव हेड पियूष पांडे ही थे। इस अभियान को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया और उन्हें इंडियन आइकॉन ऑफ एडवरटाइजिंग जैसे कई पुरस्कार भी मिले।

राजस्थान की राजधानी गुलाबी नगर जयपुर में जन्में और नौ भाई बहनों के मध्य पले और बड़े हुए पूर्व रणजी क्रिकेटर पियूष पांडे कहते थे कि राजस्थान इतना विविधताओं से भरपूर है कि यहाँ हर बार कुछ नया देखने को मिलता है। इसलिए जानें क्या दिख जाए! स्लॉगन बनाते समय हमने सोचा कि क्यों न लोगों को यह सोचने पर मजबूर किया जाए कि राजस्थान यात्रा के दौरान वहाँ न जानें क्या दिख जाए! उनका मानना था कि विज्ञापन सिर्फ प्रचार नहीं, बल्कि अनुभव की प्रेरणा होना चाहिए। इसलिए उन्होंने राजस्थान को देखने की जगह नहीं, महसूस करने की जगह के रूप में प्रस्तुत किया तथा कहा कि जानें क्या दिख जाए केवल एक स्लोगन नहीं बल्कि यह राजस्थान की आत्मा का गीत और आईना है, जिसे मैंने शब्दों में पिरोया है। उनकी यह रचना आज भी भारतीय पर्यटन अभियानों का एक क्लासिक उदाहरण मानी जाती है जहाँ विज्ञापन कला बन गया और शब्द भावना। भारत में पोलियो-अभियान के सघन प्रचार के लिए दो बूंद ज़िंदगी के जैसे स्लॉगन बनाने में उनका योगदान आज भी याद किया जाता है। भारत सरकार के अतुल्य भारत (Incredible India) अभियान से लेकर राजस्थान के जानें क्या दिख जाए तक पियूष पांडे ने भारत की सांस्कृतिक आत्मा को अंतरराष्ट्रीय मंच पर स्थापित कर उसे एक नई पहचान दी।

वर्ष 1982 में, 27 वर्ष की आयु में, पियूष पांडे ने भारतीय विज्ञापन कंपनी ओगिल्वी एंड माथर इंडिया (Ogilvy & Mather India) में क्लाइंट-सर्विसिंग एक्जीक्यूटिव के रूप में नौकरी प्रारंभ की। विज्ञापन-उद्योग में कदम रखने से पहले उन्होंने कोलकाता में चाय चखने (tea taster) जैसी नौकरियाँ भी की थीं, जहाँ उन्हें जीवन की विविध अनुभव प्राप्त हुए।

विज्ञापन-उद्योग की शुरुआत में यहाँ उनकी उम्मीदें बहुत कम थीं लेकिन उन्होंने हार न मानी और अपनी मेहनत से आगे बढ़े। उनका पहला प्रयास सनलाइट डिटर्जेंट के लिए एक प्रिंट विज्ञापन था, जिसे लिखकर उन्होंने विज्ञापन-क्षेत्र में कदम रखा। पियूष पांडे ने अपनी क्रिएटिव विचार-शैली और अद्वितीय दृष्टिकोण से भारतीय विज्ञापन-उद्योग में एक नया आयाम स्थापित किया। उन्होंने अनेक प्रतिष्ठित ब्रांड्स के लिए यादगार ऑडियो विजुअल विज्ञापन अभियान तैयार किए। भीमसेन जोशी द्वारा गाये गए कालजयी गीत फिर मिले सुर मेरा तुम्हारा के बोल भी पियूष पाण्डे ने ही लिखें थे। उनके अन्य विज्ञापन अभियान जैसे फ़ेविकोल के लिएतोड़ो नही, जोड़ो टैगलाइन विशिष्ट दृश्य-कला से भरें थे। उन्होंने केडबरी डेयरी मिल्क के लिए कुछ खास है जैसे मिठास भरें लोकप्रिय स्लोगन बनाए।

इसी प्रकार एशियन पेंट्स के लिए हर घर कुछ कहता है जैसा सांस्कृतिक कैम्पेन तैयार किया। जानें क्या दिख जाए स्लोगन के चार शब्दों वाले वाक्य ने राजस्थान की अनंत संभावनाओं, रहस्य, संस्कृति, कला, और प्राकृतिक सौंदर्य को एक पंक्ति में बाँध दिया। यह वाक्य हर किसी के मन में एक जिज्ञासा जगाता था और रहस्य पैदा करता था। साथ ही पर्यटकों के भीतर राजस्थान यात्रा की इच्छा जगाता था। यह स्लोगन कहता था राजस्थान आइए, यहाँ हर कदम पर एक नया चमत्कार है। यह सैलानियों के मन में राजस्थान को रहस्यमय और आकर्षक भूमि दोनों रूपों में उभार देने वाली एक अनूठी अनुभूति थी। जानें क्या दिख जाए की खूबसूरती इसकी अनिश्चितता में छिपी थी। यह बताता है कि यात्रा केवल मंज़िल तक पहुँचना नहीं, बल्कि रास्ते में मिलने वाले अनुभवों का आनंद है। इस टेग लाइन के साथ चलाए गए टीवी विज्ञापनों और प्रिंट अभियानों में थार का मरुस्थल, ऊँट की सवारी, लोकगीत और नृत्य, किले-महल और राजस्थान के गांवों की सादगी को दिखाया गया था। इस अभियान ने राजस्थान पर्यटन को नई ऊँचाई दी। साथ ही इससे देशी विदेशी पर्यटकों की संख्या में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई। साथ ही राजस्थान की ब्रांड-इमेज सिर्फ रेगिस्तान तक सीमित नहीं रही, बल्कि उसे संस्कृति, रंग और रोमांच के प्रदेश के रूप में स्थापित किया गया।यह भारत के सबसे सफल राज्य-स्तरीय पर्यटन अभियानों में से एक माना गया।

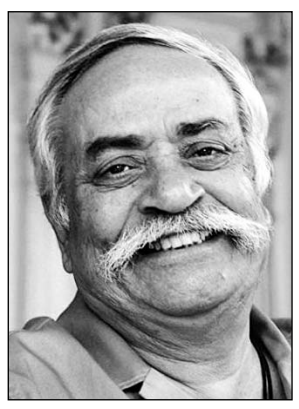

स्व. पियूष पांडे

इस अभियान को अंतरराष्ट्रीय पर्यटन अवार्ड्स में भी सराहना मिली और पियूष पांडे की रचनात्मकता को इंडियन आइकॉन ऑफ एडवरटाइजिंग के रूप में स्थापित किया। पियूष पाण्डे की विज्ञापन-कला ने भारतीय उपभोक्ता-संस्कृति से गहरा संबंध बनाया तथा विज्ञापन को सिर्फ उत्पाद बेचने की कला से ऊपर उठकर कहानियों, भाषा-संवेदनाओं एवं स्थानीय भावनाओं से जोड़ा। उनकी इस शैली ने भारत के देशी विज्ञापन और दृश्य को वैश्विक मानचित्र पर प्रतिष्ठित किया। भारतीय विज्ञापन जगत के इस महान क्रिएटिव जीनियस के जाने से भारतीय विज्ञापन-उद्योग ने एक दूरदर्शी क्रिएटर तथा संस्कृति-निर्माता खो दिया है। पियूष पांडे की जीवन यात्रा बताती है कि कैसे एक सामान्य पृष्ठभूमि से निकलकर, दृढ़ संकल्प, क्रिएटिव सोच और भारतीय संस्कृति के प्रति सच्चे निष्ठा से-विज्ञापन जगत में वैश्विक प्रभाव डाला जा सकता है। उनकी कहानियाँ-विज्ञापन सिर्फ बिक्री का माध्यम नहीं, बल्कि संवाद की कला थी।

गोपेन्द्रनाथ भट्ट,
साहित्यकार।

राजस्थान के सौर ऊर्जा का सिरमौर बनने में सवाई माधोपुर बना सहभागी

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्देशन में कोलाड़ा एवं रामसिंहपुरा में 2.94 मेगावाट क्षमता के सौर ऊर्जा प्लांट स्थापित - 250 से अधिक कृषक परिवारों को सिंचाई के लिए दिन के समय सौर ऊर्जा आधारित बिजली मिलेगी

सुरेन्द्र कुमार मीणा

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की दूरदर्शी ऊर्जा नीति और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के कुशल नेतृत्व में राजस्थान अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में देश का सिरमौर राज्य बन चुका है। प्रधानमंत्री कुसुम योजना के माध्यम से राज्य में सौर ऊर्जा उत्पादन ने नई ऊँचाइयाँ छू ली है, जिसमें सवाई माधोपुर जिला भी इस राष्ट्रीय ऊर्जा क्रांति का सशक्त सहभागी बन गया है। जिले के बौंली उपखण्ड स्थित कोलाड़ा 33/11 केवी सब-स्टेशन क्षेत्र में हाल ही में 1.82 मेगावाट क्षमता का सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किया गया है। यह राज्य का 956वां सौर संयंत्र है, जिससे सवाई माधोपुर जिले की सौर ऊर्जा उत्पादन क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। राजस्थान ने पीएम-कुसुम योजना के कंपोनेंट-ए एवं कंपोनेंट-सी के अन्तर्गत अब तक 2,000 मेगावाट क्षमता से अधिक के विकेन्द्रित सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित कर देश में एक नई मिसाल कायम की है। योजना के कंपोनेंट-ए में राजस्थान देश में प्रथम स्थान तथा कंपोनेंट-सी में महाराष्ट्र एवं गुजरात के बाद तीसरे स्थान पर पहुंच गया है।

इसी क्रम में सवाई माधोपुर सर्किल के रामसिंहपुरा 33/11 केवी सब-स्टेशन क्षेत्र में 1.12 मेगावाट क्षमता का विकेन्द्रित सौर संयंत्र भी प्रारंभ किया गया है, कोलाड़ा एवं रामसिंहपुरा में 2.94 मेगावाट क्षमता के सौर ऊर्जा संयंत्र की स्थापना से लगभग 250 से अधिक कृषक परिवारों को सिंचाई के लिए दिन के समय सौर ऊर्जा आधारित बिजली उपलब्ध होगी।

सवाई माधोपुर जिले में पीएम-कुसुम योजना के कंपोनेंट ए एवं सी दोनों घटकों में सराहनीय प्रगति हो रही है। सभी संयंत्रों की स्थापना उपरांत किसानों को सिंचाई के लिए दिन में बिजली उपलब्ध हो सकेगी एवं कृषि उत्पादन में भी वृद्धि होगी। वर्तमान में सवाई माधोपुर जिले में कुसुम योजना कंपोनेंट-ए के तहत अब तक कुल 3 मेगावाट क्षमता के सौर ऊर्जा संयंत्र चालू हैं, जबकि अतिरिक्त 3.67 मेगावाट क्षमता के संयंत्रों पर कार्य प्रगति पर है। जिले के सारसोप में 1.42 मेगावाट एवं कोलाड़ा में 2.25 मेगावाट उत्पादन क्षमता के संयंत्रों का स्थापना कार्य अंतिम चरण में है।

किसानों के लिए लाभ का नया सूर्योदय प्रधानमंत्री कुसुम योजना ने देश भर में किसानों के जीवन में नई ऊर्जा का संचार किया है। इस योजना से किसान अब बिजली व डीजल निर्भरता से मुक्त होकर सौर ऊर्जा का उपभोग कर दिन के समय सिंचाई कर रहे हैं। इससे न केवल उत्पादन लागत में कमी आई है, बल्कि अतिरिक्त आय का मार्ग भी खुला है।

ऊर्जा विभाग एवं विद्युत वितरण निगमों द्वारा इस योजना को जमीनी स्तर तक सफलतापूर्वक लागू किया जा रहा है। केंद्र सरकार ने राज्य की उत्कृष्ट प्रगति को देखते हुए कंपोनेंट-ए में वर्ष 2024-25 के लिए 397 मेगावाट और वर्ष 2025-26 के लिए 5000 मेगावाट क्षमता का अतिरिक्त आवंटन दिया है। वहीं कंपोनेंट-सी के लिए दोनों वर्षों में 2 लाख सोलर पंपों की अतिरिक्त क्षमता स्वीकृत की गई है। अब तक केंद्र सरकार राजस्थान को कंपोनेंट-ए में 5500 मेगावाट तथा कंपोनेंट-सी में 4 लाख सोलर पंपों का लक्ष्य आवंटित कर चुकी है।

कृषि एवं घरेलू विद्युत् कनेक्शनों को नई गति

राज्य सरकार ने कृषि कनेक्शन नीति-2017 में संशोधन कर यह प्रावधान किया है कि पीएम-कुसुम योजना के तहत स्थापित सौर संयंत्रों से जुड़े फीडरों पर प्राथमिकता के आधार पर तुरंत कृषि कनेक्शन जारी किए जाएंगे। इस निर्णय से सवाई माधोपुर जिले में किसानों को बड़ी राहत मिलेगी। वर्तमान में जिले में 1,590 कृषि कनेक्शन लंबित हैं तथा 480 नए आवेदन प्राप्त हुए हैं। नई नीति के तहत इन आवेदनों के शीघ्र स्वीकृत होने से किसानों को दिन में बिजली उपलब्ध कराना संभव होगा।

दीपावली से पूर्व बिजली कनेक्शन जारी करने के लिए चलाया विशेष अभियान के दौरान 1 अक्टूबर से 20 अक्टूबर तक मात्र 20 दिन में सवाई माधोपुर में 501 घरेलू कनेक्शन जारी किए गए।

राजस्थान और सवाई माधोपुर जैसे जिले इस राष्ट्रीय उपलब्धि में प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं। जिले के कोलाड़ा, रामसिंहपुरा, बोली, मित्रपुरा और बोरखेड़ा जैसे क्षेत्रों में स्थापित विकेन्द्रित सौर संयंत्र न केवल किसानों को दिन में बिजली दे रहे हैं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण, रोजगार सृजन और ग्रामीण समृद्धि की नई कहानी लिख रहे हैं।

–सुरेन्द्र कुमार मीणा,
सहायक जनसम्पर्क अधिकारी,
सवाई माधोपुर

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

मंगलवार 28 अक्टूबर, 2025

कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, षष्ठि तिथि, मंगलेवार, विक्रम संवत 2082, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र दिन 3:45 तक, सुकर्मा योग प्रात: 7:50 तक, तैतिल करण प्रात: 8:00 तक, चन्द्रमा रात्रि 10:15 से मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-धनु, मंगल-वृश्चिक, बुध-वृश्चिक, गुरू-मिथुन, शुक्र-कन्या, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज रवियोग दिन 3:41 तक है। राजयोग प्रात: 8:00 से दिन 3:45 तक है। त्रिपुष्कर योग दिन 3:45 से सूर्योदय तक है। आज कल्पादि, सूर्य षष्ठि व्रत पूर्ण होगा। आज डाला छठ पर्व पर अस्तगामी सूर्य अर्घ्य दिया जायेगा। आज षष्ठि तिथि में वृद्धि हुई है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:24 से 10:47 तक, लाभ अमृत 10:47 से 1:34 तक, शुभ 2:57 से 4:20 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:38, सूर्यास्त 5:44 तक

मेष

परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा हो सकती है। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

वृष

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। परिजनों से अनबन हो सकती है।

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। आर्थिक विवादों का निपटारा हो सकता है। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क

व्यक्तिगत परेशानियां दूर होने लगेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित परेशानियां दूर होने लगेगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है।

कन्या

परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

तुला

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा।

वृश्चिक

व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखें। आज अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को मानसिक तनाव रहेगा। धार्मिक-मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

धनु

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

मकर

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कुंभ

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

मीन

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक मामलों में उचित परामर्श मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

सार-समाचार

राजस्थान वुशु टीम जम्मू कश्मीर रवाना

जालोर, (कासं)। 69 वीं एस.जी.एफ.आई.राष्ट्रीय स्तरीय वुशु विद्यालय खेलकूद प्रतियोगिता 28 अक्टूबर से 1 नवंबर तक जम्मू कश्मीर श्रीनगर मैं आयोजित होगी। प्रतियोगिता के लिए टीम रवाना हुई। राजकीयउच्च माध्यमिक विद्यालय रोपसी के राष्ट्रीय निर्णायक कोच ललित कुमार ने बताया कि टीम का अंतिम चयन 17 व 18 अक्टूबर किया गया तथा 22 से 25 अक्टूबर प्रशिक्षण दिया गया। बालिका वर्ग में 45 किलो भारवर्ग में गायत्री पुनिया 48 किलों में किस्मत, 52 किलों में इशिता चौधरी, 56 किलो में नोजल, 60 किलों में हिमानी, 65 किलो अलमास, 70 रिया मिश्रा कोच बिंदु बाला, मैनेजर शबाना बालक वर्ग में 45 किलों भारवर्ग में खुशदीप, 48 किलो भारवर्ग में लक्षित, 52 किलो भारवर्ग में देवांश, 56 किलो भारवर्ग में मनीष, 60 किलों भारवर्ग में आदित्य सिंह राजपुरोहित, 65 किलों भारवर्ग में रेवत राम, 70 किलों भारवर्ग में मानवेंद्र सिंह, 75 किलो भारवर्ग में अंशुमन, 80 किलो में प्रिंस शर्मा में भाग लेंगे। बालक वर्ग के टीम कोच ललित कुमार, मेनेजर राम अवतार, चीप डे मिशन कमलेश कुमार टीम के साथ मूनसिंह राठौड,खेल प्रभारी जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय जालोर फूलचंद, दानाराम, लेखराम रहेंगे। उपनिदेशक रामसिंह मीणा,जिला शिक्षा अधिकारी भंवर लाल परमार , अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी नरेंद्र परमार, खेल प्रभारी निदेशालय आर के छंगाणी, हेमाराम जाट अतिरिक्त प्रशासनिक आधिकारिक (खेलकूद), खेल प्रेमी हरीश पुरोहित विक्रम पुरोहित, रूडाराम देवासी, समस्त स्टाफ रोपसी जिला वूशु संघ के सचिव कन्यालाल, अध्यक्ष शिवदत्त शर्मा , कोच प्रीतम सिंह सहित उपस्थित ग्रामवासी ने शुभकामनाएं दी।

छठ महापर्व की संध्या आराधना संपन्न

जालोर, (कासं)। जालोर शहर में छठ महापर्व की संध्या आराधना सोमवार को भक्ति और आस्था के वातावरण में सम्पन्न हुई। व्रतधारी महिलाओं ने सूर्य देव की उपासना करते हुए डूबते सूर्य को अर्घ्य अर्पित किया तथा परिवार की सुख–समृद्धि और कल्याण की कामना की। यह अवसर भारतीय लोकसंस्कृति में श्रद्धा, शुद्धता और सामूहिक एकता का प्रतीक माना जाता है। छठ पर्व सूर्य उपासना का एकमात्र ऐसा पर्व है जिसमें प्रकृति, जल, वायु, अग्नि और जीवन के संतुलन के प्रति आभार व्यक्त किया जाता है। व्रतधारिणी महिलाएँ चार दिन तक अत्यंत संयम, शुद्धता और निष्ठा के साथ व्रत का पालन करती हैं। आज की संध्या को डूबते सूर्य को अर्घ्य अर्पण कर भक्ति का चरम रूप देखा गया। जबकि कल प्रातः उगते सूर्य को अर्घ्य देकर पर्व का समापन होगा। छठ की पूजा में मिट्टी के सोप, बाँस के दौरे और सूप में सजे प्रसाद की विशेष भूमिका होती है। पारंपरिक प्रसाद में ठेकुआ, मीठा चावल, फल, नारियल, अदरक और गन्ना शामिल रहते हैं, जो न केवल पूजन सामग्री हैं बल्कि शुद्धता और परिश्रम के प्रतीक भी हैं। छठ गीतों की गूंज ने पूरे वातावरण को लोकधुनों से भर दिया। इन गीतों के माध्यम से पीढयों से चली आ रही पूर्वांचली परंपरा और मातृशक्ति की आराधना की झलक देखने को मिली। छठ पर्व केवल एक धार्मिक आस्था नहीं, बल्कि मानव और प्रकृति के अटूट संबंध का उत्सव है। यह पर्व व्यक्ति में अनुशासन, संयम, समर्पण और सामूहिकता की भावना को सशक्त करता है। आज की संध्या आराधना ने इस परंपरा की गरिमा और लोकआस्था को और प्रगाढ़ बनाया।

आयुक्त अशोक कुमार ने हालात जाने

जालोर, (कासं) । जालोर शहर की स्वच्छता, स्ट्रीट लाईट व्यवस्था और सीवरेज प्रणाली की समस्याओं का समाधान करने के लिए आयुक्त अशोक कुमार शर्मा का शहर भ्रमण और संबंधित अधिकारियों को सख्त निर्देश दिये। जालोर नगर परिषद के आयुक्त आशोक कुमार शर्मा ने सोमवार को शहर का विस्तृत भ्रमण किया, जिसमें उन्होंने सैनिटरी व्यवस्था, सडक प्रकाश व्यवस्था और सीवरेज प्रणाली की स्थिति का जायजा लिया। इस भ्रमण के दौरान शहर में सीवरेज लीकेज, टूटे मैनहोल ढक्कन, खराब स्ट्रीट लाइट्स और स्वच्छता से संबंधित समस्याओं को गंभीरता से देखा गया। भ्रमण के उपरांत आयुक्त ने तकनीकी अधिकारियों को इन समस्याओं के तत्काल समाधान के लिए सख्त निर्देश जारी किए, ताकि आमजन को हो रही असुविधाओं का शीघ्र निवारण हो और पर्यावरण संरक्षण सुनिश्चित हो। सफाई व्यवस्था को लेकर आयुक्त ने नियमित सफाई कराने एवं कचरा संग्रहण प्रणाली के उन्नयन और जलजमाव रोकने के लिए प्रभावी कदम उठाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा, जालोर शहर को स्वच्छ, सुरक्षित और पर्यावरण–अनुकूल बनाने के लिए हम प्रतिबद्ध हैं। संबंधित जोन के सफाई निरीक्षक एवं जमादार इन निर्देशों का कडाई से पालन करें, अन्यथा जवाबदेही तय की जाएगी। रोड लाईट व्यवस्था के संबंध में, आयुक्त ने संबंधित फर्म के प्रतिनिधि को रोशनी व्यवस्था सूचारू रूप से रखने के लिए पाबंद किया गया। आयुक्त अशोक कुमार शर्मा ने शहरवासियों से भी अपील की कि वे स्वच्छता अभियान में सहयोग करें और किसी भी शिकायत के लिए नगर परिषद को अवगत करवाये।

राजू शेख का दंताला शरीफ में सम्मान

जालोर, (कासं)। सिलावट समाज जालोर ने दरगाह सुल्तान शाह वली दंताला शरीफ गढ़ सिवाना में समाज के शिक्षाविद राजू शेख के व्याख्याता से उप प्रधानाचार्य के पद पर पदोन्नति होने पर सम्मान किया गया। दरगाह परिसर मे राजूशेख के पदोन्नति पर साफा, माला व स्मृति चिन्ह देकर सम्मान किया गया। समारोह मे शेख ने कहा कि समाज के बच्चों को अधिकाधिक शिक्षित करें। उन्होंने बच्चों को शिक्षित होकर समाज व प्रदेश का नाम रोशन करने की बात कही। वहीं समाज सेवी सीनियर नर्सिंग आफिसर शहजाद खान ने कहा कि यह हमारे लिए गर्व की बात की समाज के शिक्षाविद राजू शेख उप प्रधानाचार्य के पद पर आसीन हुए। उन्होंने समाज के बच्चों को शिक्षा के क्षेत्र मे आगे बढने की नसीहत दी। और समाज के बालक बालिकाओ के शिक्षा पर जोर दिया। इससे पूर्व दंताला दरगाह की जियारत कर देश मे अमन चैन खुशहाली व आपसी भाई चारा की दुआ मांगी। इस दौरान. लियाकत अली ,अयूब शेख, मुस्ताक खान, रशिद खान, सिराजुद्दीन खान, सलीम जावेद, हिदायत खान, असलम शेख, जानशेर खान, जाकिर खान , साबिर खान,रूबाब खान, रफीक मोहम्मद, रफीक खान, इरफान खान, मजीद खान, जहांगीर खान, अमीर शेख ,परवेज खान,, वसीम खान जुनैद खान, कलीम अशरफ, रूहान, हुमायूं, नौशीन आदि मौजूद थे।

रांकावत प्रीमियर लीग फाइनल आज

पाली, (नि.सं.)। श्री रांकावत विकास समिति पाली एवं समस्त गोडवाड़ रांकावत समाज के युवाओं की क्रिकेट प्रतियोगिता का समापन समारोह आज होगा। प्रतिवर्ष होने वाली प्रतियोगिता इस वर्ष 24 से 28 अक्टूबर तक हो रही हैं। मीडिया प्रवक्ता धर्मेंद्र बोरावड ने बताया कि सोमवार को दो सेमी फाइनल मैच कनक टीम पाली और रॉयल पुणे के बीच हुआ। जिसमें पाली विजेता रही, इसी प्रकार रॉयल बिरामी और अहमदाबाद के बीच मैच में बिरामी की टीम विजेता रही। 28 अक्टूबर को प्रतियोगिता का समापन समारोह सेंचुरी गार्डन के पास सुमेरपुर रोड में आयोजित होगा। मुख्य अतिथि बाबुलाल नानेचा राष्ट्रीय अध्यक्ष अ.भा. रा. बा. सभा दिल्ली मगाराम गोयल (आहोर), ओमप्रकाश शर्मा (पूर्व डीटीओ पाली), महावीर प्रसाद हनुमानगढ़, गोपाल शर्मा, अशोक, अनु हनुमानगढ़ होंगे।

जिला स्तरीय पदयात्रा 31 को

जालोर, (कासं)। सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में 31 अक्टूबर को राष्ट्रीय एकता दिवस पर अखिल भारतीय जिला स्तरीय पदयात्रा का आयोजन किया जायेगा। अतिरिक्त जिला कलक्टर राजेश मेवाड़ा ने बताया कि सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में केन्द्रीय युवा मंत्रालय और खेल मंत्रालय ने 6 अक्टूबर से 2 महीने तक राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया है। इस श्रृंखला में 31 अक्टूबर को राष्ट्रीय एकता दिवस पर अखिल भारतीय जिला स्तरीय पदयात्रा का आयोजन किया जायेगा। इस पदयात्रा में माई भारत केन्द्र, जिला युवा सेवा प्रदाता, भारत स्वयंसेवकों, एनएसएस, एनसीसी व बीएसजी इकाईयों सहित स्कूलों, कॉलेजों व स्थानीय युवा संगठनों इत्यादि की सहभागिता सुनिश्चित की जायेगी।

अन्नकूट महोत्सव का आयोजन किया

जोधपुर, (कासं)। कार्तिक लाभ पंचमी को मंडोर, गणपति विहार विकास समिति की और से कॉलोनी में स्थित नर्मदेश्वर महादेव मंदिर प्रांगण मे कॉलोनी वासियों की और से अन्नकूट महोत्सव का आयोजन किया गया। समारोह क्षेत्र के भक्तजनों ने उत्साह से भाग लिया। सायं 5 बजे मंदिर मे ठाकुरजी के आगे 121 से ज्यादा व्यजनों का भोग लगाया गया। जिसकी झांकी मंदिर मे सजाई गई। तत्पश्चात भजनों और भक्ति गीतों का गायन अनवरत जारी रहा।भजनों के साथ ठाकुरजी को अन्नकूट का भोग समर्पित किया गया। तत्पश्चात परंपरागत आरती के बाद सभी ने सामूहिक रूप से पंगत में एक साथ बैठ कर प्रसादी ग्रहण की।

नर्मदा पेयजल परियोजना सहित जल कार्यों की समीक्षा

जालोर, (कासं)। जल जीवन मिशन के तहत जिला जल एवं स्वच्छता मिशन की 40वीं बैठक जिला कलैक्टर डॉ. प्रदीप के. गावंडे की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में सम्पन्न हुई।

बैठक में जिला कलैक्टर डॉ. प्रदीप के. गावंडे ने ओटीएमपी एवं नर्मदा पेयजल परियोजना के प्रोजेक्ट की समीक्षा कर नर्मदा परियोजना के अधीक्षण अभियंता लिच्छूराम चैधरी को लक्ष्यानुसार अधिकतम मासिक नल कनेक्शन जोड़ने तथा पाईपलाईन टेस्टिंग के बाद रोड रिपेयरिंग कार्य के लिए संबंधित संवेदकों से टीम बढ़ाकर कार्य शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने जालोर शहर व आहोर शहर के लिए अमृत 2.0 योजनांतर्गत कार्य की प्रगति की भी समीक्षा की। जिला कलैक्टर ने नर्मदा के अधीक्षण अभियंता लिच्छूराम चैधरी को एफआर व ईआर प्रोजेक्ट के उच्च जलाशय निर्माण के कार्यो को शीघ्र पूरा करने के लिए संवेदकों से टीमें बढाने पर जोर दिया। उन्होंने ईआर प्रोजेक्ट के संवेदक की प्रगति की समीक्षा के दौरान नल कनेक्शनों की गति बढ़ाने की बात कही। उन्होंने मोदरा में पम्पहाउस निर्माण के लिए पुरानी पाईपलाईन शिफ्टिंग का कार्य शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश देते हुए नर्मदा प्रोजेक्ट में उच्च जलाशय निर्माण के लिए भूमि आंवटन के प्रकरणो की समीक्षा की।

उन्होंने डीआर प्रोजेक्ट, ईआर प्रोजेक्ट व एफआर प्रोजेक्ट में नल कनेक्शनों को जोड़ते हुए एमआईएस पर एफएचटीसी का इंन्द्राज पूर्ण जिले की प्रगति में सुधार करने के लिए संबंधित नर्मदा परियोजना के अधिशासी अभियंताओ को निर्देश दिए तथा ग्राम पंचायतों में नवीन एफटीके किट्स शीघ्र उपलब्ध करवाने के लिए आईएसए एजेन्सी का सहयोग लेकर वितरित करने तथा बैक्टीरिया जांच के सैम्पल बढाने के निर्देश दिए।

बैठक में डीडब्ल्यूएसएम के सदस्य सचिव व पीएचईडी जालोर के अधीक्षण अभियंता संजय शर्मा ने पूर्व बैठक की पालना रिपोर्ट की जानकारी दी तथा जल जीवन मिशन की प्रगति रिपोर्ट पीपीटी के माध्यम से प्रस्तुत करते हुए बताया कि जिले में नर्मदा परियोजना के डीआर, ईआर, एफआर, सीलू जैसला भाटकी तथा ओटीएमपी योजनाओं के अंतर्गत जिले के 793 गांवों के घरों में कुल 3,17,283 नल कनेक्शन दिये जाने प्रस्तावित है। इसमें वृहद परियोजना अंतर्गत 3,03,982 लक्ष्य की तुलना में 1,44,314 तथा ओटीएमपी योजनाओं अंतर्गत 13,301 लक्ष्य की तुलना में 11,890 तक नल कनेक्शन जोडे.जा चुके हैं।

बैठक में मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. भैराराम जाणी, डिस्कॉम के अधीक्षण अभियंता माधाराम मेघवाल, भ–ूजल विभाग से गणपतलाल, जल संसाधन विभाग के अधिशासी अभियंता विजेश कुमार बालेसा, महिला एवं बाल विकास विभाग के उप निदेशक अशोक विश्नोई, पीएचईडी खण्ड जालोर के अधिशासी अभियंता राजकुमार कटारा, वृत जालोर से राजेश कुमार, पीएचईडी खण्ड भीनमाल से भूरसिंह मीणा, परियोजना खण्ड सांचौर के अधिशासी अभियंता गिरीश कुमार जैन, अधिशासी अभियंता परियोजना खण्ड जालोर धर्मचंन्द सोनी, सहायक अभियंता दिगम्बर सिंह, बीएन शर्मा, जितेन्द्र कुमार, जिला सलाहकार डीएसयू दीपक कुमार, आईएसए से उमाकांत शर्मा, टीपीआई जेजेएम से बी.एस.यादव तथा पीएचईडी परियोजना के संवेदका इत्यादि उपस्थित रहे।

जिला कलैक्टर ने संपर्क पोर्टल पर प्राप्त परिवेदनाओं को विभागवार समीक्षा की तथा विभागीय अधिकारियों को संपर्क पोर्टल पर प्राप्त आमजन की परिवेदनाओं का त्वरित रूप से निस्तारण करने के निर्देश दिए। उन्होंने जिले में राज्य सरकार के निर्देशानुसार ग्राम एवं ब्लॉक स्तर पर आयोजित होने वाली जनसुनवाई एवं समाधान व्यवस्था शिविर की समीक्षा करते हुए कहा कि विभागीय अधिकारी जनसुनवाई के दौरान जिले के नागरिकों की परिवेदनाओं का गुणवत्तापूर्ण समाधान करें। उन्होंने संपर्क पोर्टल पर प्राप्त 30 दिन से लंबित परिवेदनाओं पर विशेष ध्यान देते हुए त्वरित रूप से निस्तारण करने की बात कही।

हमको भावों में विरक्ति लानी है : सुमति मुनि

जोधपुर, (कासं) । चौरड़िया भवन में विराजित सुमति मुनि ने सोमवार को अपने प्रवचन में कहा कि हमको भावों में विरक्ति लानी है। आसक्ति को हटाने का अचूक उपाय वैराग्यमय संयम है।

श्रावक श्राविकाओं से ज्ञान चर्चा करते मुनि ने कहा कि राग खतरनाक है लेकिन द्वेष उससे भी ज्यादा खौफनाक है। हमको आहार एकेंद्रिय से लेकर पंचेंद्रिय जीवों के सहयोग से मिला है। एकेंद्रिय को कष्ट पहुंचाकर विराधना की तो यह पाप तो मिच्छामि दुक्कडं तथा प्रतिक्रमण से निष्फल हो जाता है, लेकिन इन जीवों की आसक्ति पूर्वक हिंसा विराधना करने से गाढें चिकने कर्म बंघते है, इससे मोहनीय कर्म का गाढ़ बंधन होता है। जिससे छूटना संभव नहीं है। हम संतो का आहार गवेष्णा में अचित पदार्थ ही बहराते है, लेकिन उसमें भाव शामिल हो जाय कि यह पदार्थ मेरे परिवार के काम आता तो अचित वस्तु होती हुए भी सचित बन जाती है। मुनि भगवंत उसे ग्रहण नहीं करेंगे। हमको भावों में विरक्ति लानी है।आसक्ति को हटाने का अचूक उपाय वैराग्यमय संयम है।

इससे पूर्व साध्वी ने अपने प्रवचन में कहा कि काजल में कुछ दिखाई नहीं देता। जब हम दर्पण में देखते है तब काजल दिखता है। जहां जुड़ाव है वहां बंधन है, आप सामायिक करते हो उसमें मन नहीं लगता तो विचार करते हो कि मन नही लगे तो सामायिक से क्या फायदा, यह चिंतन गलत हैं। इसमें आपका विकार, दोष दिख रहा है। जिस समय अपने दोष ,गलती का पत्ता लगे तो यह समय सामायिक बढ़ाने का अवसर है।

उन्होंने कहा कि आप सधे हुए चले, सधे हुए बोले, सधे हुए आहार का सेवन करे । कहां चलना, कहा रुकना यह आपके ध्यान में रहना चाहिये भोजन में विसंगत पदार्थ का सेवन नहीं करे। बोले तो सही जगह पर सही बोले। एवं जहा नहीं बोलना है वहाँ नहीं बोले। सही जगह पर सही बोलना संयम है। आप ऐसा कार्य नहीं करे जिससे राग, आसक्ति बढे। आसक्ति से राग बढ़ता ह, वहीं राग द्वेष में बदलता है।

संघ अध्यक्ष देवराज बोहरा, मंत्री माणकराज ललवानी तथा अशोक बोहरा ने बताया कि आज सोजत सिटी से श्रावक श्राविकाओं का संघ चौरड़िया भवन पहुंचा तथा ने गुरुदेव के दर्शन वन्दना के बाद चरणों में आगामी चार्तुमास सोजत सिटी में करने का अनुरोध किया। संचालन राजेन्द्र लुणिया ने किया।

दूदवा उप तहसील व जिला रसद कार्यालय का निरीक्षण

बालोतरा, (निसं)। जिला कलैक्टर सुशील कुमार यादव ने आज जिले के दूदवा उप तहसील कार्यालय और जिला रसद अधिकारी कार्यालय का आकस्मिक निरीक्षण कर प्रशासनिक व्यवस्थाओं और जनकल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वयन की गहनता से जांच की।

सिवाना उपखंड के अंतर्गत दूदवा उप तहसील कार्यालय के निरीक्षण के दौरान जिला कलैक्टर यादव ने कार्यालय के कामकाज, रिकॉर्ड संधारण और राजस्व मामलों के निस्तारण की गति का जायजा लिया। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए कि उप तहसील में आने वाले प्रत्येक नागरिक को त्वरित और पारदर्शी सेवाएं मिलनी चाहिए। उन्होंने विशेष रूप से लंबित राजस्व मामलों को जल्द से जल्द निपटाने पर जोर दिया ताकि किसानों और ग्रामीणों को राहत मिल सके।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि वे ग्रामीण सेवा शिविरों में प्राप्त आवेदनों का फॉलो–अप करते रहें।

इसके बाद जिला कलैक्टर सुशील कुमार यादव ने जिला रसद कार्यालय का निरीक्षण किया। उन्होंने रसद विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों से राशन वितरण में पारदर्शिता बनाए रखने और लाभार्थियों को समय पर गुणवत्तापूर्ण राशन उपलब्ध करवाने के निर्देश दिए।

उन्होंने ई–पॉस मशीनों के माध्यम से वितरण की स्थिति और किसी भी तकनीकी समस्या का त्वरित समाधान सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होने पात्र लाभार्थियों के नाम जोड़ने और अपात्रों के नाम हटाने की प्र या की प्रगति की समीक्षा की।

उन्होने निर्देश दिये कि गिव अभियान का व्यापक प्रचार प्रसार करें, साथ ही उत्तरोत्तर प्रगति सुनिश्चित करने के निर्देश दिये।

यादव ने अधिकारियों को निर्देश दिये कि राशन वितरण संबंधी शिकायतों का त्वरित और प्रभावी निस्तारण करें। लगातार राशन डीलर की दुकानों का निरीक्षण करें और कालाबाजारी या अनियमितता पाए जाने पर सख्त कार्रवाई सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाना प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है।

गीता सत्संग भवन में अन्नकूट

पाली, (नि.सं.)। पाली शहर में चल रहे अन्नकूट महोत्सव की कड़ी में आज सोमवार को गांधी मूर्ति स्थित गीता सत्संग भवन में अन्नकूट महोत्सव धूमधाम से मनाया गया।

गीता भवन के परमअध्यक्ष प्रेमानंद स्वामी ने बताया कि अन्नकूट में 30 क्विंटल सब्जी एवं फलों का पाक बनाकर ठाकुर जी का भोग लगाया। साथ ही साथ 56 व्यंजन भी ठाकुर जी को अर्पित किए गए। सायंकाल 8:00 बजे आरती के पश्चात हजारों श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरण किया गया।

पुजारी जगन्नाथ, किशन सिंह, जय नारायण अरोड़ा, शिवलाल लोहार के नेतृत्व में मालवीय लोहार समाज की टीम ताराचंद, खीमजी राजू भाई, महेंद्र मालवीय का सहयोग रहा।

इसी प्रकार 29 अक्टूबर को भेरू घाट बालाजी मंदिर, 31 को चादर वाले बालाजी मंदिर मे अन्नकूट महोत्सव का आयोजन होगा।

पहचान पोर्टल के आवेदनों का निस्तारण करें : डॉ.प्रदीप गांवडे

जालोर, (कासं)। जन्म–मृत्यु रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1969 एवं तत्संबन्धी राज्य नियम 2000 के अंतर्गत जन्म और मृत्यु की घटनाओं के क्रियान्वयन एवं रजिस्ट्रकरण कार्य के मूल्यांकन करने तथा रजिस्ट्रीकरण के क्रियान्वयन के समन्वयन, पुनरावलोकन तथा रजिस्ट्रीकरण कार्य के सुधार के लिए गठित जिला अन्तर्विभागीय समन्वय समिति की बैठक जिला कलैक्टर डॉ. प्रदीप के. गावंडे की अध्यक्षता में सोमवार को कलेक्ट्रेट सभागार में सम्पन्न हुई।

बैठक में जिला कलैक्टर डॉ. प्रदीप के. गावंडे ने निर्देशित करते हुए कहा कि जन्म–मृत्यु एवं विवाह पजीयन के पहचान पोर्टल पर प्राप्त आवेदन पर प्राप्त होने के उपरांत निर्धारित समयावधि में निस्तारण किया जाना सुनिश्चित करें। उन्होंने पंजीकृत घटनाओं के लम्बित ई–साईन करने के भी निर्देश प्रदान किए। बैठक में जिला रजिस्ट्रार(जन्म–मृत्यु) एवं उपनिदेशक डॉ. धनसिंह राजपुरोहित ने जन्म–मृत्यु एवं विवाह पंजीयन की घटनाओं के पंजीकरण के लिए राज्य सरकार द्वारा विकसित ''पहचान पोर्टल'' की जानकारी प्रदान करते हुए बताया कि संबंधित रजिस्ट्रारों द्वारा इसी पोर्टल के माध्यम से पंजीकरण किया जा रहा है। पंजीयन के लिए आमजन, ई–मित्र अथवा स्वयं पहचान पोर्टल के माध्यम से ऑनलाईन कर सकते हैं।

इस अवसर मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. भैराराम जाणी, चिकित्सा विभाग के उपनिदेशक डॉ. कमलेश मीणा, जिला रसद अधिकारी अलोक झरवाल, महिला एवं बाल विकास विभाग के उप निदेशक अशोक कुमार विश्नोई, नगर परिषद के आयुक्त अशोक कुमार शर्मा, नगरपालिका सांचौर के अधिशासी अधिकारी त्रिकमदान चारण, सूचना प्रोद्योगिकी और संचार विभाग के संयुक्त निदेशक कपिल लूणा सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

आफरी में सर्तकता जागरूकता सप्ताह

जोधपुर, (का.सं.)। भावाअशिप–शुष्क वन अनुसंधान संस्थान जोधपुर (आफरी) में आज सतर्कता जागरूकता सप्ताह (27अक्टूबर से 2 नवम्बर , 2025) का शुभारम्भ किया गया। सतर्कता हमारी साझा जिम्मेदारी थीम पर आधारित इस सप्ताह के आरम्भ में आफरी निदेशक डॉ. आशुतोष कुमार त्रिपाठी ने सभी कार्मिको को शपथ दिलवाई इसी क्रम में सतर्कता अधिकारी डॉ . संगीता सिंह ने सप्ताह पर्यंत होने वाले विभिन्न कार्यकर्मो की जानकारी प्रदान की।

साइबर हाईजीन एवं सिक्योरिटी पर पुष्पेन्द्र सिंह , आर.पी.एस. साइबर क्राइम द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। जिसमें सिंह द्वारा विस्तृत रूप से एटीएम कार्ड, क्रेडिट कार्ड, वेबसाइट कार्यो, ऑनलाइन शोपिंग, नेट बैंकिंग, बिलों के भुगतान, फ़ास्ट टैग उपयोग, डिजिटल अरेस्ट एवं इन्टरनेट एप से साइबर क्राइम एवं बचाव के रोकथाम आदि के बारे में समझाते हुए इनके उचित समाधान को लेकर शिकायत हेल्प लाइन 1930, संचार साथी एप्प, टू वे ऑथेंटिकेशन आदि के उपयोग को समझाने के साथ सम्पर्क समूह में प्रचार प्रसार का आहवान भी किया।

योजनाओं व ग्रामीण सेवा शिविर को गति देने के निर्देश

पाली, (नि.सं.)। जिला कलैक्टर एलएन मंत्री की अध्यक्षता में जिला कलैक्टर कार्यालय में जिला स्तरीय अधिकारियों की साप्ताहिक समीक्षा बैठक आयोजित हुयी। बैठक में जिला कलैक्टर मंत्री ने सेवा शिविरों, फलैगशिप स्कीम व बकाया भूखंड आवंटन के लिये व ग्रामीण सेवा शिविर की समीक्षा कर प्रगति लाने के निर्देश दिये। साथ ही जिला कलैक्टर मंत्री ने कहा कि ग्रामीण सेवा शिविरों के आयोजन के मंशानुरूप ही आमजन को शिविर में ही सेवा व कामों का लाभ दिलावें। उन्होंने विभिन्न विभागों के फलैगशिप योजनाओं की भी समीक्षा की व प्रगति लाने के लिये व बकाया लम्बित कामों को निर्धारित अवधि में पूरा करने के लिये कहा ।

बैठक में मिनी किट वितरण, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, लाडो प्रोत्साहन योजना की प्रगति, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग पेंशन सत्यापन, एसआईआर प्रांरभ होने के लिये आवश्यक राजकीय कार्मिको को निर्देश, भूखंड आवंटन के लिये, पंच गौरव में प्राप्त बजट के उपयोग, डीएमफटी के बकाया काम यूसीसी, सीसी भेजने व प्रस्ताव कैंसिल के लिये निर्देष, साथ ही एसडीआरफ के कार्य, चिकित्सा में मौसमी बिमारियां डेंगु, चिकनगुनिया आदि बांगड चिकित्सालय की व्यवस्थाओं व आगामी दिनों में होने वाले कामों के लिये, पशुपालन विभाग फएमडी, मंगला पशु बीमा योजना, अनुपयोगी भवनों के बारे में आवश्यक निर्देश, महिला एंव बाल विकास विभाग आंगनवाडियों के संबंध में, कृषि खाद वितरण, शिक्षा विभाग में निःशुल्क यूनिफार्म वितरण योजना विधालयों के बारे में, पेयजल, बिजली कुसुम योजना, पीडब्ल्यूडी के कामों, जल संसाधन विभाग में बांधो से पानी छोडने में व यूआईटी व नगर निगम के कामों की समीक्षा कर आवश्यक निर्देश दिये। इसके साथ ही माईनिंग, विश्वकर्मा योजना, डेयरी, राज्य सरकार की प्राथमिकता सुशासन व जनसुनवाई के बारे में आवश्यक निर्देश दिये। साथ ही सम्पर्क पर दर्ज प्रकरणों के त्वरित व गुणवत्तापूर्ण निस्तारण के निर्दैश दिये।

बैठक में डीएफओ बाला मुरूगन, मुख्य कार्यकारी अधिकारी मुकेश चौधरी, यूआईटी सचिव डॉ पूजा सक्सेना, नगर निगम आयुक्त नवीन भारद्वाज आदि मौजूद रहे।

डिजिटल वित्तीय साक्षरता कैंप लगा

जालोर, (कासं)। भारतीय स्टेट बैंक के वित्तीय साक्षरता परामर्श केन्द्र द्वारा विद्यार्थियों को विभिन्न सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी देने तथा वित्तीय साक्षरता के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से राजकीय पॉलीटेक्निक कॉलेज गोदन में डिजिटल वित्तीय साक्षरता कैंप में जिला अग्रणी बैंक के मुख्य प्रबंधक रमेश कुमार ने विद्यार्थियों प्रधानमंत्री जीवन सुरक्षा बीमा योजना, प्रधान मंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना एवं अटल पेंशन की जानकारी दी।

संत लिखमीदास प्रकाश पर्व के बैनर का विमोचन

बालोतरा, (निसं)। बालोतरा में माली समाज भवन गांधीपुरा में माली समाज विकास समिति की ओर से आयोजित होने वाले संत लिखमीदास महाराज के प्रकाश पर्व के उपलक्ष्य में 14 दिवसीय विविध कार्यक्रमों के बैनर का विमोचन किया गया।

समिति के अध्यक्ष बाबूलाल गहलोत ने बताया कि प्रकाश पर्व के अवसर पर समाज में खेलकूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की एक लंबी श्रृंखला आयोजित की जाएगी, जिसका उद्देश्य समाज में एकता और प्रतिभा सम्मान को प्रोत्साहन देना है।

आयोजन की मुख्य झलकिया 14 दिनों तक चलने वाले इन आयोजनों में सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए प्रतियोगिताएं शामिल हैं, जिनमें प्रमुख है। खेलकूद- बैडमिंटन, वॉलीबॉल, दौड प्रतियोगिता, दादा–पोता रेस और महिलाओं के लिए चरवी रेस। सांस्कृतिक, साफा बांध प्रतियोगिता, मेहंदी व रंगोली प्रतियोगिता। शैक्षणिक, सामान्य ज्ञान, सुलेख एवं निबंध प्रतियोगिता। सामाजिक, चिकित्सा शिविर और वाहन रैली होगी।

बैनर विमोचन के अवसर पर नेमीचंद, माणक गहलोत, सांवलचंद पंवार, पारस परिहार, गोविंद सुंदेशा, मंगलाराम टांक, प्रेम पंवार, अशोक पंवार, वाघाराम पंवार, चौथाराम चौहान, चंदू, प्रेम पंवार, मुकेश गहलोत, अशोक, रामेश्वर, लूणचंद, मोहनलाल, मंगलाराम, बाबूलाल, नरेश, प्रेम, धर्माराम, रामपाल, शांति देवी, कंचन गहलोत, वर्षा, नारायणी देवी, प्रिया गहलोत, संतोष गहलोत, रेखा गहलोत सहित समाज के कई लोग शामिल थे।

तेरापंथ युवक परिषद् के पूर्व अध्यक्षों का सम्मान

पाली, (नि.सं.)। तेरापंथ भवन में आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी काव्य लता सानिध्य में तेरापंथ युवक परिषद पाली द्वारा पहली बार प्रमोद भावना समारोह 2025 का आयोजन किया गया।

वर्तमान अध्यक्ष पीयूष चोपड़ा ने बताया कि यह कार्यक्रम तेरापंथ युवक परिषद के सभी पूर्व अध्यक्षों का सम्मान कार्यक्रम रखा गया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण शिखर चंद चौरडिया व नरेश मंडोत ने किया। उसके बाद में अनिल भंसाली, बसंत सोनी मंडिया, राजेंद्र धोका, डूंगर चोपड़ा ने तेरापंथ युवक परिषद कार्यों व इतिहास के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सुनील भंडारी जिला अध्यक्ष भाजपा व समाजसेवी अशोक तलेसरा थे।

सभा अध्यक्ष भुर चंद तातेड व अध्यक्ष पीयूष चोपड़ा ने दुपट्टे के साथ स्वागत किया।

पीयूष चोपड़ा ने कहा कि युवा शब्द सुनते ही हर किसी में जोश आ जाता है उसके साथ जब तेरापंथ शब्द जुड़ जावे तो व जोश को दुगना हो जाता है। इस वर्ष की कार्यकारिणी ने यह निर्णय लिया कि सभी पूर्व अध्यक्षों का सम्मान करें व उनका आशीर्वाद लें, ताकि हमारा कार्यकाल सफल हो सके। इसी उद्देश्य के साथ प्रमोद भावना समारोह का कार्यक्रम रखा गया। अभी तेरापंथ युवक परिषद के 40 अध्यक्ष बन चुके हैं। पदमचंद गादिया इस परिषद के सर्वप्रथम अध्यक्ष थे। कुशल राज समदडिया लगातार 6 साल तक अध्यक्ष रहे। उसके बाद हर साल नए अध्यक्ष बने और उन्होंने तेरापंथ युवक परिषद को नए–नए आयाम देकर नहीं ऊंचाइयां प्रदान की।

मुख्य अतिथि सुनील भंडारी ने कहा कि कि हमने हर कार्यक्रम में 2–4 अध्यक्ष देखे हैं लेकिन एक साथ 40 अध्यक्षों का सम्मान करना एक गौरव का विषय है.

पाली में तेरापंथ युवक परिषद की एक अलग ही पहचान है उनके द्वारा लिए गए कार्य नए–नए इतिहास बनाता है। जिसका उदाहरण अभी 1 महीने पहले हुए रक्तदान महोत्सव का है जिसमें पाली यवक परिषद ने 1112 यूनिट कर एक नया इतिहास बनाया है।

साध्वी काव्या लता ने कहा कि प्रमोद भावना समारोह कार्यक्रम एक शानदार कार्यक्रम है। यह कार्यक्रम हमने भी पहली बार देखा है तथा एक साथ 40 अध्यक्षों का शामिल होना बहुत बड़ी बात है। आज के समय आशीर्वाद का महत्व खत्म हो चुका है, लेकिन अध्यक्ष पीयूष चोपड़ा ने सभी अध्यक्षों का आशीर्वाद लेने के लिए जो कार्यक्रम रखा, वह सराहनीय कार्यक्रम है। इनका उद्देश्य भी अच्छा है कि सब के आशीर्वाद से इनका कार्यकाल सफल रहे। इनकी मार्गदर्शन पर चलकर तेरापंथ युवक परिषद नई ऊंचाई प्रदान करें। सभी पूर्व अध्यक्षों का दुपट्टा साहित्य व मोमेंटो के साथ स्वागत व सम्मान किया गया। इस कार्यक्रम में डूंगर चंद्र चोपड़ा बिना अध्यक्ष रहे हुए भी उनकी सेवाओं को देखते हुए उन्होंने 10 साल तक तेरापंथ युवक परिषद के मंत्री 20 साल तक तेरापंथ सभा के मंत्री के रूप में अपनी बहुत सी सेवाएं दिए और आज भी दे रहे हैं, उन्हें भी सम्मानित कर उनसे भी आशीर्वाद ग्रहण किया। कार्यक्रम में वर्तमान कार्यकारिणी टीम लगी रही। मंच संचालन विनोद भंसाली ने किया।

अस्तांचलगामी सूर्य की पूजा

पाली, (नि.सं.)। बिहार सेवा समिति की ओर से सूर्य उपासना का पर्व महा छठ पूजा मंगलवार को लाखोटिया तालाब के महा छठ घाट पर शाम 5.45 बजे सूर्यास्त के समय अस्तांचलगामी सूर्य को अर्क देकर मनाया।

चार दिवसीय इस पूजा में पहले दिन नहाए खाए के पूजा शुरू हुई, दूसरे दिन खरना पूजा और आज तीसरे दिन सूर्यास्त पर भगवान की पूजा के लिए शाम 4 के बाद बैंड बाजा के साथ सैकड़ो बिहार समाज के लोग महिलाएं सज धज कर सिर पर डाला उठाकर लाखोटिया तालाब के महा छठ घाट पहुंचे। जहां जिसमें फल फ्रूट, पूजा की सामग्री, मिठाई आदि साथ लाकर घाट पर पानी में गन्ना लगा कर डाला सजाया जाता है। पूजा सामग्री सजाकर दीपक जलाकर पुष्प आदि अर्पण कर घुटनों तक पानी में खड़े होकर सूर्यास्त का इंतजार किया। सूर्यास्त होने पर भगवान सूर्य देव को जल का अर्क दिया गया। वहीं छठी मैया के भजन चलते रहे। दीपक जलाकर आतिशबाजी की गई।

'नकल की रोकथाम एवं पारदर्शिता प्राथमिकता'

जालोर, (कासं)। राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड के अध्यक्ष मेजर जनरल आलोक राज की अध्यक्षता में आगामी 2 नवम्बर को आयोजित होने वाली ग्राम विकास अधिकारी भर्ती परीक्षा–2025 की पूर्व तैयारियों तथा अन्य परीक्षाओं के आयोजन को लेकर विभागीय अधिकारियों से विस्तार से चर्चा कर समीक्षा की।

उन्होंने बताया कि नकल की रोकथाम एवं निष्पक्ष शुचिता पूर्ण परीक्षाओं का आयोजन राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड की प्राथमिकता है। उन्होंने परीक्षाओं में सीसीटीवी कैमरे लगवाने, बायोमैट्रिक जाँच, मेटल डिटेक्टर जांच व फ्रिस्किंग सहित नकल रोकथाम के लिए सुरक्षा उपाय सुनिश्चित करने की बात कही। बैठक में परीक्षाओं के निष्पक्ष, पारदर्शी व सफल आयोजन के दृष्टिगत बोर्ड द्वारा किए जा रहे नवाचार एवं सुरक्षा उपायों पर चर्चा की गई। अतिरिक्त जिला कलैक्टर राजेश मेवाड़ा ने ग्राम विकास अधिकारी भर्ती परीक्षा– की तैयारियों को लेकर अवगत करवाया।

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कैलाश विश्नोई, जालोर उपखण्ड अधिकारी मनोज चौधरी, उप पुलिस अधीक्षक गौतम जैन, कोषाधिकारी भूपेन्द्र मकवाना आदि उपस्थित रहे।

नोटिस तारीख पेशी
अज अदालत, उपखण्ड अधिकारी मुकाम जालोर
प्रार्थी — अप्रार्थी
दीपाराम बनाम चेलाराम वगैरा
राजस्व प्रार्थना पत्र संख्या – 152/2025
बाबत् 251(A)राजस्थान काश्तकारी अधिनियम
बनाम
1. चेलाराम पुत्र हिमताराजी, 2. छोगा पुत्र रावता, फौत के कायम मुकाम वारीशान 2/1. पूराराम पुत्र छोगाजी, 2/2. गोपाराम पुत्र छोगाजी, 2/3. जोराराम पुत्र छोगाजी, 2/4. पाबुदेवी पत्नी छोगाजी, 2/5. चुन्नीदेवी पुत्री छोगाजी 3. जुठाराम पुत्र हिमता, 4. मसरिया पुत्र रावता, 5.मोनाराम पुत्र हिमता, जातियान – कलबी, 6. ओटीदेवी पत्नी बगदा, 7. गणेशाराम पुत्र मंगना, 8. जूठाराम पुत्र मंगना, 9. दिनेश कुमार पुत्र बगदा, 10.नारायणलाल पुत्र बगदा, जातियान–कुम्हार (प्रजापति) 11. भारताराम पुत्र भगवानजी, माली, 12. रमेश कुमार पुत्र भीखा, 13. राकेश कुमार पुत्र बगदा, 14. रामलाल पुत्र बगदा, 15. लसाराम पुत्र मंगना, 16. लीलादेवी पुत्री बगदा, 17. वादीदेवी पत्नी भीखा, 18. शंकर पुत्र हिमता, 19. संतोषी देवी पुत्री बगदा, 20. सादलाराम पुत्र मंगना, 21. हंजादेवी पुत्री बगदा, जातियान – कुम्हार (प्रजापति) निवासीगण गोल उम्मेदाबाद, तहसील व जिला जालोर राज. जरिये हाजा इतला दी जाती है कि मुकदमे मुन्दज की पेशी वास्ते जवाब व पैरवी हेतु तारीख 17 माह 11 सन् 2025 मुकर्रर की गई है।
तारीख 27 माह 10 सन् 2025
मोहर — सहायक कलेक्टर (एस.डी.ओ.) जालोर

केन्द्र और राज्य की सरकारी योजनाओं में सायबर ठगी करने वाले छह आरोपी गिरफ्तार

'गिरोह के तार राजस्थान, दिल्ली, पंजाब, असम, गुजरात और उत्तर प्रदेश तक फैले हुए हैं'

झालावाड़, (निसं)। झालावाड़ पुलिस ने ऑपरेशन शटडाउन-2 के तहत देशभर में सक्रिय एक संगठित अन्तर्राज्यीय साइबर गिरोह का भंडाफोड़ किया है। यह गिरोह केंद्र और राज्य सरकार की कल्याणकारी योजनाओं में सेंध लगाकर करोड़ों रुपए की ठगी कर रहा था। पुलिस की यह कार्रवाई राजस्थान के साथ-साथ देशभर के साइबर अपराध तंत्र के लिए एक बड़ी सफलता मानी जा रही है।

सोमवार को झालावाड़ में आयोजित प्रेसवार्ता के दौरान पुलिस अधीक्षक द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, यह गिरोह प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना, आपदा प्रबंधन सहायता पोर्टल, पेंशन योजनाओं और अन्य कल्याणकारी योजनाओं में फर्जीवाड़ा कर रहा था। गिरोह के सदस्य सरकारी वेबसाइटों के क्लोन पोर्टल बनाकर या वैध लॉगिन आईडी हैक कर लाभार्थियों के खातों में हेराफेरी करते थे। निष्क्रिय या मृत लाभार्थियों की जगह अपने बैंक खातों का लिंक जोड़कर वे सरकारी धन को अपने नियंत्रण में ले लेते थे। इस गिरोह के तार राजस्थान, दिल्ली, पंजाब, असम, गुजरात और उत्तर प्रदेश तक फैले हुए हैं। झालावाड़ साइबर पुलिस की विशेष टीम ने कई दिनों की निगरानी और तकनीकी विश्लेषण के बाद सोमवार को गिरोह के चार मुख्य सदस्यों मोहम्मद शाहिद, मोहम्मद लईक, सुभाष और रोहित कुमार सहित छह को गिरफ्तार किया है। सभी पर 25-25 हजार रुपए का इनाम घोषित था। गिरफ्तार आरोपियों से पुलिस ने बड़ी मात्रा में फर्जी आधार कार्ड, मोबाइल सिम, लैपटॉप, बैंक पासबुक, और सरकारी लॉगिन क्रेडेंशियल्स बरामद किए हैं। जांच में सामने आया है कि यह गिरोह योजनाओं के पोर्टलों पर डेटा मैनिपुलेशन कर लाभार्थियों की पहचान बदल देता था और बल्क ट्रांजैक्शन के जरिए फर्जी खातों में सरकारी धन ट्रांसफर करता था। आरोपी तकनीकी रूप से प्रशिक्षित थे और साइबर सुरक्षा के कई स्तरों को बायपास करने में माहिर थे। झालावाड़ एसपी के निर्देशन में गठित विशेष जांच टीम ने इस पूरी कार्रवाई को अंजाम दिया। पुलिस अब इस नेटवर्क से जुड़े अन्य राज्यों के अपराधियों की तलाश कर रही है।

एसपी ने बताया कि ऑपरेशन शटडाउन-2 देश में साइबर ठगी के खिलाफ अब तक की सबसे बड़ी और संगठित कार्रवाई है, जिसने सरकारी योजनाओं की सुरक्षा प्रणाली को लेकर गंभीर सवाल खड़े किए हैं। पुलिस अब गिरोह के डिजिटल फुटप्रिंट का विश्लेषण कर यह पता लगाने में जुटी है कि अब तक कितनी योजनाओं से और कितनी राशि का दुरुपयोग किया गया। पुलिस ने बताया कि आरोपी फर्जी एसएसओ आईडी के द्वारा लोगों को योजनाओं में जोड़ते थे तथा फर्जी खातों को लिंक करके उनके माध्यम से पैसा निकाल लिया जाता था। पुलिस का यह भी कहना है कि आरोपियों द्वारा योजनाओं से संबंधित डिजिटल प्रोग्राम की एचटीएमएल कोडिंग को भी बदला जा रहा था। पुलिस ने दावा किया है कि अब तक लगभग 2 लाख लोगों का डाटा मिल चुका है तथा हजारों खातों की डिटेल्स मिली हैं जिनको साइबर ठग इस्तेमाल कर रहे थे। पुलिस का यह भी कहना है कि आरोपियों द्वारा फर्जी तरीके से जिला नोडल ऑफिसर भी बनाए गए थे, जो इस पूरे खेल को संभाल रहे थे।

झालावाड़ पुलिस ने सरकारी योजनाओं में ठगी करने के आरोपियों को गिरफ्तार किया।

- **गिरोह के सदस्य सरकारी वेबसाइटों के क्लोन पोर्टल बनाकर या वैध लॉगिन आईडी हैक कर लाभार्थियों के खातों में हेराफेरी करते थे**
- **बड़ी मात्रा में फर्जी आधार कार्ड, मोबाइल सिम, लैपटॉप, बैंक पासबुक और सरकारी लॉगिन क्रेडेंशियल्स बरामद**

बीएसएफ इंजीनियर के मकान में चोरी

जोधपुर, (कासं)। शहर के बीजेएस कॉलोनी में एक सूने मकान में चोरी हो गई। सूना मकान बीएसएफ में पीएसयू इंजीनियर का है। इस बारे में महामंदिर थाने में रिपोर्ट दी गई। दूसरी तरफ सूरसागर थाना क्षेत्र में भी एक सूने घर से घरेलु सामान चोरी हो गया।

महामंदिर थाने के एसआई लादूसिंह ने बताया कि बीजेएस कॉलोनी, ए-342 में रहने वाले मेघराज सिंह पुत्र गिरधारी सिंह ने रिपोर्ट दी। इसमें बताया कि वे बीएसएफ में पीएसयू इंजीनियर हैं। 21 अक्टूबर दिवाली को वे परिवार सहित अपने गांव गए थे। 22 को पड़ौसी ने सूचना दी कि घर के ताले टूटे हैं। इस पर वे वापिस यहां पहुंचे। पता लगा कि चोर घर से सोने की चेन, दो अंगुठियां तकरीबन दो तोला जेवर, चांदी के चार-पांच तोला आभूषण, जिनमें पायलों की जोड़ी, कड़ा और 65 हजार की नगदी ले गए। एसआई लादूसिंह ने बताया कि आसपास एरिया का भी मौका मुआयना किया गया। चोरों का पता लगाया जा रहा है। दूसरी तरफ सूरसागर पुलिस ने बताया कि कमला नेहरू नगर प्रथम विस्तार में रहने वाले मो. अकरम पुत्र मो. जफर का एक मकान कबीर नगर नूरी मस्जिद के सामने आया है जो कि सूना था, अज्ञात चोर वहां से घरेलु सामान चोरी कर ले गए।

हल्की बौछारों से किसानों के चेहरे खिले

शाहपुरा, (निसं)। नगर व आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में सोमवार सुबह से ही हल्की बौछारों का दौर जारी है। मौसम में आई इस बदलाव से किसानों के चेहरे खिल उठे हैं। खेतों में नमी बढ़ने से रबी की फसलों की बुवाई के लिए यह बरसात फायदेमंद साबित हो रही है। किसानों का कहना है कि पिछले कुछ दिनों से सूखेपन के कारण खेतों की जुताई में कठिनाई आ रही थी, लेकिन अब हल्की वर्षा से जमीन में नमी आने लगी है जिससे गेहूं, चना और सरसों जैसी फसलों की तैयारी में राहत मिलेगी। मौसम विभाग के अनुसार, आगामी एक-दो दिनों तक हल्की बरसात के आसार बने हुए हैं। वहीं, सुबह से चली ठंडी हवाओं ने मौसम को सुहावना बना दिया है। नगरवासियों ने भी इस फुहार भरे मौसम का आनंद लिया।

- **गेहूं, चना और सरसों जैसी फसलों की तैयारी में राहत मिलेगी**

राजस्थान सरकार

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, खण्ड चूरु

ई-44 अग्रसेन नगर चूरू, E-mail: eemhchuru@yahoo.com, फोन नं. 01562-254670

क्रमांकः प.01()/चि.स्वा./खण्ड-चूरू/2025-26/615 दिनांकः-13.10.2025

निविदा सूचना संख्या :- 13/2025-26

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, खण्ड चूरु के अन्तर्गत जिला चूरू के उप जिला अस्पताल राजगढ़ में अतिरिक्त कार्य एवं प्रा. स्वा. केन्द्रों पर विधुतीकरण के कार्य राशि रु. 64.00 लाख तक के कार्य के लिए निविदा से सम्बन्धित विवरण DIPR की वेब साईट www.dipronline.org,http://sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता है।

UBN No.- 1. NRH2526WSOB01222

अधिशाषी अभियन्ता
चिकित्सा एवं स्वास्थ्य खण्ड चूरू

DIPR/C/15624/2025

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् उदयपुर

111, सहेली मार्ग, उदयपुर (राज.) पिन 313001 दूरभाष 0294-2415171, E-mail:- director.rscert@rajasthan.gov.in

क्रमांक :- राराशैअप्रप-उदय/स्टोर/2025-26/1296 दिनांक :- 25/10/2025

ई-प्रोक्योरमेंट के माध्यम से खुली बोली आमंत्रण सूचना संख्या 10/2025-26

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उदयपुर अन्तर्गत वित्तीय वर्ष 2025-26 eas Accommodation, Food and Conference Hall arrangements for National Seminar by RSCERT, UDAIPUR जिसकी अनुमानित लागत 16.00 लाख है, हेतु दिनांक 30/10/2025 को 03.00 च्ड तक इच्छुक बोलीदाताओं से ई-प्रोक्योरमेंट के माध्यम से बोली आमंत्रित की जाती है। बोली की विस्तृत शर्तें एवं बोली दस्तावेज http://sppp.rajasthan.gov.in तथा https://eproc.rajasthan.gov.in पर देखे एवं डाउनलोड किए जा सकते हैं।

NIB Code : SCE2526A0010
UBN No. : SCE2526SLOB00015

निदेशक
राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उदयपुर

राज.संवाद/सी/25/12644

कार्यालय अधिशाषी अभिययन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, खण्ड नैनवां

क्रमांक-1231 दिनांक-15.10.2025

निविदा सूचन संख्या 09/2025-26

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से सा.नि.वि. खण्ड नैनवां के अन्तर्गत अतिवृष्टि से क्षतिग्रस्त पुलियाओं का स्थाई मरम्मत कार्य के लिए राशि रू. 247.71 लाख के उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों एवं राज्य सरकार/केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों/केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग/डाक एवं दूर संचार विभाग/रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों जो कि राजस्थान सरकार के एए, ए व बी, सी.डी. श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो से कार्यों हेतु ई-टेण्डरिंग क माध्यम से निर्धारित प्रपत्र में प्राप्त की जावेगी। निविदा से सम्बन्धत विवरण वेबसाईट www.dipronline.org व http://www.pwd.rajasthan.gov.in, http://www.sppp.raj.nic.in व http:.//eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है। निविदा डाउनलोड करने की दिनांक 17.10.2025 से 30.10.2025 तक सायं 6.00 बजे तक

UBN NO. 1. PWD2526WSOB14785, 2. PWD2526WSOB14786, 3. PWD2526WSOB14787, 4. PWD2526WSOB14788, 5. PWD2526WSOB14789, 6. PWD2526WSOB14790, 7. PWD2526WSOB14791, 8. PWD2526WSOB14794, 9. PWD2526WSOB14795, 10 PWD2526WSOB14797, 11. PWD2526WSOB1499, 12. PWD2526WSOB14802, 13. PWD2526WSOB14804

अधिशाषी अभियन्ता
सा.नि.वि. खण्ड नैनवां

DIPR/C/15581/2025

सरसों की आधा दर्जन से अधिक बोरियां चुराई

भुसावर/भरतपुर, (निसं)। गांव पथैना में अज्ञात चोरों ने एक घर को निशाना बनाते हुए सरसों की बोरियों में से आधा दर्जन से अधिक बोरियों को पार कर लिया। घटना का पता सरसों से भरी बोरियों को गायब एवं रास्ते में फैली पड़ी सरसों को देखकर परिजनों को हुआ, जिसके बाद तुरंत खेड़ली मोड़ थाना पुलिस को सूचना दी गई। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और घटना को लेकर जानकारी ली और भरतपुर से एफएसएल एवं स्पेशल टीम बुलाकर साक्ष्य जुटाने का काम किया।

जानकारी के अनुसार गांव पथैना निवासी रवि फौजदार पुत्र यदुवीर के घर में चोरों ने चोरी की वारदात को अंजाम दिया और सरसों की बोरियों को चोरी कर ले गये। यह घटना 26 अक्टूबर एवं 27 अक्टूबर की मध्य रात्रि 12 से 2 बजे के बीच में बताई जा रही है। छात्र नेता कौशल फौजदार ने बताया कि खेड़ली मोड़ थाना बनने के बाद भी लगातार हो रही चोरियां पुलिस की नाकामी को साफ दर्शा रही है। पिछले काफी समय से यहां चोरियों की वारदात हो रही है, लेकिन कोई खुलासा नहीं हुआ है।

- **अज्ञात चोरों ने घर को निशाना बनाया**

विंटर शेड्यूल ने बीकानेर एयरपोर्ट से विमानों की संख्या घटाई

बीकानेर, (निसं)। विंटर शेड्यूल लागू होने के साथ ही बीकानेर एयरपोर्ट से उड़ान भरने वाले विमानों की संख्या में कटौती कर दी गई है। एलाइंस एयर अब बीकानेर से केवल जयपुर तक ही उड़ान भरेगी, जबकि दिल्ली कनेक्टिविटी बंद कर दी गई है। दूसरी ओर इंडिगो ने भी अपने समय में बदलाव करते हुए अपने को दिल्ली रूट तक की सीमित कर लिया है।

बीकानेर से जयपुर और दिल्ली के बीच पिछले कुछ सालों से एयर कनेक्टिविटी को लेकर लोगों में उम्मीद बनी थी, लेकिन इस बार सर्दी के शेड्यूल ने उनकी उड़ानें फिर थाम दी हैं। यात्रियों के लिए यह बदलाव निराशाजनक साबित हुआ है, क्योंकि अब उन्हें जयपुर या दिल्ली के लिए सीमित विकल्पों में ही यात्रा करनी होगी। नए शेड्यूल के अनुसार एलाइंस एयर की फ्लाइट संख्या 91834 शुक्रवार को बीकानेर एयरपोर्ट से दोपहर 2.45 बजे उड़ान भरेगी, जो जयपुर दोपहर 3.55 बजे पहुंचेगी। वापसी में फ्लाइट संख्या 91833 जयपुर से दोपहर 1.10 बजे रवाना होगी और बीकानेर दोपहर 2.10 बजे पहुंचेगी। शनिवार को भी समय में थोड़ा बदलाव होगा। इस दिन फ्लाइट संख्या 91834 बीकानेर से दोपहर 1.45 बजे उड़ान भरेगी, जो जयपुर 2.55 बजे पहुंचेगी। वापसी में जयपुर से दोपहर 12.10 बजे रवाना होकर बीकानेर दोपहर 1.20 बजे पहुंचेगी। वहीं इंडिगो की फ्लाइट संख्या 6ई-7443 सुबह 10.10 बजे बीकानेर से रवाना होगी, जो दिल्ली सुबह 11.30 बजे पहुंचेगी। वापसी में 6ई-7442 दिल्ली से सुबह 8.25 बजे रवाना होकर बीकानेर सुबह 9.50 बजे पहुंचेगी।

डीपी पचीसिया, अध्यक्ष बीकानेर जिला उद्योग संघ ने बताया कि बीकानेर से दिल्ली और जयपुर दोनों दिशाओं में यात्रियों की संख्या पिछले कुछ महीनों में लगातार बढ़ रही थी। व्यापारिक वर्ग, छात्रों और सरकारी कर्मचारियों के लिए यह मार्ग अहम माना जाता है। लेकिन अब जब दिल्ली रूट पर एलाइंस एयर की उड़ान बंद हो गई है, तो यात्रियों को इंडिगो की सीमित सेवाओं पर निर्भर रहना होगा। एयरलाइन के इस कदम से न केवल पर्यटन बल्कि व्यवसायिक यात्राओं पर भी असर पड़ेगा। जयपुर से आगे की उड़ानों के लिए भी कनेक्टिविटी कम हो जाएगी, जिससे यात्रियों को अब जयपुर या जोधपुर तक सड़क मार्ग से जाना पड़ेगा।

पहले एलाइंस एयर की फ्लाइट बीकानेर से जयपुर और फिर दिल्ली तक संचालित होती थी, जिससे व्यापारिक यात्राओं में काफी सहूलियत रहती थी। अब केवल जयपुर तक उड़ान सीमित होने से कारोबारियों को असुविधा होगी। बीकानेर का औद्योगिक और पर्यटन दोनों ही दृष्टि से विकास तेजी से हो रहा है। ऐसे में नई फ्लाइट की बहुत जरूरत थी। विंटर शेड्यूल में भी कोई नई फ्लाइट नहीं मिलना निराशाजनक है। सरकार को संभावनाओं को देखना चाहिए।

राजेंद्र सिंह बघेला, एयरपोर्ट डायरेक्टर, बीकानेर का कहना है कि कनेक्टिविटी घटाई गई लेकिन बातचीत जारी है। एलाइंस एयर ने विंटर शेड्यूल में केवल जयपुर रूट को ही रखा है, जबकि दिल्ली रूट फिलहाल बंद रहेगा। हम लगातार डीजीसीए और एयरलाइंस से संपर्क में हैं। यात्रियों की डिमांड बढ़ने पर अतिरिक्त फ्लाइट की संभावना पर भी चर्चा की जा रही है। बीकानेर एयरपोर्ट का इन्फ्रास्ट्रक्चर पूरी तरह सक्षम है, उड़ानें बढ़ाने के लिए एयरलाइंस को यात्री संख्या का भरोसा चाहिए।

- **एलाइंस एयर अब बीकानेर से केवल जयपुर तक ही उड़ान भरेगी, जबकि दिल्ली कनेक्टिविटी बंद कर दी गई है यात्रियों के लिए यह बदलाव निराशाजनक साबित हुआ है, क्योंकि अब उन्हें जयपुर या दिल्ली के लिए सीमित विकल्पों में ही यात्रा करनी होगी**

कार्यालय पुलिस अधीक्षक, जिला जालोर (राज.)

क्रमांक-नि.15()जालोर-सामान्य/2025/5524-41 दिनांक-17.10.2025

संशोधित नीलामी विज्ञप्ति

इस कार्यालय द्वारा पूर्व में जारी नीलामी विज्ञप्ति क्रमांक 2634-48 दिनांक 13.10.2025 में आंशिक संशोधन किया जाकर सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि कार्यालय पुलिस अधीक्षक जिला जालोर के विभागीय नाकारा वाहन जिनका कुल पुस्तक मूल्य 3591893.36/- रूपये है, की सार्वजनिक नीलामी जहां है-जैसे है के आधार पर दिनांक 10.11.2025 को दोपहर 12.00 बजे पुलिस लाईन जालोर परिसर में की जायेगी। वाहनों की नीलामी से सम्बन्धित पूर्ण शर्ते नियम विभागीय वेबसाईट www.police.rajasthan.gov.in, www.dipr.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

क्र. सं.	वाहन संख्या	मैक	मॉडल	बुक वेल्यू	अमानत राशि	अमानत राशि जमा करने का निर्धारित समय
1	RJ-16-UA-3525	बोलेरो	2013	541525.68	10900	दिनांक 10.11.2025
2	RJ-16-UA-3526	बोलेरो	2013	541525.68	10900	को प्रात 11.50 बजे
3	RJ-16-UA-3527	बोलेरो	2013	541525.68	10900	तक
4	RJ-16-UA-3528	बोलेरो	2013	541525.68	10900	
5	RJ-16-UA-3123	जीप (धार)	2012	493391.17	9900	
6	RJ-16-UA-3149	जीप (धार)	2012	493391.17	9900	
7	RJ-16-UA-3992	जीप (धार)	2014	939408.30.	8800	

शर्ते-

1. नीलामी में भाग लेने हेतु प्रत्यक बोलीदाता को नीलामी से पूर्व उपरोक्तानुसार वाहन की धरोहर राशि जमा करानी हागी। जो निर्धारित समय तक जमा की जावेगी। निर्धारित समय के पश्चात किस भी सूरत में बोलीदाता से धरोहर
2. राशि जमा नहीं की जायेगी। असफल बोलीदाता को धरोहर राशि नीलामी समाप्त होने पर वापस लोटा दी जावेगी।
3. जिस बोलीदाता की अधीकतम बोली स्वीकार की जायेगी जिसे उस बोली की 25 प्रतिशत उसी समय जमा करानी होगी एवं शेष राशि 03 कार्यदिवस दिवस के अन्दर-अन्दर जमा करवाकर सामान (नाकारा वाहनों को उठाना होगा।
4. नीलामी कमेटी को बिना कारण बताए नीलामी स्थगीत करने का पूण अधिकार होगा।
5. जीएसटी/राजकीय बिक्रीकर नियमानुसार माल खरीददार को अलग से देना होगा।
6. उपरोक्त नाकारा वाहनो का निरीक्षण/अवलोकन किसी भी कार्यदिवस में पुलिस लाईन जालोर में आकर किया जा सकता है।
7. किसी भी प्रकार न्यायिक विवाद का क्षेत्राधिकार जालोर होगा।
8. नीलामी बोली समाप्त होने के बाद सामान (नाकारा वाहनों) को नीलामी स्थान से अपने समय के खर्चे पर ले जाना होगा, इसके लिए इस विभाग द्वारा कोई परिवहन नहीं कराया जायेगा।
9. नीलामी कार्यवाही पूर्ण हो जाने के तत्काल बाद सामान की कमी, चोरी अथवा किसी भी क्षति के लिए सम्बन्धित पार्टी/बोलीदाता की स्वयं की जिम्मदारी होगी।
10. नीलामी की अंतिम रूप से पुष्टि होने के उपरान्त सफल बोलीदाता द्वारा शेष 75 प्रतिशत राशि तीन दिवस के भीतर जमा नहीं करवायी जाती है, तो धरोहर राशि जब्तराज की ली जायेगी।
11. नीलामी बोली 1000 रूपये के गुणक में बोली जायेगी।
12. नीलामी में भाग लेने वाले बोलीदाता स्वयं पहचान दस्तावेज एवं स्थायी निवास स्थान की सत्यापित कॉपी जमा करवानी होगी।
13. नीलामी से सम्बन्धित कोई भी कार्मिक नीलामी बोली में भाग नहीं ले सकेगा।
14. शेष शर्ते सामान्य वितीय एवं लेखा नियमों के अनुसार लागु होगी।

जिला पुलिस अधीक्षक
जालोर

DIPR/C/15741/2025

RajCOMP Info Services Limited (RISL)

C-Block 1st Floor, Yojana Bhawan, Tilk Marg, C-Scheme, Jaipur

RISL invites bids from the eligible bidders for RFP RFP for Procurement / ATS of HCL AppScan and other Vulnerability Assessment tools with Services for 3 Year. Total estimated cost is Rs. 1.4 Cr. The details can be seen on the websites: https://eproc.rajasthan.gov.in, https://sppp.rajasthan.gov.in, https://risl.rajasthan.gov.in, https://doitc.rajasthan.gov.in.

Raj.Samwad/C/25/12650 Additional Director

Government Of Rajasthan
Water Resources Department

Office of the Executive Engineer Water Resources Division Dholpur
Tel & Fax No. 05642-220880 E-Mail - eewrddholpur1@gmail.com

No.-2603 Date- 17/10/2015

INVITATION OF NIT NO. 08 YEAR 2025-26

On behalf of government of Rajasthan NIT No 08 Year 2025-26 is invited from eligible contractor for Various. works Under SDRF Scheme. cost of works is Rs. 66.31 Lacs The detail of works is available on following websites.

UBN No.: WRD2526WSOB01309, WRD2526WSOB01310, WRD2526WSOB01311

1. www.diprrajasthan.gov.in
2. www.sppp.rajasthan.gov.in
3. www.eproc.rajasthan.gov.in

Executive Engineer
Water Resources Division Dholpur

DIPR/C/15748/2025

राजस्थान सरकार

कार्यालय प्रमुख चिकित्सा अधिकारी एवं सदस्य सचिव, मेडिकेयर रिलीफ सोसायटी राजकीय जयपुरिया चिकित्सालय, जयपुर

क्रमांक-Actt/Machine with man /2025/1985 दिनांक-16/10/25

Notice Invitid E- Bid(2025-26)

Bids for rate contract for Machine With Man at Govt RDBP Jaipuria Hospital Jaipur are invited from interested bidders upto 5:00 PM Date 28/10/250ther particulars of the bid may be visited on the procurement portal (http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.raj.nic.in) of the state.

UBN MHS2526SLRC04504
Est Cost 170.00 lacs

PMO & MS
Govt RDBP Jaipuria Hospital
Jaipur

DIPR/C/15690/2025

bida भिवाड़ी इंटिग्रेटेड विकास प्राधिकरण

एच-5, भगतसिंह कॉलोनी, भिवाड़ी, अलवर, दूरभाष :- 01493-230819
ई-मेल :- bida.bhiwadi@rajasthan.gov.in

क्रमांक :- बीडा/अभि./3823/25 दिनांक :- 24/10/2025

Notice Inviting Bid

Bid for "Construction of a shed for players' seating at the outdoor court in Bida Stadium is invited from interested Bidders up to 02.00 PM date 28.10.2025. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.raj.nic.in of the state; and https://bida.rajasthan.gov.in departmental website.

UBN: BDA2526WSOB00080

Executive Engineer
BIDA, Bhiwadi

Raj.Samwad/C/25/12651

कार्यालय जोधपुर विकास प्राधिकरण, जोधपुर

क्रमांक :- जोविप्रा/2025-26/1749 दिनांक :- 17/10/2025

ई-निविदा सूचना संख्या - मुख्यालय/31/2025-26

जोधपुर विकास प्राधिकरण, जोधपुर की ओर से इच्छुक व्यक्ति/फर्म/संस्था जो निविदा की निर्धारित शर्तो को पूर्ण करती है, से निर्धारित प्रपत्र मे ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रकिया से ऑनलाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती है। जो निम्नलिखित दिनांक अनुसार डाउनलोड तथा खोली जायेगी। इन कार्य की अनुमानित लागत, निविदा बेचे जाने तथा प्राप्त करने की दिनांक, निविदा, शर्ते आदि सम्पूर्ण विवरण वेबसाईट www.jodhpurjda.org, www.eproc.rajasthan.gov.in एवं www.sppp.raj.nic.in पर देखी जा सकती है।

UBN No. : JOD2526GLOB00356, JOD2526GLOB00357

राज.संवाद/सी/25/12653 अधिशाषी अभियंता

कार्यालय नगर पालिका पीपाड़ शहर (जोधपुर) राज.

Office of the Municipal Board, Pipar city (Jodhpur) Rajasthan
Tel.- (02930) 233036, e-mail : municipality.pipar@gmail.com

क्रमांक : न.पा.पी./2025-26/6448 दिनांक 15.10.2025

NOTICE INVITING BIDS

Bid for Various Civil Work of procurement are invited from interested Bidders upto 30.10-2025 , 05.00 Pm other perticulars of the bid amy be visited on the procurement portal (http://sppp.raj.nic.in) And (www.eproc.rajasthan.gov.in)of the state, and local self department website.

NIB CODE :-DLB2526A7343
UBN:DLB2526WSOB22266|

Executive Officer
Municipal Board Pipar City

Raj.Samwad/C/25/12676

दुकान से जेवर व मोती चुरा ले गई महिला

करौली, (निसं)। करौली जिला मुख्यालय स्थित सर्राफा बाजार में उस समय हड़कंप मच गया, जब एक महिला ने चालाकी से दुकान से सोने का लॉकेट और मोती चोरी कर लिए। यह पूरी वारदात दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है। घटना की जानकारी मिलते ही पीड़ित दुकानदार ने पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराई है।

पीड़ित दुकानदार लोकेश सोनी ने बताया कि एक महिला सोने का लॉकेट और मोती पिरोने के लिए दुकान पर आई थी। उसने लॉकेट और मोतियों की थैली दुकानदार को दी, जिसे लोकेश ने अपने पास रख लिया और किसी दूसरे काम में लग गया। इसी दौरान एक अन्य महिला भी दुकान पर पहुंची। जब पहली महिला ने दुकानदार से माला बनवाने का काम पूरा करने को कहा, तो लोकेश ने थोड़ी देर रुकने को कहा। कुछ ही देर बाद जब उसने देखा कि लॉकेट और मोती दोनों गायब हैं, तो वह हैरान रह गया। उसने तुरंत दुकान के सीसीटीवी फुटेज खंगाले। फुटेज में बाद में आई महिला लॉकेट को अपने पास रखते हुए और दुकान से बाहर जाते हुए साफ नजर आ रही है। घटना का वीडियो सामने आने के बाद बाजार के अन्य दुकानदारों में भी चिंता का माहौल है।

लोकेश सोनी ने बताया कि चोरी हुआ सोने का लॉकेट करीब 10 ग्राम वजन का था, जबकि मोती अलग से थे। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। फिलहाल सीसीटीवी फुटेज के आधार पर पुलिस महिला की पहचान करने में जुटी है और आसपास के इलाकों में तलाश जारी है।

- **दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हुई वारदात, जांच शुरु**

पाक विस्थापित युवक का शव घर में मिला

जोधपुर, (कासं)। शहर के माता का थान पुलिस थाना क्षेत्र महादेव कॉलोनी में सोमवार सुबह एक घर में पाक विस्थापित का शव संदिग्ध हालत में मिला। उसके हाथ पैर बंधे हुए थे, जिससे प्रथम दृष्टया मामला हत्या का बताया जा रहा है। सूचना मिलने के साथ ही पुलिस के उच्चाधिकारी मौके पर पहुंचे। एफएसएल टीम, एमओबी को भी मौके पर बुलाया गया। पुलिस अधिकारियों ने मौका मुआयना कर जांच शुरु की।

एडीसीपी पूर्व वीरेंद्र सिंह ने बताया कि माता का थान स्थित महादेव कॉलोनी निवासी 22 साल के विजय कुमार का शव संदेहस्पद हालात में उसके घर में पड़ा होने की सूचना सुबह मिली थी। उसके पड़ौसी द्वारा सूचना दिए जाने पर पुलिस वहां पहुंची। उसके हाथ-पैर बंधे हुए थे, जिससे प्रथम दृष्टया मामला हत्या का प्रतीत हुआ है। वह पाक विस्थापित परिवार का सदस्य है। उन्होंने बताया कि मृतक विजय कुमार घर पर अकेला ही था। परिवार के लोग रात में बाहर गए हुए थे। सूचना पर डीसीपी पूर्व सी. शाहिन, एडीसीपी वीरेंद्र सिंह, एसीपी मंडोर नगेंद्र कुमार, थानाधिकारी मानाराम आदि वहां पहुंचे। बाद में मौका साक्ष्य के लिए एफएसएल और एमओबी को भी बुलाया गया है। मौके से साक्ष्य जुटाए गए।

एडीसीपी वीरेंद्र सिंह ने बताया कि मामला ब्लाइंड मर्डर का होने से हर पहलू पर जांच की जा रही है। मौका स्थल पर पड़े शव को देखने पर प्रतीत हुआ कि उसका गला नहीं काटा गया है। आशंका यह भी है कि गला घोंटकर भी मारा जा सकता है। हाथ-पैर बांध कर शव को फर्श पर पटका गया है। पुलिस ब्लाइंड मर्डर की गुत्थी सुलझाने के लिए टीमों का लगाया गया है।

- **युवक के हाथ-पैर बंधे हुए थे, प्रथम दृष्टया मामला हत्या का बताया जा रहा है**

ठगों को बैंक खाता उपलब्ध कराने वाला फरार आरोपी गिरफ्तार

पावटा, (निसं)। शाहपुरा थाना पुलिस ने साइबर ठगों को बैंक खाते उपलब्ध कराने वाले फरार आरोपी को पकड़ा है। इस युवक के खाते से विभिन्न राज्यों में साइबर ठगी के 106 मामले दर्ज है। वही आरोपी के एसबीआई बैंक शाखा शाहपुरा के म्यूल खाते से करोड़ों की साइबर ठगी हुई है।

जयपुर ग्रामीण पुलिस अधीक्षक राशि डोगरा डूडी ने बताया कि पुलिस मुख्यालय जयपुर के निर्देश पर पोस म्यूल अकाउंट के विरुद्ध प्रभावी कार्रवाई को लेकर 1 सितंबर से विशेष अभियान चलाया जा रहा है। अभियान में शाहपुरा थाने में साइबर फ्रॉड करने वाले अपराधियों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया था। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शाहपुरा डॉ. तेजपालसिंह, डीएसपी मुकेश चौधरी के सुपरविजन में थाना प्रभारी हेमराज सिंह के नेतृत्व में टीम गठित कर जांच शुरू कर की गई। पुलिस टीम ने साइबर फ्रॉड करने के लिए म्यूल अकाउंट उपलब्ध करवाने के मामले में फरार चल रहे जोडाला की ढाणी ग्राम कांट निवासी अर्जुनलाल जाट को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की है। आरोपी मामला दर्ज होने के बाद से ही फरार चल रहा था। डीएसपी मुकेश चौधरी ने बताया कि मामले को गंभीरता से लेकर जांच की गई। जिसमें 20 सितम्बर को म्यूल अकाउंट उपलब्ध करवाने वाले आरोपी श्रीराम व म्यूल अकाउंट को किराए पर लेकर साइबर ठगी करने वाले आरोपी देवेन्द्र सिंह को गिरफ्तार किया गया था। थाना प्रभारी हेमराज सिंह ने बताया कि आरोपी अर्जुनलाल जाट का एसबीआई बैंक शाखा शाहपुरा में म्यूल अकाउंट है। आरोपी ने अपराधियों को साइबर फ्रॉड के लिए अपना अकाउंट उपलब्ध करवाया था। उक्त अकाउंट से करोड़ों रुपए की राशि की हेराफेरी की गई। आरोपी के बैंक खाते के खिलाफ देशभर में साइबर फ्रॉड की 106 शिकायतें दर्ज है। आरोपी से पूछताछ की जा रही है।

कार्यालय अधीक्षण अभियंता, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, वृत-जालोर

Tel.02973-223548, Email secircle.jal.phed@rajassthan.gov.in/sephedjalore@yahoo.com

क्रमाक-वृत/जालोर/निविदा/ /2025-26/1885-98 दिनांक-15.10.2025

बिड आमंत्रण सूचना (NIB) संख्या 01-08/2025-26

राजस्थान के राज्यपाल की ओर से निम्नलिखित कार्यो हेतु लोक निर्माण आर वित्तीय नियम के पार्ट-4 नियम 334(ए) (iii) रूपयेः- 150.00लाख तक की निविदाओं हेतु केवल जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग में पंजीकृत एवं इससे अधिक लागत की निविदाओं हतु जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग में पंजीकृत निविदादाताओं हेतु नियामानुसार छूट के साथ एवं केन्द्र/राज्य सरकार के अधिकृत विभागों/संगठनों केन्द्रीय लोक निमाण विाग रेल डाक दूर संचार विभागों में उपयुक्त समकक्ष श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों से पूर्ण धरोहर राशि के साथ ई-टेण्डरिंग प्रक्रिया द्वारा ऑनलाईन बिड आमंत्रित की जात हैं।

बिड संख्या	NIB NO. PHE2526A3779	अनुमानित लागत (लाखो में)	धरोहर राशि 2 प्रतिशत	बिड शुल्क (रूपये)	ई-प्रक्रिया शुल्क	कार्य पूर्ण करने की अवधि
01/2025-26	UBN NO....PHE2526WSRC07717	150.00	300000/-	2000/-	2000/-	12माह
02/2025	PHE2526WSRC07718	150.00	300000/-	2000/-	2000/-	12माह
03/2025	PHE2526WSRC07719	150.00	300000/-	2000/-	2000/-	12माह
04/2025	PHE2526WSRC07721	150.00	300000/-	2000/-	2000/-	12माह
05/2025	PHE2526WSRC07722	150.00	300000/-	2000/-	2000/-	12माह
06/2025	PHE2526WSRC07724	150.00	300000/-	2000/-	2000/-	12माह
07/2025	PHE2526WSRC07725	150.00	300000/-	2000/-	2000/-	12माह
08/2025	PHE2526WSRC07726	150.00	300000/-	2000/-	2000/-	12माह
ऑनलाईन बिड उपलब्ध होने की तिथि		17.10.2025				
ऑनलाईन बिड डाउनलोड/अपलोड करने की अन्तिम तिथि		03.11.2025 को 6.00 पी.एम.				
ऑनलाईन बिड खोलने की तिथि		04.10.2025 को 2.00 पी.एम.				

बिड से संबंधित समस्त विवरण वेबसाईट www.dipronline.org, sppp.raj.nic.in व www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

(संजय शर्मा) अधीक्षण अभियन्ता
जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग, वृत जालोर

DIPR/C/15643/2025

मुख्यमंत्री भजनलाल के आग्रह पर राजस्थान के कम उत्पादकता वाले 8 जिलों को प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना से जोड़ा

अब इन जिलों में 11 विभागों की 36 योजनाओं को विशेष रूप से लागू करेगी केन्द्र व राज्य सरकार

कार्यालय संवाददाता

नई दिल्ली/जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के आग्रह पर केन्द्र सरकार ने तारबंदी कार्यक्रम में कई फसलों को शामिल किया है। साथ ही, राजस्थान के कम उत्पादकता वाले 8 जिलों को प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना से भी जोड़ लिया है। अब इन जिलों में 11 विभागों की 36 योजनाओं को विशेष रूप से लागू किया जाएगा। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को नई दिल्ली यात्रा के दौरान केन्द्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान के साथ मुलाकात की थी। इसके बाद दोनों नेताओं ने कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्रालय के उच्चाधिकारियों के साथ बैठक की।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को नई दिल्ली यात्रा के दौरान केन्द्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान के साथ मुलाकात की थी।

- केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह ने पत्रकारों से बातचीत के दौरान राजस्थान के विकास के लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की
- मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने केन्द्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से भी शिष्टाचार भेंट कर राजस्थान के आर्थिक विकास, विभिन्न योजनाओं के बेहतर वित्तीय प्रबंधन एवं जीएसटी बचत उत्सव पर चर्चा की

बैठक में राजस्थान में सिंचाई हेतु टांकों की व्यवस्था को जारी रखने, 'पर ड्रॉप मोर क्रॉप' योजना में राज्य की हिस्सेदारी बढ़ाने, योजना के अंतर्गत सांकेतिक आवंटन में वृद्धि करने, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा एवं पोषण मिशन की उप-योजनाओं में तारबंदी कार्यक्रम को शामिल रखने तथा दलहन उप-योजना के अंतर्गत कांटेदार तारबंदी पर अनुदान स्वीकृति जैसे कृषक हितैषी विषयों पर सार्थक निर्णय लिए गए। मुख्यमंत्री शर्मा ने राज्य के विकास और किसानों के हित में लिए गए निर्णयों के लिए केन्द्रीय मंत्री का आभार जताया।

केन्द्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने पत्रकारों से बातचीत के दौरान राजस्थान के विकास के लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा किए जा रहे अथक प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि भजनलाल शर्मा, राजस्थान के विकास और प्रदेशवासियों के कल्याण के लिए बेहतरीन कार्य कर रहे हैं। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री ने केन्द्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री को पत्र लिखकर टांका निर्माण पर रोक हटाने तथा विभिन्न योजनाओं में केन्द्रीय अनुदान बढ़ाने के लिए आग्रह किया था।

केन्द्रीय मंत्री शिवराज सिंह ने कहा कि किसानों के कल्याण के लिए भजनलाल शर्मा ने केन्द्र सरकार की योजनाओं का बेहतर क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के साथ ही राज्य सरकार के स्तर पर भी कई योजनाएं लागू की हैं। इसके बाद मुख्यमंत्री शर्मा ने सोमवार को ही केन्द्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से भी शिष्टाचार भेंट की। इस दौरान दोनों नेताओं ने राजस्थान के आर्थिक विकास, विभिन्न योजनाओं के बेहतर वित्तीय प्रबंधन एवं जीएसटी बचत उत्सव से संबंधित विषयों पर विस्तार से चर्चा की। शर्मा ने वित्त मंत्री का आभार जताते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पहल पर वित्त मंत्रालय द्वारा जीएसटी दरों में की गई कमी का आम आदमी को प्रत्यक्ष लाभ मिला है। इससे दैनिक उपयोग की अधिकांश वस्तुएं सस्ती हुई हैं। उन्होंने कहा कि जीएसटी बचत उत्सव में हिस्सा लेते हुए आमजन ने त्यौहारों पर उत्साह के साथ स्वदेशी उत्पादों की खरीदारी कर 'मेक इन इंडिया' को बढ़ावा दिया है।

द्रव्यवती नदी के सौंदर्यीकरण को लेकर न्याय मित्रों को दस्तावेज मुहैया कराएं

- राजस्थान हाईकोर्ट ने इस मामले की सुनवाई 3 दिसंबर को तय की है

जयपुर (कासं)। राजस्थान हाईकोर्ट ने शहर की द्रव्यवती नदी के सौंदर्यीकरण से जुडे मामले में हाईकोर्ट रजिस्ट्री को कहा है कि वह मामले में नियुक्त तीनों न्याय मित्रों को प्रकरण से जुड़ी डिजीटल पेपर बुक मुहैया कराए।

इसके साथ ही अदालत ने मामले की सुनवाई 3 दिसंबर को तय की है। कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश संजीव प्रकाश शर्मा और जस्टिस बीएस संधू की खंडपीठ ने यह आदेश पीएन मैंदोला व अन्य की ओर से दायर जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

सुनवाई के दौरान अदालत की जानकारी में आया कि पूर्व में नियुक्त न्यायमित्र अलंकृता शर्मा, शोभित तिवाडी और संदीप सिंह शेखावत को अदालत में रिपोर्ट पेश करनी है कि अदालती आदेश की पालना में राज्य सरकार की ओर से क्या कार्रवाई की गई, लेकिन तीनों की न्यायमित्रों को अभी तक प्रकरण से जुडे कागजात नहीं मिले हैं।

इस पर अदालत ने हाईकोर्ट की रजिस्ट्री को कहा कि वे तीनों न्यायमित्रों को संबंधित दस्तावेजों की पेपर बुक डिजिटल फॉर्मेट में मुहैया कराए। वहीं अदालत ने मामले की सुनवाई तीन दिसंबर को तय की है।

न्यायमित्र अधिवक्ता अलंकृता शर्मा ने बताया कि अदालत ने 18 साल से विचाराधीन इस प्रकरण से जुड़ी जमीनी हकीकत जानने के लिए गत सात अक्टूबर को तीन न्यायमित्र नियुक्त किए थे। उन्हें अदालती आदेश पर रिपोर्ट पेश करनी है कि अब तक मामले में राज्य सरकार की ओर से क्या कार्रवाई हुई, लेकिन पेपर बुक नहीं मिलने के अभाव में रिपोर्ट पेश नहीं की जा सकी।

गौरतलब है कि पीएन मैंदोला ने साल 2007 में जनहित याचिका दायर कर अमानीशाह नाला, जिसे अब द्रव्यवती नदी कहा जाता है, में अतिक्रमण को हटाने की गुहार कर रखी है। मामले के लंबित रहने के दौरान इसकी चौड़ाई तय करते हुए इसे पक्का किया गया है।

छठ महोत्सव : घाट सजेवली मनोहर,मईया तोरा भगती अपार...

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने वार्ड 5 स्थित सूर्य नगर, जेडीए कॉलोनी और गौतम विहार कॉलोनी में आयोजित छठ पूजा कार्यक्रम में शिरकत की।

- अस्तगामी सूर्य को दिया पहला अर्घ्य, आज उगते सूर्य को देंगे दूसरा अर्घ्य
- दिया कुमारी ने छठ पूजा में शामिल होकर समुदाय के लोगों से बिहार चुनाव में एनडीए प्रत्याशियों को वोट देने की अपील की

जयपुर। सूर्य उपासना के चार दिवसीय छठ महोत्सव के तीसरे दिन सोमवार शाम को जयपुर में निवास कर रहे पूर्वांचल के श्रद्धालुओं ने सोमवार शाम अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य अर्पित कर छठ व्रतियों ने भगवान भास्कर की आराधना की। सोमवार रात्रि को भक्ति संगीत और छठ मैया के गुणगान के साथ जागरण का आयोजन हुआ। पूर्वांचल और मिथिलांचल के लोक कलाकारों ने छठ मैया का स्थानीय भाषा में गुणगान किया। मुख्य आयोजन गीता जी तीर्थ में हुआ। यहां हजारों की संख्या में छठ व्रती अर्घ्य देने पहुंचे। घाट सजेवली मनोहर,मईया तोरा भगती अपार, । लिहिएं अरग हे मईया, दिहीं आशीष हजार...लोग गीत के साथ 36 घंटे निर्जल निराहार रहे व्रतियों ने अर्घ्य दिया। सोमवार को शाम ढलने से पूर्व ही गलताजी के घाटों पर अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य देने के लिए व्रतियों की भीड़ उमड़ी।

विद्याधर नगर विधानसभा क्षेत्र के वार्ड 5 स्थित सूर्य नगर, जेडीए कॉलोनी और गौतम विहार कॉलोनी में लोक आस्था के महापर्व छठ पूजा का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने उपस्थित रहकर श्रद्धालुओं के साथ पूजा-अर्चना की और उन्हें शुभकामनाएं दीं।

दिया कुमारी ने कहा कि छठ पर्व हमारी सनातन संस्कृति, सूर्य उपासना, आस्था, अनुशासन और प्रकृति के प्रति श्रद्धा का अद्भुत प्रतीक है। इस अवसर पर श्रद्धालुओं की भक्ति और उत्साह ने पूरे वातावरण को भक्तिमय बना दिया है। मैं भगवान सूर्य देव से प्रार्थना करती हूं कि वे सभी के जीवन में सुख, समृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य एवं प्रकाश का संचार करें। दिया कुमारी ने कहा कि, आप लोगों ने विधानसभा चुनाव में मुझे जीत दिलाई थी, अब मैं चाहती हूं कि बिहार चुनाव में भी एनडीए के प्रत्याशियों को वोट देकर सरकार बनाएं। इस अवसर पर उदय शाह, उमेश गुप्ता, अवधेश शाह, मंडल अध्यक्ष राकेश अग्रवाल, मनदीप हुंडिल, श्रवण सिंह करीरी, राजू मीणा, सुनील कारोडिया, सुरेश मौर्य, सुरेंद्र सामेर, नेमीचंद सैन, मुकेश शर्मा, सविता गोयल, सुनीता राठौड़ सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

बिहार समाज संगठन के राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी सुरेश पंडित ने बताया कि मंगलवार को उदीयमान सूर्य को अर्घ्य अर्पित करने के साथ महापर्व का समापन होगा। व्रती लोग सूर्य के उदय होने से पूर्व ही बांस की टोकरी में नारियल, गन्ना, कच्ची हल्दी, नींबू, अदरक, सेव, संतरा सहित सभी तरह के मौसमी फल लेकर पानी में खड़े हो जाएंगे। जैसे ही सूर्य उदित होंगे लोक गीतों के साथ परिवार की सुख-समृद्धि के लिए अर्घ्य प्रदान करेंगे।

सेंट्रल जेल में फिर मिले दो मोबाइल फोन

जयपुर। केंद्रीय कारागार में मोबाइल फोन मिलने का सिलसिला जारी है। जेल प्रशासन ने कई बार औचक निरीक्षण किए ,ताकी की सलाखों के पीछे बैठे हार्डकोर अपराधी किसी वारदात को अंजाम नहीं दे सकें। इसके बाद भी जेल परिसर में मोबाइल फोन मिलना अब आम बात होती नजर आ रहीं है। जेल प्रशासन ने रविवार को औचक निरीक्षण में बाथरूम और बैरक से दो मोबाइल फोन बरामद किए है। जिसके बाद जेल प्रशासन ने अज्ञात के खिलाफ लालकोठी थाने में मामला दर्ज कराया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर सिम नंबर और मोबाइल फोन के ईएमआई नंबरों के आधार पर जांच शुरु कर दी है।

थानाधिकारी प्रकाश राम विश्नोई ने बताया कि जेल परिसर में मोबाइल फोन को लेकर आए दिन औचक निरीक्षण किया जा रहा है। रविवार शाम 7 बजे गश्त के दौरान वार्ड नंबर-7 के बाथरूम में एक मोबाइल लावारिस हालत में मिला।

राजस्थान में 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चे किसी भी दुकान या वाणिज्यिक संस्थान में काम नहीं करेंगे

भजनलाल सरकार ने दुकान-वाणिज्य संस्थान अधिनियम में संशोधन को मंजूरी दी

-कार्यालय संवाददाता-

- सरकार के इस फैसले को राजस्थान में श्रम सुधार की बड़ी पहल बताया गया है। इस निर्णय से बच्चों व महिलाओं की सुरक्षा के साथ व्यापारिक जगत को बढ़ावा मिलेगा

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राजस्थान सरकार ने श्रमिकों के हितों और सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए महत्वपूर्ण श्रम सुधारों को मंजूरी दी है। मुख्यमंत्री ने राजस्थान दुकान एवं वाणिज्य संस्थान (संशोधन) अध्यादेश 2025 को अनुमोदन प्रदान किया है, जिसके तहत प्रदेश में व्यापारिक गतिविधियों को आधुनिक और अधिक प्रभावी बनाने के साथ-साथ बच्चों के अधिकारों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया है।

संशोधन के अनुसार अब 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को किसी भी दुकान या वाणिज्यिक संस्थान में नियोजित नहीं किया जा सकेगा। प्रशिक्षु की न्यूनतम आयु सीमा 12 वर्ष से बढ़ाकर 14 वर्ष कर दी गई है। इसी प्रकार, 14 से 18 वर्ष की आयु तक के किशोरों को रात्रि के समय कार्य करवाना पूर्णत: प्रतिबंधित रहेगा। यह बदलाव बाल श्रम को रोकने और किशोरों को शिक्षा, पोषण एवं स्वास्थ्य के उचित अवसर उपलब्ध कराने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। सरकार ने श्रमिकों की दैनिक कार्य अवधि में भी संशोधन किया है। अब अधिकतम कार्य अवधि 9 घंटे से बढ़ाकर 10 घंटे कर दी गई है तथा ओवरटाइम सीमा तिमाही में 144 घंटे तक कर दी गई है। इससे उत्पादन क्षमता में वृद्धि के साथ श्रमिकों को भी अतिरिक्त आय का अवसर प्राप्त होगा। सरकार का मानना है कि यह फैसले प्रदेश की अर्थव्यवस्था और श्रमिक कल्याण-दोनों के लिए लाभदायक होंगे।

मुख्यमंत्री ने राजस्थान कारखाना (संशोधन) नियम 2025 को भी मंजूरी दी है। अब विशेष श्रेणी के कारखानों में महिलाओं को नियोजन की स्वीकृति दी जाएगी। गर्भवती और धात्री महिलाओं को छोड़कर अन्य महिलाओं को इन कारखानों में कार्य करने की अनुमति होगी, बशर्ते नियोक्ता उनकी सुरक्षा के लिए उचित व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण उपलब्ध कराए। फेस शील्ड, हीट शील्ड, मास्क, ग्लव्स और श्वसन सुरक्षा उपकरणों की व्यवस्था अनिवार्य होगी।

इसके साथ ही कार्यस्थल पर वायु गुणवत्ता सुनिश्चित करने और सभी श्रमिकों को सुरक्षा प्रशिक्षण प्रदान करने का निर्देश दिया गया है ताकि महिलाओं की सुरक्षा और निजता के अधिकारों को सर्वोच्च प्राथमिकता मिल सके। इन संशोधनों के माध्यम से भारत सरकार के कंप्लायंस रिडक्शन एंड डिरेगुलेशन डॉकेट की प्रभावी अनुपालना हो रही है। राज्य सरकार का दावा है कि इन सुधारों से श्रमिकों के लिए सुरक्षित और अनुकूल माहौल तैयार होगा, वहीं उद्योग व व्यापार क्षेत्र को भी गति मिलेगी। मुख्यमंत्री ने कहा है कि सरकार श्रमिक हितों और निवेशक सुविधा-दोनों के संतुलन को ध्यान में रखते हुए आगे भी सार्थक कदम उठाती रहेगी।

ज्योतिष-वास्तु सम्मेलन में जुटेंगे देश-विदेश के विद्वान

जयपुर। ज्योतिष शास्त्र में निहित तथ्यों को समसामयिक स्वरूप में समाज के समक्ष प्रस्तुत करते हुए वास्तु शास्त्रीय परंपरा को प्रायोगिक दृष्टि से लोकोपयोगी बनाने के उद्देश्य से एक दिवसीय इंटरनेशनल एस्ट्रो वास्तु कॉन्फ्रेंस- 2025 नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ आयुर्वेद में आयोजित की जाएगी। अनेक जाने-माने ज्योतिष, वास्तु, वैदिक एवं टैरो रीडर विशेषज्ञ प्रतिभागियों को मार्गदर्शन प्रदान करेंगों देश-विदेश के लगभग 500 विद्वान भाग लेंगे। बाहर से आए हुए सभी विद्वानों के ठहरने की व्यवस्था आयोजन स्थल पर ही की जाएगी। सम्मेलन का शुभारंभ जयपुर के आराध्य देव श्री गोविंद धाम में विराजित श्री गोविंद देव जी के मंगला दर्शन से होगा। प्रवेश केवल निमंत्रण के आधार पर ही प्रवेश होगा। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी, श्री सरस निकुंज के अलबेली माधुरी शरण महाराज, कथावाचक इंद्रेश उपाध्याय, विधायक बालमुकुंद आचार्य, रेणुका पुण्डरीक गोस्वामी, गोवत्स विठ्ठल महाराज, आचार्य शुभेष शरमन, जी.डी. वशिष्ठ, प्रो. डॉ. केदार शर्मा, प्रो. विनोद शास्त्री, डॉ. महेन्द्र मिश्रा, अनिल कुमावत और हरमित चावला कार्यक्रम के मुख्य अतिथि होंगे। यह जानकारी ज्योतिषाचार्य डॉ. महेन्द्र मिश्रा ने दी।

रेट में रोजाना कम से कम एक पीठ करेगी मामलों की सुनवाई

जयपुर (कासं)। राजस्थान हाईकोर्ट को कार्मिक सचिव ने आश्वस्त किया है कि सिविल सेवा अपीलीय अधिकरण (रेट) की जयपुर बेंच में हर कार्य दिवस पर सुबह दस बजे से शाम चार बजे तक कम से कम एक पीठ मुकदमों की सुनवाई करेगी। इसके साथ ही प्रत्येक बेंच में सुनवाई के लिए वीसी की सुविधा आरंभ की जाएगी। डीओपी सचिव के आश्वासन को रिकॉर्ड पर लेते हुए अदालत ने अधिकरण के रजिस्ट्रार को एक सप्ताह में पालना रिपोर्ट पेश करने को कहा है। वहीं अदालत ने आगामी सुनवाई पर डीओपी सचिव को उपस्थिति से छूट देते हुए कहा कि वे इन बिंदुओं पर कामकाज की मॉनिटरिंग करेंगी। जस्टिस अशोक कुमार जैन की एकलपीठ ने यह आदेश सुमन कुमारी की याचिका पर दिए।

सुनवाई के दौरान अदालती आदेश की पालना में डीओपी सचिव शुचि त्यागी और अधिकरण के रजिस्ट्रार राकेश मीणा अदालत में पेश हुए। डीओपी सचिव ने अदालत को आश्वासन दिया कि अधिकरण की हर बेंच के लिए वीसी की सुविधा आरंभ की जाएगी। वहीं अधिकरण की वेबसाइट पर लाइव डिजिटल डिस्प्ले सिस्टम के साथ-साथ अदालत कक्ष और भवन के बाहर डिस्प्ले बोर्ड लगाया जाएगा, ताकि वकील दूरस्थ स्थान से भी अपने मामलों पर नजर रख सकें। इसके अलावा यदि आकस्मिक स्थिति में सभी बेंच बंद हो जाती है तो जोधपुर सहित अन्य स्थान पर कार्यरत सर्किट बेंच वीसी के जरिए मामलों की सुनवाई करेगी और इसके लिए जयपुर पीठ से ऑनलाइन रिकॉर्ड भेजा जाएगा।

याचिका पर सुनवाई के दौरान पूर्व में वकीलों ने अदालत को बताया था कि राज्य सरकार ने कर्मचारियों के सेवा संबंधी विवादों के निपटारे के लिए सिविल सेवा अपीलीय अधिकरण का गठन किया है। जहां प्रत्येक मामले की सुनवाई के लिए दो सदस्यीय पीठ का गठन होता है, लेकिन किसी ना किसी कारण से पीठ गठित नहीं होती या अंतिम समय पर रद्द हो जाती है। जिससे मामलों पर सुनवाई नहीं हो पाती। जबकि पूर्व में अधिकरण में वीसी स्थापित करने के निर्देश दिए जा चुके हैं।

पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार में मृदा स्वास्थ्य परीक्षण एवं जड़ी-बूटियों की सतत खेती पर राष्ट्रीय सम्मेलन

- पतंजलि और नाबार्ड मिलकर सृजनात्मक कार्य को प्रभावी ढंग से संचालित कर सकते हैं : नाबार्ड अध्यक्ष शाजी के.वी
- सार्वभौमिक और निहित संपदा को पुनर्जीवित करना आवश्यक है। श्रद्धेय आयुर्वेद शिरोमणि आचार्य बालकृष्ण स्वस्थ धरा के लिए मृदा प्रबंधन आधुनिक समय की आवश्यकता श्रद्धेय आयुर्वेद शिरोमणि आचार्य बालकृष्ण

जयपुर। पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार में मृदा स्वास्थ्य परीक्षण एवं जड़ी-बूटियों की सतत खेती पर राष्ट्रीय सम्मेलन 27 अक्टूबर से शुरू हुआ, जो मंगलवार को भी जारी रहेगा। यह सम्मेलन केन्द्रीय आयुष मंत्रालय, पतंजलि ऑर्गेनिक रिसर्च इंस्टिट्यूट, आरसीएससीएनआर-1 के तत्वावधान में होगा। कार्यशाला ऑटोमेटिड मृदा परीक्षण मशीन धरती का डॉक्टर (डीकेडी), के संदर्भ में स्वस्थ धरा और दीर्घकालिक खादय सुरक्षा को प्रोत्साहित करने व वैश्विक स्तर पर मजबूत करने के उद्देश्य से आयोजित की गई।

जहां पतंजलि विश्वविद्यालय के कुलपति परम श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण महाराज ने मुख्य अतिथियों का स्वागत पुष्प गुच्छ, अंग वस्त्र और स्मृति चिहन भेंट करके किया। शुभारम्भ दीप प्रज्वलन, धन्वंतरि वंदना और डॉ. अर्चना तिवारी व उनकी टीम के समूहगान से हुआ। स्वागत उद्बोधन, निदेशक मृदा भरुवा एग्री साइंस, डॉ. के.एन. शमी ने दिया। आचार्य और मुख्य अतिथियों ने सार पुस्तिका "स्वस्थ धरा और मेडिसिनल प्लांट्स: इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फाइटोमेडिसिन्स एंड रिलेटेड इंडस्ट्रीज" का लोकार्पण भी किया।

नाबार्ड के अध्यक्ष शाजी के.वी. ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने संबोधन में कहा कि नाबार्ड का प्रमुख उद्देश्य देश में स्थायी कृषि और ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने के लिए कृषि, लघु उद्योग, कुटीर व हस्तशिल्प, यामोद्योग और अन्य ग्रामीण शिल्प के लिए ऋण उपलब्ध कराना है। वर्तमान की आवश्यकता यह है कि ग्रामीण विकास में निवेश बढ़े और समावेशी तथा स्थायी कृषि को प्रोत्साहित किया जाए। नाबार्ड देशभर में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों और सहकारी बैंकों का संचालन करते हुए कृषि प्रक्रियाओं में सुधार लाने के लिए प्रतिबद्ध है। आचार्य बालकृष्ण ने कहा कि फसल की सुरक्षा से ही मानव स्वास्थ्य की रक्षा संभव है। अब समय आ गया है जब हमें अपने पूर्वजों से पाप्त मिट्टी को उसके मूल स्वरूप पुन: लौटाना चाहिए और मूल की भूल को सुधारना चाहिए।

पतंजलि की डीकेडी मशीन मृदा संबंधी चुनौतियों को दूर कर धरती को रोगमुक्त बनाने में सहायक सिद्ध हो रही है। इसकी किट से केवल आधे घंटे में मिट्टी के आवश्यक पोषक तत्व: नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटेशियम, पौएच, ऑर्गेनिक कार्बन और इलेक्ट्रिकल कंडक्टिविटी, का परीक्षण किया जा सकता है, जिससे मिट्टी में पोषक तत्वों की कमी या अधिकता का सटीक पता चलता है।

अपने व्याख्यान में मृदा भरुवा एग्री साइंस के निदेशक डॉ. के. एन. शर्मा ने बताया कि पतंजलि भरुवा एग्री साइंस ने जैविक खेती एक प्रणाली है जो रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक के बजाय जैविक खाद, हरी खाद और फसल चक्र का उपयोग कर मिट्टी की उर्वरता, पारिस्थितिक संतुलन और प्रदूषण मुक्त उत्पादन सुनिश्चित करती है। किसानों को उच्च गुणवत्ता वाली फसल उत्पादन की चुनौतियों का समाधान करने के लिए डीकेडी, ऑटोमेटेड मृदा परीक्षण मशीन बनाई है। इसके द्वारा मिट्टी से पोटैशियम, फॉस्फोरस, मैग्नीशियम, कैल्शियम जैसे महत्त्वपूर्ण तत्वों को रासायनिक तरीके से पृथक किया जाता है और उनके स्तर का मूल्यांकन किया जाता है। मृदा विश्लेषण पौधों के लिए आवश्यक पोषक तत्वों की सही मात्रा जानने का एक प्रभावी तरीका है जो मृदा प्रबंधन, उत्पादन, लागत में कमी, मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार और उपज बढ़ाने में मदद करता है, जिससे कृषि स्थिरता में सुधार होता है।

कार्यक्रम में बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, सोलन के डॉ. राजेश्वर सिंह चंदेल ने पर्वतीय क्षेत्रों में सीमित भूमि के बावजूद एकीकृत कृषि प्रणाली प्रभावी बताते हुए पारंपरिक ज्ञान, नवाचारी उपकरण और महिला प्रशिक्षण की आवश्यकता पर जोर दिया। इसके अलावा, अन्य विशेषज्ञों प्रो बी. आर. कांबोज, डॉ. जे. एन. रैना, डॉ. जी.पी. राव और डॉ. प्रदीप शर्मा ने स्वस्थ मिट्टी, बेहतर फसल और प्रबंधन तकनीक से वैश्विक स्वास्थ्य के भविष्य से जुड़ी महत्त्वपूर्ण जानकारी साझा की। कार्यक्रम के अंत में पोस्टर सत्र के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। अंत में सभी अतिथियों और प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया।

संघीय ढांचे की समझ के बिना राजनीति कर रहे है तेजस्वी, यह बचकानापन : मदन राठौड़

- अंता चुनाव में कांग्रेस जैसा कलंकित उम्मीदवार भाजपा का नहीं, यहां भारी मतों से चुनाव जीतेगी भाजपा : प्रदेशाध्यक्ष
- कांग्रेस हमेशा तुष्टिकरण की राजनीति, कभी किसी वर्ग विशेष के लिए तो कभी किसी गठबंधन के दबाव में है : मदन राठौड़

जयपुर (कासं)। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने बिहार चुनाव, तेजस्वी यादव और राजस्थान में अंता उपचुनाव में विपक्ष के बयानों पर तीखी प्रतिक्रिया दी। राठौड़ ने कहा कि तेजस्वी यादव अभी युवा हैं, उन्हें देश के संघीय ढांचे की समझ नहीं है। हमारा देश संघीय व्यवस्था से चलता है और जो निर्णय केंद्र सरकार लेती है, उसे हर राज्य को मानना होता है। कोई यह कह दे कि हम किसी केंद्रीय कानून को अपने प्रदेश में लागू नहीं होने देंगे, यह न केवल बचकानी बात है बल्कि संविधान की अवमानना भी है। यह देश एक है और कोई भी प्रदेश इस देश से अलग नहीं है। तेजस्वी यादव और कांग्रेस पार्टी दोनों ही ऐसे बयान देकर भ्रम फैलाने का काम कर रहे हैं।

तेजस्वी की वही भाषा है जो पहले राहुल गांधी बोलते थे और अब तेजस्वी उसी शब्दावली का उपयोग कर रहे हैं, लेकिन इससे फर्क नहीं पड़ता । बिहार में भाजपा की सरकार बनने वाली है और भाजपा की नीतियां हर राज्य में समान रूप से लागू होंगी।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने चारा घोटाले से जुड़े सवाल पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि यह बात सर्वविदित है कि लालू प्रसाद यादव पर गंभीर आरोप लगे थे। कांग्रेस ने तब उन्हें बचाने की पूरी कोशिश की थी, मुकदमों को कमजोर करने के प्रयास किए गए, लेकिन सफलता नहीं मिली। कांग्रेस हमेशा तुष्टिकरण की राजनीति करती आई है। कभी किसी वर्ग विशेष के लिए, कभी किसी गठबंधन के दबाव में। गठबंधन की राजनीति में कांग्रेस को अपने साथियों की शर्तें माननी पड़ती हैं, वरना गठबंधन टूट जाता है। यही कारण है कि वह नैतिकता से समझौता करती रहती है। राठौड़ ने कहा कि देश में यदि एसआईआर सर्वे या मतदाता सूची की समीक्षा हो रही है, तो यह स्वागत योग्य कदम है।

जिन लोगों ने गलत तरीके से अपने नाम जुड़वाए हैं, उन्हें ही डर लग रहा है। अगर कोई गलत नाम मतदाता सूची से हटाया जा रहा है तो डरने की जरूरत क्यों ? देश का निर्णय देश का नागरिक करेगा। जो ईमानदार हैं, उन्हें डरने की कोई जरूरत नहीं है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने कांग्रेस की अंदरूनी कलह पर कहा कि आज कांग्रेस एकजुटता की बात कर रही है, लेकिन अपने ही मुख्यमंत्री को किसने नीचा दिखाया? पार्टी किसने तोड़ी? आज जो 'हॉर्स ट्रेडिंग' की बातें कर रहे हैं, वही अपने नेताओं को बेचने पर मजबूर कर चुके हैं। क्या उनके अपने विधायक बिकाऊ माल हैं कि वे ऐसी बातें कर रहे हैं? राठौड ने कहा कि भाजपा में न तो कोई विद्रोह है, न असंतोष। भाजपा पार्टी एकजुट है। चुनावी तैयारी पूरी है। हमारे उम्मीदवार मोरपाल सुमन और कार्यकर्ता अपने क्षेत्र में सक्रिय है। भाजपा के वरिष्ठ नेता मैदान में जुटे हुए है। स्वयं वसुंधरा राजे, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा जी निगरानी कर रहे हैं। मदन राठौड़ ने कहा कि विपक्ष कैसे भी गलत हथकंडे अपनाए, सफलता नहीं मिलेगी। हाल ही में करीबन 9 करोड़ रुपए और शराब जब्त की गई, ये गलत तरीके हैं, जो चुनावी नैतिकता के विरुद्ध हैं। जनता सब जानती है और समय पर जवाब देगी।

राठौड़ ने कहा कि भजनलाल शर्मा की सरकार ने राजस्थान में जिस तरह तेजी से काम किया है, वह प्रशंसनीय है। पिछली कांग्रेस सरकार ने पाँच साल में ईआरसीपी और बिजली व्यवस्था पर कोई काम नहीं किया। अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में रामजल सेतू परियोजनाएं शुरू हुई हैं, टेंडर जारी हुए हैं और पाइपलाइन का काम चालू हो गया।

गलत दिशा से आई निजी बस ने एसयूवी को टक्कर मारी, एक की मौत, 36 घायल

कार सवार परिवार जीण माता दर्शन करने जा रहा था, ओसियां से रवाना होते ही हादसा हुआ

- हादसे में कार में सवार एक ही परिवार के छह लोग घायल हो गये और एक की मौत हो गई
- हादसे के बाद निजी बस भी पलटी खा गई और बस में सवार 31 लोग घायल हो गए

जोधपुर, (कासं)। जिले के ओसियां पुलिस थाना क्षेत्र में चाड़ी गांव के समीप सोमवार की सुबह चाड़ी गांव से जोधपुर की तरफ आ रही एक एसयूवी कार को सामने से आई निजी बस ने टक्कर मार दी। हादसे में कार में सवार एक ही परिवार के छह लोग घायल हो गए और एक की मौत हो गई। इधर हादसे के बाद बस भी पलटी खा गई और उसमें सवार 31 लोग घायल हो गए। जिनमें 12 लोगों को जोधपुर रैफर किया गया है। कार में सवार सभी छह लोगों को जोधपुर भेजा गया है। मृतक भीनमाल का है और व्यापारी बताया जाता है। साथ में पत्नी और बेटे भी थे। सूचना के बाद पुलिस मौका स्थल पर पहुंची। कार में सवार मृतक बुरी तरफ फंस गया था, जिसे बाद में बमुश्किल बाहर निकाला गया।

ओसियां थानाधिकारी राजेंद्र सिंह ने बताया कि सोमवार सुबह आठ बजे के आसपास चाड़ी गांव के समीप में सड़क दुर्घटना की जानकारी मिली। चाड़ी की तरफ आ रही एक ग्रामीण रूट की निजी बस और एसयूवी-700 में यह टक्कर हुई थी। प्रथम दृष्टया पता लगा कि बस चालक ने गलत दिशा में जाकर कार को टक्कर मारी है। हादसे में कार में सवार भीनमाल जालोर निवासी भंवरजी पुत्र प्रताप माली की मौत हो गई। कार चालक दिलीप कुमार, अरविंद, विजय, उषा माली, संतोष माली एवं महेंद्र बुरी तरह घायल हो गए। जिन्हें उपचार के लिए जोधपुर रैफर किया गया है। इस हादसे के बाद बस पलटी खा गई और उसमें सवार 31 लोग घायल हो गए। जिन्हें उपचार के लिए ओसियां और जोधपुर के अस्पताल में भर्ती करवाया गया है। छह लोगों को जोधपुर रैफर किया गया है। हादसे में जाखण निवासी सुल्तान, पूनासर ओसियां निवासी नरसिंगराम, ओमपुरा निवासी पेमाराम जाट, चाड़ी के ओमप्रकाश विश्नोई, खिंदाकोर के पप्पूराम, बापिणी के दिनेश, ज्योति मेघवाल, पूनासर की यशु कंवर, कंवरजी की खेजड़ी निवासी पूजा पुत्री भागीरथराम, चाड़ी के किशनाराम, थारा के संजय, कपूरिया निवासी नैनसिंह, पूनासर निवासी भोजाराम, रिमडमलसर निवासी गंगाराम, जाखण के सत्ताराम, ओमपुरा निवासी पूनाराम, बिरसालु निवासी माधाराम, कड़वा के दीपसिंह, चाड़ी के जगदीश, निंबों का तालाब निवासी रामेश्वर, पूनासर के गोमदराम, पंडितजी की ढाणी के दिलीपसिंह, बिरसालु निवासी हुकमाराम, धर्मेंद्र, जगदीश, भगवती, पंडितजी की ढाणी के जसराज सोनी, गणपतसिंह, जितेंद्र सिंह, बाबूराम, एवं पूनासर के चोलाराम पुत्र मांगूराम घायल हुए हैं। बस में सवार पूजा, किशनाराम, संजय, नैनसिंह, भोजाराम एवं गंगाराम को जोधपुर रैफर किया गया है।

कार चला रहे दिलीप सैन ने बताया कि वो भीनमाल से अल सुबह चार बजे निकले थे। आज सुबह ओसियां से नाश्ता करके निकले थे। थोड़ा आगे निकलते ही सामने मोड पर अचानक से बस रॉन्ग साइड में सामने आ गई। बस की स्पीड करीब 100 के आस-पास थी। मुझे कुछ सेकेंड भी संभलने का मौका नहीं मिला। हालांकि मैंने गाड़ी को बचाने का प्रयास किया, लेकिन बस ने गलत दिशा में टक्कर मार दी। कार में सवार महिला ऊषा ने बताया कि वह अपने परिवार के साथ भीनमाल से जीण माता दर्शन के लिए जा रहे थे। ओसियां से रवाना होते ही ये हादसा हो गया। हादसे की सूचना के बाद में कांग्रेस नेता करण सिंह उचियारड़ा अस्पताल पहुंचे तथा घायलों से मुलाकात की। उन्होंने सभी घायलों से मुलाकात की और उनसे हादसे को लेकर जानकारी ली।

किसान के फसल का बीमा उठाने से पहले ही ठगों ने क्लेम लिया

किसान ई-मित्र पर पहुंचा तो पता चला, 5 गांव के 11 किसानों से धोखाधड़ी

- किसान को यह भी मालूम नहीं चला कि उसकी फसल पर ठगों ने इंश्योरेंस भी करा रखा है
- एफआईआर के मुताबिक खोखराणा, लालेरा, खियेरां, भादवा, खिलेरिया में भी कई लोगों के साथ इसी तरह की धोखाधड़ी हुई

बीकानेर, (निसं)। यहां ठगों ने किसान के फसल का बीमा उठाने से पहले ही क्लेम ले लिया, यही नहीं किसान को यह भी मालूम नहीं चल पाया कि उसकी फसल पर ठगों ने इंश्योरेंस करवा रखा है। जब किसान ई-मित्र पर अपनी फसल का इंश्योरेंस कराने पहुंचा तो मामले का खुलासा हुआ। ई-मित्र संचालक ने बताया कि फसल का क्लेम तो पहले ही किसी और नाम से दिया जा चुका है। इसके बाद एक एक कर करीब 5 गांवों के 11 किसान सामने आए हैं, जिन्होंने थाने में अपनी शिकायत दी है।

लूणकरनसर के खोखराणा गांव के किसान बुधराम मेघवाल ने पुलिस को रिपोर्ट दी है। इसमें बताया कि इलाके में एक गिरोह बीमा क्लेम उठाने का काम कर रहा है। बुधराम की संयुक्त खातेदारी कृषि भूमि गांव खोखराणा में खसरा नंबर 430 में 6.8300 हेक्टेयर व खसरा नंबर 830 में 6.5800 हेक्टेयर है। दोनों खसरा में कुल 13.4000 हेक्टेयर जमीन है। इसमें उसका चौथाई हिस्सा है। शेष उसके तीन अन्य भाई मुखराम, श्रवण राम व मघाराम की है।

रिपोर्ट में बताया कि बुधराम ने जुलाई 2025 में खरीफ की फसल काश्त करने पर पी एमएफबी बाई योजना के तहत अपनी खरीफ की फसल का बीमा करवाने के लिए गांव (खोखरणा) में स्थित ई-मित्र केंद्र पर सम्पर्क किया था। बुधराम ने बताया कि मेरे होश उड़ गए जब ई-मित्र संचालक ने बताया कि मेरे खेत में खरीफ की फसल ग्वार के लिए किसी देवीलाल पुत्र श्रीराम निवासी लालेरा ने फसल बीमा के लिए आवेदन किया था। इसमें खसरा नंबर इन्हीं भाइयों के खेत के थे, इसमें पॉलिसी नंबर भी दिए गए थे। संचालक ने बताया कि दोनों खसरों की जमीन का बीमा पहले ही करवाया जा चुका है। ई-मित्र संचालक ने ये भी कहा कि देवीलाल नाम से रबी की फसल का बीमा भी उनके खाते से ही उठाया गया था। तब 45 हजार रुपए दी सेंट्रल कोऑपरेटिव बैंक लिमिटेड बीकानेर की शाखा लूणकरणसर के माध्यम से देवीलाल ने ले लिए हैं।

बुधराम ने आरोप लगाया है कि देवीलाल ने राजस्व विभाग के कर्मचारियों और बैंक के कर्मचारियों से मिलीभगत कर कूटरचित दस्तावेजों पर उसके और उसके परिवारजनों के फर्जी हस्ताक्षर व अंगूठे लगा लिए। रबी 2024 की फसल सरसों व तारामीरा के बीमा क्लेम आवेदन अपने नाम से 45 हजार का भुगतान बैंक दी सेन्ट्रल कोऑपरेटिव बैंक लिमिटेड लूणकरणसर से प्राप्त कर लिया।

एफआईआर में देवीलाल, भगवाना राम पुत्र खेताराम, बलराम पुत्र कालूराम जाट निवासी लालेरा और शिवलाल पुत्र मेहनराम जाति निवासी खियेरा के नाम लिखवाए गए हैं। पुलिस के अनुसार, किसान को फसल बीमा के बारे में जानकारी ही नहीं होती और ये लोग फर्जी नाम से फसल का बीमा कटवाकर फर्जी भुगतान उठा रहे हैं। एफआईआर के मुताबिक खोखराणा, लालेरा, खियेरां, भादवा, खिलेरिया में भी कई लोगों के साथ इसी तरह की धोखाधड़ी हुई है।

बाड़मेर से कोटा आ रही निजी बस पलटी, एक दर्जन यात्री घायल

- आगे चल रहे ट्रेलर को ओवरटेक के प्रयास में बस अनियंत्रित होकर पलट गई
- बस में करीब 40-45 यात्री सवार थे, लोगों ने घायलों को बस से निकाला

दुर्घटना के बाद क्रेन बुलाकर सड़क से बस हटवाई।

कोटा, (निसं)। नांता थाना इलाके में सोमवार सुबह कोटा-उदयपुर नेशनल हाईवे पर आगे चल रहे ट्रेलर को ओवरटेक के प्रयास में बाड़मेर से कोटा आ रही निजी बस तेज रफ्तार में अनियंत्रित होकर पलट गई। हादसे में करीब एक दर्जन से ज्यादा यात्री घायल हो गये। बस पलटते ही मौके पर चीख-पुकार मच गई। उधर से गुजर रहे लोगों ने लहूलुहान यात्रियों को बस से निकाला और अस्पताल पहुंचाया। बस पलटने की सूचना पर पुलिस और जिला प्रशासन के अधिकारी अस्पताल में घायलों से मिलने पहुंचे।

कोटा सिटी एसपी तेजस्विनी गौतम, लाडपुरा एसडीएम गजेंद्र सिंह, पुलिस उपाधीक्षक मनीष शर्मा आदि ने हादसे में घायल महिलाएं और बच्चों से जानकारी ली। एडीएम गजेंद्र सिंह ने उचित इलाज के लिए अस्पताल को निर्देश दिए।

नान्ता थाने के उपनिरीक्षक थानाधिकारी नवलकिशोर शर्मा ने बताया कि बाड़मेर से कोटा आ रही यात्रियों से भरी निजी बस खड़ीपुर के समीप ट्रेलर को ओवरटेक करने के दौरान ट्रेलर चालक द्वारा ब्रेक लगाने पर अनियंत्रित होकर पलट गई। थानाधिकारी ने बताया कि बस में करीब 40-45 यात्री सवार थे, बस पलटने की सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंच गई थी। हादसे में करीब एक दर्जन से ज्यादा यात्री घायल हो गए जिसमें महिलाएं और बच्चे भी हैं। थानाधिकारी ने बताया कि दुर्घटना के बाद क्रेन बुलाकर सड़क से बस हटाई और रास्ता क्लियर कराया गया। थानाधिकारी ने बताया कि बस चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है एवं बस को जब्त कर चालक को गिरफ्तार कर लिया, मामले की जांच की जा रही है। हादसे में घायलो में कुणाल, हिमांशु, सीमा गौस्वामी, उमर खान, लवली, मुकेश कुमार, जितेन्द्र कुमार, कृष्णा, मदन, राजेन्द्र, प्रेम बाई, बनवारी बाई एवं सामरिया है।

ट्रक से टकराई रोडवेज बस

टोंक, (निसं)। बरोनी थाना क्षेत्र पर स्थित जयपुर-कोटा नेशनल हाईवे-52 पर सोमवार दोपहर को जयपुर से कोटा की ओर जा रही राजस्थान रोडवेज बस आगे चल रहे ट्रक से टकरा गई। हादसे के बाद बस में चीख-पुकार मच गई तथा चार जने घायल हो गए। घटना के बाद में घटनास्थल पर मौजूद राहगीरों व ग्रामीणों ने घायलों को सआदत अस्पताल टोंक में भर्ती कराया। बस में मौजूद एक सवारी ने बताया कि यह हादसा बारिश के चलते एकाएक ट्रक नजर नहीं आने से हुआ है, इस दौरान बस के आगे वाइपर भी नहीं था। इससे बस के आगे का शीशा रिमझिम बारिश से धुंधला हो गया और चालक को ट्रक नजर नहीं आया जिससे हादसा हो गया। मौके पर पहुंची बरोनी थाना पुलिस ने बताया कि जयपुर से कोटा जा रही रोडवेज बस बरोनी थाना क्षेत्र के एनएच-52 के डीटीओ ऑफिस के पास पर चल रहे ट्रक स्पष्ट रूप से नहीं दिखा और रोडवेज बस पीछे से टकरा गई। हादसे में चार सवारी घायल हुई है, जिन्हें सआदत अस्पताल पहुंचाया गया है।

धुधाड़ा-जोधपुर सड़क की गुणवत्ता में कई खामियां : पूर्व राज्यमंत्री पुखराज पाराशर

पुखराज पाराशर ने क्षतिग्रस्त सड़क की खामियां दूर कराने के लिये मुख्यमंत्री को पत्र लिखा

- सड़क का निर्माण लगभग पूर्ण हो चुका है, मगर सड़क की गुणवत्ता को लेकर कई खामियां रही हैं

जालोर, (कासं)। जन अभाव अभियोग निराकरण समिति के पूर्व अध्यक्ष पुखराज पाराशर ने मंगलवार को जालोर जिले के नरसाणा भंवरानी होते हुए धुंधाडा-जोधपुर सड़क निमार्ण में सड़क की गुणवत्ता को लेकर कई खामियां होने को लेकर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को पत्र लिखा है।

पूर्व राज्यमंत्री पुखराज पाराशर ने बताया कि पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार द्वारा जालोर जिले के नरसाणा, भंवरानी होते हुए धुंधाडा तक सड़क के चौड़ाईकरण एवं सौंदर्यकरण के लिए 56 करोड़ रुपये की स्वीकृति प्रदान की थी। जिसका शिलान्यास 30 जून 2023 को किया गया था। सड़क की स्वीकृति जालोर जिले को जोधपुर से जोड़ने के लिए वैकल्पिक मार्ग उपयोग के लिए की गई थी। जिसका निर्माण लगभग पूर्ण हो चुका है, मगर सड़क की गुणवत्ता को लेकर कई खामियां रही हैं, जिसे पूर्ण करने से जनहित में इसका लाभ मिलेगा।

पत्र में बताया कि बाला ग्राम से भोरड़ा ग्राम तक 3-4 किमी. सड़क का काम अधूरा है तथा घाणा नदी, घाणा गेलावास के बीच जो पुल बना हुआ है उसे मरम्मत की आवश्यकता है। अगर इसकी जगह नया व ऊँचा पुल बनाया जाए तो बारिश के दिनों में रास्ता नहीं रुकेगा। अभी भी बारिश के दिनों में कई दिनों तक आवागमन बंद रहा है। बिजली व घाणा ग्राम के बीच बांडी नहर पर स्थित छोटे पुल का स्लोप बहुत ही ऊँचा है, जिससे गाड़ियों के आने-जाने में बहुत ही परेशानी हो रही है। अभी 3-4 माह पहले एक वाहन दुर्घटनाग्रस्त हो गया था, जिसमें 2 लोगों की मौत हो गई थी।

पत्र में बताया कि जोधपुर जिले के धुंधाड़ा गांव से पहले जहां ये सड़क (नरसाणा धुंधाड़ा) समाप्त होती हैं, वहीं से सड़क क्षतिग्रस्त है। इसे दुरस्त कराया जाना चाहिए। धुंधाड़ा से कांकाणी की ओर जाने वाली सड़क पर बड़े-बड़े स्पीड ब्रेकर बनाये हुए हैं। उसे कम करने की आवश्यकता है जिससे वाहनों को नुकसान नहीं हो। जालोर से रोहट सड़क (बीओटी) की खराब स्थिति को देखते हुए जोधपुर के लिए बनाये गये वैकल्पिक सड़क की उक्तानुसार खामियों को दूर करने के निर्देश विभागीय अधिकारियों को देने का श्रम करावे, ताकि जनता को इसका लाभ मिल सके।

पूर्व राज्यमंत्री पुखराज पाराशर ने बताया कि सरकार ने अपनी गलती को सुधारने का ढोंग रच कर एक स्वीकृति पत्र जारी कर श्रेय लेने का तरीका ढूंढने का असफल प्रयास किया है। जनता सब जानती है कि पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने राजस्थान विधानसभा में 27 करोड़ की लागत से जालोर जिले की सड़क निर्माण की घोषणा कर स्वीकृति जारी की थी। स्थानीय वन विभाग के प्रस्ताव अनुसार वन एव पर्यावरण विभाग ने स्वीकृति दी। तत्पश्चात वित्तीय स्वीकृति जारी होकर निविदा आमंत्रित कर कार्य आदेश जारी कर दिए गए हैं। तत्कालीन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने 3 जून 2023 को शिलान्यास किया, तत्पश्चात् भैरूनाथ अखाडे के महंत गंगानाथ महाराज के हाथों कार्य शुरू किया गया। इस अवसर पर जिला कलेक्टर,वन विभाग के अधिकारी भी उपस्थित थे, तब कोई तकनीकी खामी नजर नहीं आयी। सरकार बदल गई, भाजपा की सरकार बनते ही उनकी आंख में ये ऐतिहासिक विकास कार्य खटकने लगा, तो उसी वन विभाग के अधिकारी से इसमें रोड़ा अटकाने का नाटक करवाया गया और काम रुकवा दिया गया, जिसकी उपस्थिति एवं प्रस्ताव से ये सड़क स्वीकृत हुई, दो साल काम रुका रहा है। शायद सड़क निर्माण की लागत भी बढ़ गई होगी। जैसे ही भाजपा सरकार आने के बाद जालोर के मेडीकल कॉलेज को भी सभी प्रक्रियाएं पूरी होने के बाद भी रोक दिया गया। यहां तक कि शिलान्यास पट्टिकाओं को भी तोड़ दिया गया है।

तीन आरोपी गिरफ्तार

टोंक, (निसं)। थानाधिकारी कोतवाली के नेतृत्व में गठित विशेष टीम द्वारा कोतवाली थाना क्षेत्र के गाड़ियों के अड्डा इलाके में हुये जानलेवा हमले के मामले में तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। साथ ही उनके कब्जे से लोहे का सरिया व एक धारदार हथियार भी बरामद किया गया है। कोतवाली थानाधिकारी ने बताया कि 23 सितम्बर को परिवादी अब्दुल अजीज को आरोपियों ने फोन करके गाड़िये के अड्डे पर बुलाया और उस पर हथियार व सरिये लकड़ीयों से वार कर दिया। घटना में उसे और उसके भाई को गम्भीर चोटे आई।

एमडीएसयू में क्रिकेट विवाद पर बवाल

प्रदर्शनकारियों और सिविल लाइंस थाना पुलिस के झड़प भी हुई

- छात्रसंघ अध्यक्ष ने कुलगुरु पर तानाशाही रवैये का आरोप लगाया

अजमेर, (निसं)। महर्षि दयानंद सरस्वती वि.वि. (एमडीएसयू) में अंतर महाविद्यालय क्रिकेट प्रतियोगिता को लेकर विवाद गरमा गया। छात्रसंघ अध्यक्ष महिपाल गोदारा के नेतृत्व में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने सोमवार को विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार पर प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों और सिविल लाइंस थाना पुलिस के बीच हल्की झड़प भी हुई। पुलिस ने छात्रों को मुख्य द्वार पर ही रोक दिया गया।

विश्वविद्यालय की अंतर महाविद्यालय क्रिकेट प्रतियोगिता सोमवार से शुरू हुई। इस प्रतियोगिता में दर्जनों कॉलेज भाग ले रहे हैं। गोदारा ने कुलगुरु प्रो. सुरेश अग्रवाल पर तानाशाही रवैये का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि क्रिकेट प्रतियोगिता से ठीक पहले आर्यन कॉलेज को बाहर करना खिलाड़ियों के भविष्य से खिलवाड़ है। उन्होंने बताया कि छात्रों का प्रतिनिधि मंडल शनिवार को कुलगुरु से मुलाकात के लिए गया था, लेकिन अग्रवाल बिना छात्रों से मिले पिछले दरवाजे से निकल गए। गोदारा ने कहा कि 2024 में भी एक छात्र के नौकरी करने के मामले में आर्यन कॉलेज को प्रतियोगिता से बाहर किया गया था। इस बार 2025 में कुलगुरु की अनुशंसा पर कॉलेज को दो साल के लिए निलंबित कर दिया गया है। उन्होंने चेतावनी दी कि अगर फैसला वापस नहीं लिया गया तो आंदोलन तेज किया जाएगा। विश्वविद्यालय परिसर में प्रदर्शन के दौरान छात्रों ने कुलगुरु के खिलाफ नारेबाजी की और निर्णय को छात्र विरोधी बताया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के इस कदम से दर्जनों प्रतिभाशाली खिलाड़ियों का भविष्य अधर में लटक गया है।

सहायक प्रशासनिक अधिकारी रिश्वत लेते गिरफ्तार

सरदारशहर, (निसं)। भ्रष्टाचार के खिलाफ एसीबी टीम ने बड़ी कार्रवाई करते हुए तहसील कार्यालय में सहायक प्रशासनिक अधिकारी निर्मल सोनी को 90 हजार रुपये की रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। झुंझुनू एसीबी के डीएसपी शब्बीर खान ने बताया कि एसीबी मुख्यालय जयपुर के निर्देश पर एसीबी चौकी झुंझुनूं इकाई ने इस ट्रैप कार्रवाई को अंजाम दिया है। परिवादी अंजनी सोनी ने एसीबी में शिकायत दी थी कि उन्होंने तहसील कार्यालय सरदारशहर में कृषि भूमि के कन्वर्जन के लिए आवेदन किया था। इस दौरान तहसीलदार और सहायक प्रशासनिक अधिकारी निर्मल सोनी ने कन्वर्जन करवाने के एवज में एक लाख रुपये रिश्वत की मांग की। जिस पर झुंझनूं एसीबी टीम द्वारा 25 अक्टूबर को सत्यापन करवाया गया। निर्मल सोनी ने परिवादी अंजनी सोनी को अपने घर पर बुलाकर बात की थी। निर्मल सोनी ने कन्वर्जन फीस के अलावा 90 हजार रुपये की डिमांड की थी। सत्यापन करवाने के बाद सोमवार को टीम ने तहसील कार्यालय के सहायक प्रशासनिक अधिकारी निर्मल सोनी को 90 हजार रुपए की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। निर्मल सोनी ने परिवादी से राशि लेकर अपनी पेंट की जेब में रखी थी जो टीम द्वारा निर्मल सोनी की जेब से बरामद की है। शब्बीर खान ने बताया कि तहसीलदार की भूमिका के बारे में जब निर्मल सोनी से पूछताछ की गई तो कोई स्पष्ट जवाब नहीं दिया जा रहा है। निर्मल सोनी का कहना है कि यह पैसे मेरे द्वारा उधार लिए गए हैं। उन्होंने कहा कि मामले को लेकर अनुसंधान जारी है। अनुसंधान में पूरा मामला स्पष्ट हो पाएगा।

अंतर्राष्ट्रीय पुष्कर पशु मेला परवान पर, पशुपालकों के साथ हजारों की तादात में अश्व और ऊँट पहुंचे

पुष्कर मेले में विभिन्न प्रकार की नस्लों के घोड़े पहुंचे।

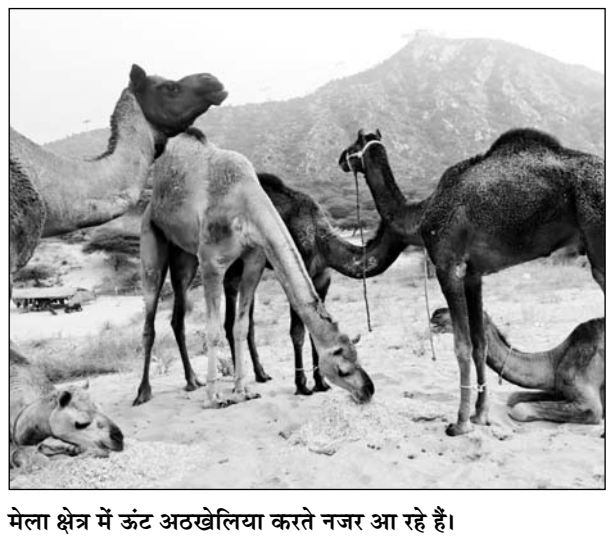

मेला क्षेत्र में ऊंट अठखेलिया करते नजर आ रहे हैं।

रेतीले धोरों में विदेशी पर्यटक भ्रमण करके आनंद ले रहे हैं।

- 68 इंच ऊँचाई वाला बादल और साढ़े 65 ऊँचाई वाला शहबाज घोड़ा मेले की रौनक बढ़ा रहा है
- अब तक हजारों के तादाद में विदेशी पर्यटक पुष्कर मेला देखने के लिए पहुंच चुके हैं

पुष्कर, (निसं)। अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पुष्कर पशु मेला पूरे परवान पर है। मेला मैदान के रेतीले धोरों में ऊंटों और घोड़ों की आवाजें गूंज रही है। अब तक 3100 घोड़े-घोड़ियां और 1300 ऊँट धोरों में पहुंच चुके हैं। वहीं मोथा तूफान की बारिश ने जानवरों, मेलार्थियों और पशुपालकों को ठिटुरा दिया है, वहीं सर्दी बढ़ गयी है। पुष्कर मेला क्षेत्र में खुले आसमान के नीचे ऊंट अठखेलिया करते नजर आ रहे हैं। वहीं अब तक हजारों के तादाद में विदेशी पर्यटक पुष्कर मेला देखने के लिए पहुंच चुके हैं।

मेले में हरियाणा, पंजाब व गुजरात समेत कई राज्यों से अश्व पालक अपने-अपने घोड़ों के साथ स्टेट फार्मों के टेंटो में घोड़ों का प्रदर्शन कर रहे हैं। बीते कुछ सालों से ऊंटों से खासा पहचान बनाने वाला पुष्कर पशु मेला अब घोड़ों के मेले में तब्दील हो गया है, जिसके चलते पुष्कर पशु मेले में करोड़ों के नामी अश्व घोड़े खरीद फरोख्त समेत प्रदर्शन के लिए डेरे जमा रखे हैं। इसी बीच मेले में 68 इंच ऊँचाई वाला 5 साल का बादल और साढ़े 65 ऊँचाई वाला काले रंग का शहबाज घोड़ा जिसकी कीमत 15 करोड़ से ज्यादा है, वहीं मारवाड़ी नस्ल का हर्ष नाम का घोड़ा मेले की रौनक बढ़ा रहा है। घोड़ों और 800 किलो का बुलबुल भैसे को देखने के लिए बारिश में लोग पुष्कर मेले में पहुंचकर बादल, शाहबाज, हर्ष घोड़े समेत बुलबुल भैसे को निहार रहे हैं। केकड़ी के अश्व पालक राहुल जैतवाल अपने सफेद रंग के घोड़े-घोड़ियों के साथ मेले में पहुंचे हैं, जिसमे सबसे खास है पांच साल का बादल नाम का घोड़ा जो कि लगातार तीसरी बार पुष्कर मेले में आया है। राहुल ने बताया कि बादल बादल बॉलीवुड की कई फिल्मों में काम कर चुका है। पुष्कर मेले के बाद बादल तीन महीने के लिए बैंगलूरु में शूटिंग के लिए जाएगा। वहीं लोगों का का कहना है कि अश्व पालक अपनी रेटिंग बढ़ाने के लिए खुद ही यूट्यूबर और पदेजीं पर रील बनाने वालों से घोड़ों की क़ीमत करोड़ों में बता रहे हैं। अब एक ट्रेड बन गया है।

पुष्कर पशु मेले में आए शाहबाज नाम के घोड़े के मालिक पंजाब में वीर स्टेट फॉर्म चलने वाले गेरी सिंह ने बताया साढ़े पांच साल का शाहबाज काले रंग नुगरा नस्ल का घोड़ा है। यह कंपलीट पैकेज है। सुंदरता और इसका भविष्य बहुत ही अच्छा है। यह खास तौर पर वीर स्टेट फॉर्म की शान बढ़ा रहा है। इसकी कीमत 9 करोड़ रुपए से ज्यादा लग चुकी है लेकिन 15 करोड़ रुपए से ज्यादा इसको बेचने की बात कही है।

मारवाड़ी नस्ल का हर्ष नाम का घोड़ा भी मेले की शान बढ़ा रहा है। हर्ष के मालिक यशोराज सिंह ने बताया कि हर्ष मारवाड़ी घोड़ा है इसकी ब्रीडिंग बहुत ही अच्छी और आकर्षित है। इसका भविष्य बहुत ही सुंदर है। इसी सुंदरता के चलते इसे खूब निहारने के लिए लोग पुष्कर मेले में पहुंच रहे हैं।

विदेशी में मेला देखने पहुंच रहे हैं धोरो में : -पुष्कर मेले में रेतीले धोरों में विदेशी पर्यटक भ्रमण करके खूब आनंद ले रहे हैं। यही नहीं विदेशी पर्यटक राजस्थानी वेशभूषा पहनकर अश्व पालक और ऊंट पालकों से बातचीत कर रहे हैं। फ्रांस से पुष्कर घूमने आए केवीन ने बताया कि उन्हें भारत और राजस्थान बहुत सुंदर लगता है और यहां की वेशभूषा की तो बात ही अलग है।

विवाह सम्मेलन में 154 जोड़े बने हमसफर

सरवाड़, (निसं)। शहर में देशवालियान समाज के तत्वावधान में रविवार को 12 वें सामूहिक विवाह सम्मेलन में 154 जोड़े हमसफर बने। कार्यक्रम शहर के किले के चौक स्थित मोहम्मादिया पब्लिक विद्यालय व दारुल उलूम के मैदान में जोड़ों की आमद शुरू की गई। वहीं सुबह सामूहिक निकाह की रस्म अदा की गई।

जौहर की नमाज के बाद सभी जोड़ों को विदाई दी गई। इस दौरान बाहर से आने वाले जोड़ों के लिए आवास व पेयजल आपूर्ति एवम् सुरक्षा भोजन आदि सभी प्रकार की व्यवस्थाएं माकूल इंतजाम किए गए। इस मौके पर क्षेत्रीय विधायक शत्रुघ्न गौतम ने शिरकत की। गौतम का माला व साफा बंधवाकर स्वागत किया गया। इस अवसर पर गौतम ने संबोधित भी किया और जोड़ों को आशीर्वाद दिया।

अपनी टीम से सलाह लेने और शानदार डॉ. पारदीवाला के मार्गदर्शन के बाद, उन्हें लगा कि 2025 में होने वाले सभी शेष बीडब्ल्यूएफ टूर स्पर्धाओं से नाम वापस लेना उनके लिए सबसे अच्छा होगा। - **पीवी सिंधु**

भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी, इस वर्ष होने वाले टूर्नामेंट से नाम वापस लेने का फैसला लिया।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

पार्थिव पटेल

पूर्व भारतीय क्रिकेटर और इंडियन प्रीमियर लीग फ्रेंचाइजी गुजरात टाइटन्स के सहायक कोच पार्थिव पटेल ने बेंगलुरु की एक स्टार्टअप कंपनी स्पोर्ट्जएंगेज टेक्नॉलोजी में निवेश किया है। पार्थिव पटेल अपनी क्रिकेट विशेषज्ञता का उपयोग सक्रिय रूप से स्पोर्ट्जएंगेज टीम के साथ करेंगे और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल करके खेल की बेहतरी के उपाय सुझायेंगे। पार्थिव पटेल ने कहा, कोच के रूप में मैंने स्वयं ये देखा है कि आंकड़े और तकनीक कैसे प्रदर्शन में सुधार कर सकते हैं। इसके जरिये कैसे प्रशिक्षण सत्रों के जरिये मैच की तैयारी बेहतर तरीके से की जा सकती है।

क्या आप जानते हैं ?... कप्तान के रूप में भारत के एमएस धोनी ने 13 टी-20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में से 9 जीते हैं।

पृथ्वी शॉ ने जड़ा रणजी ट्रॉफी का दूसरा सबसे तेज दोहरा शतक

चंड़ीगढ़ 27 अक्टूबर। राष्ट्रीय टीम में वापसी के प्रयास में लगे युवा भारतीय बल्लेबाज पृथ्वी शॉ ने सोमवार को चंडीगढ़ के खिलाफ रणजी ट्रॉफी मैच में धुआंधार बल्लेबाजी का प्रदर्शन करते हुए टूर्नामेंट का दूसरा सबसे तेज दोहरा शतक जड़ने का कारनामा किया हैं। पहली पारी में आठ रन बनाकर आउट हुये शॉ ने अपने अंदाज में बल्लेबाजी करते हुए चंडीगढ़ के गेंदबाजों पर शुरुआत से ही आक्रामक रूख अख्तियार किया और अपनी पहली 55 गेंदों में 13 चौकों की मदद से 80 रन बना लिए थे। इसके बाद उन्होंने और तेजी से बटोरते हुए केवल 72 गेंद में अपना शतक पूरा किया। 17 चौकों की मदद से महाराष्ट्र के लिए उन्होंने

अपना पहला शतक जड़ा। इसके बाद भी शॉ ने आक्रामक बल्लेबाजी करते हुए 141 गेंदों में अपना दोहरा शतक पूरा किया था जो रणजी ट्रॉफी में प्लेट ग्रुप के मैचों को छोड़ दिया जाए तो दूसरा सबसे तेज दोहरा शतक है। इससे पहले रवि शास्त्री ने केवल 123 गेंद में दोहरा शतक लगाया है। 200 से कम गेंदों में प्रथम श्रेणी क्रिकेट में दो दोहरा शतक लगाने वाले शॉ केवल दूसरे भारतीय बल्लेबाज बन गये हैं। वीरेंद्र सहवाग ने सबसे अधिक तीन बार भारत के लिए यह कारनामा किया है। शॉ 156 गेंदों में 29 चौके और पांच छक्कों की मदद से 222 रन बनाये। उन्हें 51वें ओवर में अर्जुन आजाद ने आउट किया।

लक्ष्य सेन और किदांबी श्रीकांत हाइलो ओपन में करेंगे भारतीय चुनौती की अगुवाई

सारब्रुकन (जर्मनी), 27 अक्टूबर। स्टार बैडमिंटन खिलाड़ी लक्ष्य सेन और किदांबी श्रीकांत मंगलवार से सारब्रुकन में सारलैंडहाले में शुरू होने वाले हाइलो ओपन 2025 बैडमिंटन टूर्नामेंट में भारत की चुनौती की अगुवाई करेंगे। टूर्नामेंट के पहले राउंड में लक्ष्य पांचवीं सीड और डिफेंडिंग चैंपियन फ्रांस के क्रिस्टो पोपोव से भिड़ेंगे। 24 साल के भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी किदांबी श्रीकांत भी पुरुष एकल ड्रॉ में शामिल होंगे। किदांबी श्रीकांत, जो मई में मलेशिया मास्टर्स में क्वालीफायर से टूर्नामेंट शुरू करने के बाद रनर-अप रहे थे, पहले राउंड में किरण जॉर्ज से भिड़ेंगे। इस साल बीडब्लयूएफ वर्ल्ड टूर खिताब जीतने वाले एकमात्र भारतीय यूएस ओपन चैंपियन आयुष शेट्टी भी टूर्नामेंट में पुरुष एकल ड्रॉ का हिस्सा हैं। भारत की पृथ्वी कृष्णमूर्ति रॉय और साई प्रतीक की जोड़ी पुरुष युगल मुकाबले में खेलेंगी।

श्रेयस अय्यर की पसलियों में चोट, सिडनी के अस्पताल में भर्ती

सिडनी, 27 अक्टूबर। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीसरे एकदिवसीय मैच के दौरान पसलियों में चोट लगने के बाद भारतीय बल्लेबाज श्रेयस अय्यर को सिडनी के एक अस्पताल की सघन चिकित्सा इकाई (आईसीयू) में भर्ती कराया गया है।

सोमवार सुबह भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने एक्स पर जारी एक बयान कहा, श्रेयस अय्यर को 25 अक्तूबर को सिडनी में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीसरे एकदिवसीय मैच के दौरान क्षेत्ररक्षण के दौरान बाईं पसलियों के पास चोट लगी थी। इसके बाद उन्हें आगे की जांच के लिए अस्पताल ले जाया गया।

उन्होंने कहा, स्कैन में पता चला है कि अय्यर की प्लीहा में लकीरनुमा चोट आई है। उनका इलाज जारी है और वह धीरे-धीरे ठीक

हो रहे हैं। बीसीसीआई का चिकित्सक दल सिडनी और भारत के विशेषज्ञ चिकित्सकों के साथ मिलकर अय्यर की चोट पर लगातार नजर रखे हुए है। भारतीय टीम के डॉक्टर सिडनी में ही रहेंगे ताकि श्रेयस की रोजाना की स्थिति का मूल्यांकन कर सकें।

अय्यर को यह चोट क्षेत्ररक्षण के दौरान उस समय लगी, जब उन्होंने एलेक्स कैरी को आउट करने के लिए पीछे की ओर डाइव लगाकर एक शानदार कैच लेने का प्रयास किया। इस दौरान नीचे गिरने से उनकी बाईं पसली के नीचे गंभीर चोट लग गई।

चोटिल प्रतिका रावल महिला विश्व कप से हुई बाहर

नवीं मुम्बई, 27 अक्टूबर। सेमीफाइनल से पहले भारतीय महिला टीम को लगा झटका, सलामी बल्लेबाज प्रतिका रावल टूर्नामेंट के आखिरी लीग मैच में बंगलादेश के खिलाफ चोटिल होने के बाद महिला विश्व कप 2025 से बाहर हो गई हैं। नवी मुंबई के डीवाई पाटिल स्टेडियम में रविवार को बारिश से प्रभावित मैच में बाउंड्री रोप के पास क्षेत्ररक्षण करते समय रावल फिसल कर गिरने के बाद चोटिल हो गईं थी। उन्हें टीम के सपोर्ट स्टाफ की मैदान से बाहर ले जाया गया था। मैच रद्द होने के बाद 25 वर्षीय का रावल का स्कैन हुआ था। गुरुवार को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सेमीफाइनल मुकाबले से पहले भारत के लिए यह एक बड़ा झटका है। रावल ने दिसंबर 2024 में भारतीय टीम में पर्दापण किया था। उन्होंने पिछले मैच में न्यूजीलैंड के खिलाफ उसी जगह पर अपना पहला वर्ल्ड कप शतक बनाया था। इस दौरान, वह महिला वनडे में 1000 रन बनाने वाली संयुक्त रूप से सबसे तेज़ खिलाड़ी भी बन गईं और एक कैलेंडर वर्ष में 1000 रन बनाने वाली दूसरी खिलाड़ी बनने की कगार पर थीं।

आरसीए एडहॉक कमेटी कन्वीनर ने पिंकेश और आशीष को प्राथमिकी दर्ज करने के लिए अधिकृत किया

जयपुर, 27 अक्टूबर। डीडी कुमावत, संयोजक, तदर्थ समिति आरसीए ने बताया कि मेरे संज्ञान में आया है कि हाल ही में हुई एक घटना के संबंध में एक प्राथमिकी दर्ज की जा रही है, जिसमें एक फर्जी ईमेल आईडी और आरसीए लेटरहेड का अनधिकृत उपयोग शामिल है। मैं इस कार्रवाई का पूर्ण समर्थन करता हूँ और इस मामले में एडहॉक कमेटी सदस्यों के साथ हूँ। कुमावत ने कहा कि उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए पिंकेश पोरवाल ओर आशीष तिवारीको प्राथमिकी दर्ज करने और उस पर अनुवर्ती कार्रवाई करने के लिए अधिकृत किया गया है।

जयपुर जिला टेबल टेनिस संघ के खिलाड़ी आरना व आरव साहनी ने जीते स्वर्ण पदक

जयपुर, 27 अक्टूबर। हाल ही में नोएडा में संपन्न हुई आई एस एस ओ स्कूल टेबल टेनिस स्पर्धा में जयपुर की आरना साहनी ने सिंगल्स में स्वर्ण पदक जीते अपना परचम लहराया वही उनके भाई आरव साहनी ने टीम चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीता परंतु सिंगल्स में उन्हें कासय पदक से संतोष करना पड़ा। आरना और आरव साहनी अपने आयु वर्ग में राजस्थान में प्रथम रैंक पर भी है। आने वाली इंटरनेशनल स्कूल प्रतियोगिता में आरना साहनी का चयन भारत से हुआ है जो वर्ल्ड स्कूल गेम्स में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगी

राजस्थान वुशू टीम श्रीनगर के लिए रवाना हुई

जयपुर, 27 अक्टूबर। स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ़ इंडिया के तत्वावधान में 28 अक्टूबर से 1 नवंबर 2025 तक श्रीनगर, जम्मू कश्मीर में आयोजित होने वाली 69वी स्कूल नेशनल अंडर-17 (बालक/बालिका) वुशू प्रतियोगिता में भाग लेने वाली राजस्थान वुशू टीम श्रीनगर के लिए रवाना हुई। हीरानंद कटारिया अध्यक्ष, राजस्थान वुशू संघ ने बताया कि दल प्रभारी कमलेश कुमार व कोच ललित कुमार के नेतृत्व में टीम भाग लेंगी। अध्यक्ष के अनुसार प्रतियोगिता में भाग लेने वाली टीम इस प्रकार है:- **बालिका वर्ग :-** 45 किलोग्राम भारवर्ग में गायत्री पुनिया, 48 किलोग्राम भारवर्ग में किस्मत, 52 किलोग्राम भारवर्ग में इशिता चौधरी, 56 किलोग्राम भारवर्ग में नोजल, 60 किलोग्राम भारवर्ग में हिमानी, 65 किलोग्राम भारवर्ग अलमास, 70 किलोग्राम भार वर्ग रिया मिश्रा। टीम कोच बिंदु बाला टीम मैनेजर शबाना। **बालक वर्ग :-** 45 किलोग्राम भारवर्ग में खुशदीप, 48 किलोग्राम भारवर्ग में लक्षित, 52 किलोग्राम भारवर्ग में देवांश, 56 किलोग्राम भारवर्ग में मनीष, 60 किलोग्राम भारवर्ग में आदित्य सिंह राजपुरोहित, 65 किलोग्राम भारवर्ग में रेवत राम, 70 किलोग्राम भारवर्ग में मानवेंद्र सिंह, 75 किलोग्राम भारवर्ग में अंशुमन, 80 किलोग्राम भारवर्ग में प्रिंस शर्मा, टीम कोच ललित कुमार, टीम मैनेजर राम अवतार को बनाया गया है।

राजस्थान-जम्मू एंड कश्मीर रणजी मैच

रणजी ट्रॉफी में जम्मू कश्मीर के आकिब नबी ने मैच में 10 विकेट लेकर राजस्थान के खिलाफ टीम को जीत दिलाई

जयपुर, 27 अक्टूबर। रणजी ट्रॉफी में जम्मू कश्मीर के आकिब नबी ने मैच में 10 विकेट लेकर राजस्थान के खिलाफ टीम को जीत दिला दी। वहीं महाराष्ट्र के पृथ्वी शॉ ने चंडीगढ़ के खिलाफ दोहरा शतक लगा दिया। सर्विसेज ने इतिहास रचते हुए एलिट ग्रुप- के मैच में असम को 8 विकेट से हरा दिया। यह रणजी इतिहास में ओवर के मामले में सबसे छोटा मैच रहा।

आकिब नबी के 10 विकेट से जीता जम्मू-कश्मीर आकिब नबी ने राजस्थान के खिलाफ 10 विकेट लेकर जम्मू कश्मीर को पारी और 41 रन से जीत दिला दी। श्रीनगर में खेले जा रहे मैच में राजस्थान ने पहली इनिंग में 152 रन बनाए। टीम से कोई भी प्लेयर फिफ्टी तक नहीं लगा सका। कप्तान महिपाल

लोमरोर ने नाबाद 37 रन बनाए। जम्मू-कश्मीर ने अपनी पहली पारी में 282 रन बनाए। टीम से अब्दुल समद और आकिब नबी ने फिफ्टी लगाई। समद 76 और नबी ने 55 रन की पारी खेली। युद्धवीर सिंह ने तेजी से 37 बॉल पर 53 रन बनाए। राजस्थान से दीपक चाहर ने 4 विकेट चटकाए। पहली पारी में 130 रन से पिछड़ने के बाद राजस्थान को दूसरी पारी मात्र 89 रन पर सिमट गई। दीपक हुड्डा ने सबसे ज्यादा 28 रन बनाए। जम्मू-कश्मीर से आकिब नबी ने दूसरी पारी में 7 विकेट लिए।

राजस्थान - हैदराबाद अंडर 23 सी केनायडू ट्रॉफी मैच (दूसरे दिन)।

हैदराबाद पहली पारी 361 आल आउट। टीम के लिए मयंक गुप्ता 49, नितिन यादव 51 रन। राजस्थान के गेंदबाज गणेश सुथार 46/3, मोहित चांगरा 78/4, चेतन शर्म, दीपेंद्र, अनिरुद्ध सिंह 1-1 विकेट। राजस्थान पहली पारी बारिश के कारण दूसरे दिन का खेल रोके जाने तक टीम ने 2 विकेट पर नुकसान पर 12 रन बना लिए थे।

वेस्टइंडीज ने बांग्लादेश को 19 रनों से हराया

चटगांव, 27 अक्टूबर। कप्तान शाई होप (नाबाद 46) और रोवमन पॉवेल (नाबाद 44) के बाद जेडेन सील्ड और जेसन होल्डर (तीन-तीन विकेट) की बेहतरीन गेंदबाजी के दम पर वेस्टइंडीज ने सोमवार को पहले टी-20 मुकाबले में बंगलादेश को 16 रनों से हरा दिया। इसी के साथ वेस्टइंडीज ने तीन मैचों की सीरीज में 1-0 से बढ़त बना ली है। 166 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी बंगलादेश को शुरुआत अच्छी नही रही और 57 के स्कोर तक अपने पांच विकेट गंवा दिये थे। इसके बाद भी वेस्टइंडीज के गेंदबाजी आक्रमण के बंगलादेश का कोई भी बल्लेबाज अधिक देर तक नहीं टिक सका और उसकी पूरी टीम 19.4 ओवर में 149 के स्कोर पर सिमट गई। बंगलादेश के लिए तनजीम हसन साकिब ने सर्वाधिक 33 रन बनाये। मो तौहिद हृदोय (28), नासुम अहमद (20), तंजिद हसन (15), तसकीन अहमद (10) दहाई अंक तक पहुंचने वाले बल्लेबाजों में शामिल थे। इसके अलावा मुस्तफिजुर रहमान 11 रन बनाकर नाबाद रहे।

चोट से उबर चुके टेम्बा बावुमा भारत के खिलाफ टेस्ट सीरीज के लिए दक्षिण अफ्रीका की टीम में शामिल

प्रिटोरिया, 27 अक्टूबर। टेम्बा बावुमा पिंडली की चोट से ठीक होने के बाद अगले महीने भारत के खिलाफ दो मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए दक्षिण अफ्रीका की टेस्ट टीम में बतौर कप्तान शामिल किया गया हैं। बावुमा सितंबर में इंग्लैंड में चोट लगने के कारण

पाकिस्तान के खिलाफ वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप टाइटल डिफेंस की शुरुआत में नहीं खेल पाए थे। वह इस हफ्ते पाकिस्तान में शुरू होने वाले किसी भी सफेद गेंद मैच में नहीं खेलेंगे, लेकिन टेस्ट टीम में शामिल होने से पहले बेंगलुरु में इंडिया ए के खिलाफ प्रथम श्रेणी मैच में दक्षिण अफ्रीका ए टीम का हिस्सा होंगे। दक्षिण अफ्रीका के चयनकर्ताओं ने पाकिस्तान में ड्रा सीरीज खेलने वाली टीम में एकमात्र बल्लेबाजी में बदलाव करते हुए बावुमा को टीम में शामिल किया गया है। उन्हें मध्यम क्रम के बल्लेबाज डेविड बेडिंगम की जगह टीम में जगह दी गई है। बेडिंगम ने दक्षिण अफ्रीका के लिए 15 टेस्ट खेले हैं और एक शतक और चार अर्धशतक बनाए हैं, लेकिन बुलावायो में जिम्बाब्वे के खिलाफ 82 रन बनाने से पहले, उन्होंने 12 पारियों में एक भी अर्धशतक नहीं बनाया था। टोनी डी जोंजी, ट्रिस्टन स्टब्स, डेवाल्ड ब्रेविस और ज़ुबैर हमजा सभी टीम में हैं। दक्षिण अफ्रीका ने पाकिस्तान के खिलाफ अच्छा प्रदर्शन करने वाले तीन स्पेशलिस्ट स्पिनरों केशव महाराज, साइमन हार्मर और सेनुरा मुथुसामी को टीम में बनाये रखा है। कगिसो रबाडा, कॉर्बिन बॉश और मार्को जानसेन तेज गेंदबाजी की कमान संभालेंगे। दो मैचों की सीरीज 14 दिसंबर को कोलकाता में शुरू होगी। दूसरा टेस्ट 22 नवंबर से गुवाहाटी में खेला जाएगा। दक्षिण अफ्रीका भारत में तीन एकदिवसीय और पांच टी-20 मैच भी खेलेगा।

भारत टेस्ट के लिए दक्षिण अफ्रीका की टीम इस प्रकार है:' टेम्बा बावुमा (कप्तान), एडेन मार्कराम, रयान रिकेल्टन, ट्रिस्टन स्टब्स, काइल वेरिन, डेवाल्ड ब्रेविस, ज़ुबैर हमजा, टोनी डी जोंजी, कॉर्बिन बॉश, वियान मुल्डर, मार्को जानसेन, केशव महाराज, सेनुरा मुथुसामी, कगिसो रबाडा और साइमन हार्मर।

आरसीए में फर्जी ई-मेल विवाद गहराया

एडहॉक कमेटी के चार सदस्यों ने लिया जायजा, रिपोर्ट दर्ज कराएंगे, चयन समिति पर विवाद जारी

जयपुर, 27 अक्टूबर। राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन (आरसीए) में विवाद थमने का नाम नहीं ले रहा है। फर्जी ईमेल का मामला अब तूल पकडने लगा है। आरसीए की एडहॉक कमेटी के चार सदस्य पिंकेश जैन, धनंजय सिंह खींवसर, मोहित यादव और आशीष तिवाडी ने आज सोमवार को जायजा लिया। चारों सदस्यों ने आरसीए अकादमी भवन पहुंचकर फर्जी ईमेल और आरसीए के दस्तावेजों-कंप्यूटर से कथित छेडछाड के मामले का जायजा लिया। घटनाक्रम को लेकर इन सदस्यों ने पुलिस में एफआईआर दर्ज करवाने की बात भी कही है।

एडहॉक कमेटी के कन्वीनर कुमावत बोले : मामले की निष्पक्ष जांच हो

यदि सदस्य एफआईआर करवाना चाहते हैं तो वे उनके साथ हैं। उन्होंने पूरे मामले की निष्पक्ष जांच की मांग की। कुमावत ने कहा क्या पता जिनकी बात

आप कह रहे हैं, उन्हीं का मामला हो।

बीसीसीआई को भेजे ई-मेल में काले कारनामों का खुलासा करने का किया था दावा

कुछ समय पहले एक ईमेल आईडी से बीसीसीआई को ई-मेल भेजा गया था। इसमें काले कारनामों का खुलासा करने का दावा किया गया था। इस ईमेल ने आरसीए प्रशासन और एडहॉक कमेटी में खलबली मचा दी थी। इसके बाद संदिग्ध कंप्यूटर को कॉन्फ्रेंस हॉल में रखवाया गया और ऑफिस सील कर दिया गया था। हालांकि बाद में ऑफिस खुलने पर पता चला कि कंप्यूटर को नुकसान पहुंचाने का प्रयास किया गया था। एडहॉक कमेटी के सदस्य आशीष तिवाडी ने बताया कि दीपावली के चलते सदस्य अपने-अपने गांव गए हुए थे।

चयन प्रक्रिया-सलेक्शन कमेटियों पर दोनों गुट आमने-सामने

इस बीच टीम की चयन प्रक्रिया और सलेक्शन कमेटियों को लेकर दोनों गुट आमने-सामने हैं। धनंजय गुट की ओर से डीडी कुमावत पर मीटिंग न बुलाने और मनमानी तरीके से आरसीए चलाने के आरोप लगाए गए हैं। इस पर कुमावत ने कहा कि वे हर जांच के लिए तैयार हैं, लेकिन जांच ऑफिस के अंदर का व्यक्ति नहीं करेगा। उन्होंने जोर देकर कहा कि वे क्रिकेट का नुकसान नहीं होने देंगे। इस घटना की जानकारी मिलने पर चारों सदस्य आरसीए कार्यालय आए। पूरे मामले का जायजा लिया। उन्होंने मांग की कि इस मामले की पुलिस से जांच करवाई जानी चाहिए।

एक संघर्षपूर्ण मुकाबले में राजस्थान ने उत्तराखंड को 1-0 से हराया

जयपुर, 27 अक्टूबर। सब-जूनियर बालक वर्ग राष्ट्रीय फुटबॉल प्रतियोगिता में आज राजस्थान का दूसरा मैच उत्तराखण्ड से खेला गया। कोच देवेन्द्र सिंह भाटी और अवकाश दायमा ने बताया की दोनों टीमों के बीच कांटे की टक्कर का मुकाबला रहा। दोनों टीमें ने लगातार गोल स्कोर करने के भरसक प्रयास किए परंतु मैच के मध्यांतर तक किसी भी टीम को गोल करने में सफलता प्राप्त नहीं हुई और मध्यांतर तक स्कोर 0-0 रहा। मैच के दूसरे हाफ में राजस्थान टीम ने अपने परंपरागत अंदाज में आक्रामक खेल का प्रदर्शन करते हुए गोल स्कोर के लिए आक्रमण और तेज कर दिए परंतु उत्तराखंड की रक्षापंक्ति ने राजस्थान टीम को मैच के 80 मिनट तक गोल करने का मौका नहीं दिया और अंततः मैच के 82 मिनट में राजस्थान टीम के जर्सी नंबर 18 अक्षित शर्मा ने जर्सी नंबर 11 में खेल रहे माधव चतुर्वेदी के लिए पास दिया और माधव चतुर्वेदी ने उत्तराखंड के गोलकीपर को छक्काते हुए बॉल को गोल पोस्ट में पहुंचा दिया। और राजस्थान को बढ़त दिलाते हुए स्कोर 1-0 कर दिया। और मैच समाप्ति तक राजस्थान टीम ने यह बढ़त बनाई रखी। राजस्थान के माधव चतुर्वेदी को आज के मैच का प्लेयर ऑफ द मैच दिया गया। सब जूनियर टूर्नामेंट लीग के फर्स्ट मैच में जम्मू कश्मीर और राजस्थान 4/4 से गोल से बराबर रहे थे अब लीग का आखिरी मैच तेलंगाना से 29 अक्टूबर को है।

कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने एशियन गोल्ड विजेता खिलाड़ियों को दिया आशीर्वाद और सफलता का मंत्र

जयपुर, 27 अक्टूबर। बहरीन में आयोजित 3 यूथ एशियन गेम्स में भारत की कबड्डी टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए गोल्ड मेडल अपने नाम किया। इस स्वर्णिम उपलब्धि में राजस्थान के पाँच खिलाड़ियों ने अहम भूमिका निभाई, जिन्होंने अपनी मेहनत, लगन और खेल भावना से देश का गौरव बढ़ाया।राजस्थान के इन युवा चैंपियनों को राज्य के खेल मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ (से.नि.) ने विशेष रूप से आमंत्रित कर सम्मानित किया और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। उन्होंने खिलाड़ियों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आप सभी ने अपने समर्पण और संघर्ष से न केवल राजस्थान बल्कि पूरे भारत का मान बढ़ाया है। खेल के प्रति आपका यह जज़्बा आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्त्रोत रहेगा। बता दें कि भारत की गोल्ड मेडल विजेता टीम में राजस्थान के पाँच प्रतिभाशाली सचिन चौधरी (बालक वर्ग, सिरसी रोड जयपुर निवासी), कृष्णा (चूरू निवासी), लक्षिता गुर्जर (जयपुर निवासी), निकिता देवनंदा (राजावास चौमू निवासी) और अक्षिता देवनंदा (राजावास चौमू, जयपुर निवासी) थे। इन खिलाड़ियों ने मैदान पर अपने अद्भुत प्रदर्शन से भारत को स्वर्ण पदक दिलाया और राज्य का नाम पूरे एशिया में रोशन किया।

कर्नल राठौड़ ने खिलाड़ियों से की आत्मीय बातचीत - खेल मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने खिलाड़ियों से करीब 30 मिनट तक आत्मीय संवाद किया।उन्होंने उनके खेल जीवन, संघर्षों और मेहनत की यात्रा को विस्तार से जाना। मंत्री ने खिलाड़ियों को आगे भी निरंतर अभ्यास और अनुशासन बनाए रखने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि भारत को नई ऊँचाइयों पर ले जाने का बीड़ा अब आप जैसे युवा खिलाड़ियों के कंधों पर है।

राजस्थान के जंगजीत सिंह काजला ने भारत को कांस्य मेडल दिलाकर इतिहास रचा

अन्वी राठौड़ का शानदार प्रदर्शन

जयपुर, 27 अक्टूबर। चाईना के चेंडगू यूनिवर्सिटी कैम्पस में एषियन जूनियर बैडमिंटन चैम्पियनषिप 21 से 26 अक्टूबर तक आयोजित हुई, जिसमें मिश्रित युगल अंडर-17 में राजस्थान के जंगजीत सिंह काजला ने जे. रमेष के साथ भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए ब्रान्च मेडल हासिल किया।

जंगजीत सिंह काजला और जे. रमेष की जोड़ी ने अपना पहला मुकाबला जापान की आई मत्सुषिता एवं के मत्सुषिता की जोड़ी से 21-15, 21-17 से जीतकर अगले दौर में प्रवेष किया जहां उनका मुकाबला थाईलेण्ड की जोड़ी पी. लाओलापा एवं एन. बूनसुम्पुथ के साथ हुआ

जिसमें जंगजीत एवं जे. रमेष की जोड़ी ने अपना शानदार प्रदर्षन जारी रखते हुए 21-16, 21-17 से मुकाबला अपने नाम कर क्वार्टर फाईनल में प्रवेष किया। क्वार्टर फाईनल में जंगजीत एवं जे. रमेष की जोड़ी को चाईना की जोड़ी जेड. जोहू एवं पेंग जे ई के खिलाफ वॉकओवर मिला।

सेमीफाईनल मुकाबले में जंगजीत सिंह काजला और जे. रमेष की जोड़ी को चाईनीज ताईपाई (ताईवान) की जोड़ी आई. चेंग एवं वाई वेंग की जोड़ी से संघर्षपूर्ण मुकाबले में 21-17, 21-18, 21-16 से हार का सामना करना पड़ा।

वहीं अंडर-15 लड़कियों के एकल में राजस्थान की अन्वी राठौड़ ने भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए क्वार्टर फाईनल में चाईना की वाई. वाईआई से 21-17, 21-23, 19-21 में हार का सामने करते हुए शानदार खेल का प्रदर्षन किया। इस मौके पर राजस्थान बैडमिंटन संघ के अध्यक्ष एवं केन्द्रीय संस्कृति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने दोनों खिलाड़ीयों को बधाई दी।

राजस्थान राज्य सीनियर हैंडबॉल प्रतियोगिता आज से

कुल 74 टीमें लेगी भाग, पुरुष वर्ग में 104 एवं महिला वर्ग में 62 मैच खेले जायेंगे

जयपुर, 27 अक्टूबर। राजस्थान राज्य हैंडबॉल संघ के तत्वावधान में कृपा बाबा हैंडबॉल अकादमी-श्री महावीर द्वारा 48वी राजस्थान राज्य सीनियर हैंडबॉल प्रतियोगिता (पुरुष व महिला)-2025-26 का आयोजन 28 से 31 अक्टूबर तक श्रीमहावीर जी (करौली) में किया जा रहा है। इस प्रतियोगिता में 74 टीमे भाग ले रही है, जिसमें पुरुष वर्ग में 42 एवं महिला वर्ग में 32 टीमे है। इसमें 30 ज़िले, 11 अकादमिया एवं 1 डिपार्टमेंट राजस्थान पुलिस की टीमें भाग ले रही है।

राजस्थान राज्य हैंडबॉल संघ के मानद सचिव यश प्रताप सिंह ने बताया कि प्रतियोगिता लीग कम नॉक आउट कम सुपर लीग के आधार पर खेली जायेगी। प्रतियोगिता के लिये चार ग्राउंड तैयार किये गये है। जिसमें एक फ्लड लाइट ग्राउंड है। जिन पर पुरुष वर्ग में 104 एवं महिला वर्ग में 62 मैच खेले जायेंगे। प्रतियोगिता के दौरान ही आगामी राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के राज्य पुरुष एवं महिला टीमों के लिए 30-30 संभावितों का भी चयन राज्य हैंडबॉल संघ द्वारा गठित चयन समिति द्वारा किया जायेगा। राज्य हैंडबॉल संघ के अध्यक्ष ललित कुमार कलाल ने बताया कि प्रतियोगिता के सर्वश्रेष्ठ पुरुष एवं महिला खिलाड़ी को स्व. हनुमान सिंह स्मृति में राज्य हैंडबॉल संघ द्वारा नकद पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा।

पुरुष एवं महिला वर्ग की टीमों को 8-8 पूल में बाँटा गया है

पुरुष वर्ग:- पूल ए:- श्रीगंगानगर, सिरोही, आर पी भादू अकैडमी सूरतगढ़, उदयपुर एवं बाड़मेर। **पूल बी:-** राजस्थान पुलिस, ज्ञान ज्योति हैंडबॉल अकादमी, बीकानेर, बाँसवाड़ा एवं झुंझुनू। पूल सी:- अजमेर, जय भवानी हैंडबॉल अकादमी श्रीगंगानगर, महाराणा प्रताप हैंडबॉल अकादमी चितौड़गढ़, भोम सिंह हैंडबॉल अकादमी एवं सवाईमाधोपुर। **पूल डी:-** जयपुर, चुरू, टोंक, नागौर एवं दुलमाना हैंडबॉल अकादमी हनुमानगढ़। **पूल ई:-** इंस्पिरेशन अकैडमी जोधपुर, अकादमी जैसलमेर, सीकर, करौली एवं जालोर। **पूल एफ:-** बारां, डूंगरपुर, कृपा बाबा हैंडबॉल अकादमी करौली, माही हैंडबॉल अकादमी एवं कोटा। **पूल जी:-** बूँदी, चितौड़गढ़, राजसमंद, भीलवाड़ा, जोधपुर एवं जैसलमेर। **पूल एच :-** अलवर, हनुमानगढ़, जयपुर हैंडबॉल अकादमी, धौलपुर, दौसा एवं भरतपुर।

महिला वर्ग:-पूल ए:- जयपुर, जोधपुर, माही हैंडबॉल अकादमी एवं डूंगरपुर। **पूल बी:-** राजस्थान पुलिस, जैसलमेर, ज्ञान ज्योति हैंडबॉल अकादमी, बारां एवं भोम सिंह हैंडबॉल अकादमी। **पूल सी:-** श्रीगंगानगर, टोंक, बाँसवाड़ा एवं जालोर। **पूल डी:-** इंस्पिरेशन अकैडमी जोधपुर, चुरू, बीकानेर एवं सिरोही। **पूल ई:-** जय भवानी हैंडबॉल अकादमी श्रीगंगानगर, महाराणा प्रताप हैंडबॉल अकादमी चितौड़गढ़ करौली एवं भीलवाड़ा। **पूल एफ:-** हनुमानगढ़, अलवर, उदयपुर एवं कोटा। **पूल जी:-** अकादमी जयपुर, सवाई माधोपुर, अजमेर एवं नागौर। **पूल एच :-** कृपा बाबा हैंडबॉल अकादमी करौली, झुंझुनू एवं बाड़मेर।

भारत के अगले सीजेआई होंगे, जस्टिस सूर्यकांत

सीजेआई गवई ने जस्टिस सूर्यकांत से मुलाकात कर अपना रिकमंडेशन लैटर सौंपा

- **जस्टिस गवई जो 24 नवम्बर को रिटायर हो रहे हैं, से केन्द्र सरकार ने अपने उत्तराधिकारी के नाम की अनुशंसा करने को कहा था।**
- **मूलतः हरियाणा के जस्टिस सूर्यकांत कई महत्वपूर्ण फैसलों का हिस्सा रहे हैं, जैसे धारा 370 हटाना, इलैक्टोरल बॉन्ड योजना को असंवैधानिक ठहराना, स्पायवेयर पैगसस केस और राजद्रोह कानून को रद्द करना आदि।**

-जाल खंबाता -
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 27 अक्टूबर। भारत के मुख्य न्यायाधीश बी.आर. गवई, जो 24 नवंबर को सेवानिवृत्त हो रहे हैं, ने सोमवार को सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठतम न्यायाधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांत को भारत के 53वें मुख्य न्यायाधीश के पद पर अपने उत्तराधिकारी के रूप में सिफारिश की।

सरकार ने पिछले सप्ताह मुख्य न्यायाधीश गवई को एक पत्र लिखकर उनके उत्तराधिकारी के रूप में किसी नाम की सिफारिश करने को कहा था। हालांकि, मुख्य न्यायाधीश गवई इस समय भूटान दौरे पर थे। गवई ने अपने वापसी के तुरंत बाद सोमवार (27 अक्टूबर, 2025 को सिफारिश) को सिफारिश पत्र के साथ न्यायमूर्ति सूर्यकांत से मुलाकात की, यह दिन दिवाली की छुट्टियों के बाद सुप्रीम कोर्ट का पहला कार्य दिवस था।

न्यायमूर्ति सूर्यकांत सुप्रीम कोर्ट के कई महत्वपूर्ण फैसलो का हिस्सा रहे है, जिनमें संविधान के अनुच्छेद 370 का निरस्त करना, जिसने जम्मू और कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा दिया था, शामिल है। न्यायमूर्ति सूर्यकांत उस बैंच का भी हिस्सा थे, जिसने चुनावी बॉन्ड योजना को असंवैधानिक ठहराया था। वह पेगासस स्पाइवेयर मामले और देशद्रोह कानून के निलंबन वाली बैंच का भी हिस्सा थे।

न्यायमूर्ति सूर्यकांत का जन्म 10 फरवरी 1962 को हरियाणा के हिसार में हुआ था। अपने गृह नगर से स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के बाद, न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने 1984 में महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक से कानून में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने अपनी कानूनी प्रैक्टिस की शुरुआत हिसार जिला अदालत से की और 1985 में पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय में वकालत शुरु करने के लिए चंडीगढ़ चले गए।

वह 7 जुलाई, 2000 को हरियाणा के सबसे कम उम्र के महाधिवक्ता बने और मार्च 2001 में वरिष्ठ अधिवक्ता के रूप में नामित किए गए। 9 जनवरी, 2004 को उन्हें पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय का न्यायाधीश बनाया गया। अक्टूबर 2018 में उन्हें हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया गया।

उन्हें 24 मई, 2019 को सुप्रीम कोर्ट का न्यायाधीश नियुक्त किया गया था। उनका कार्यकाल 9 फरवरी, 2027 तक रहेगा।

सितम्बर में 1.51 करोड़ उपभोक्ताओं ने किया मोबाइल नंबर बदलने का आवेदन

नयी दिल्ली, 27 अक्टूबर। मोबाइल नंबर पोर्टेबिलिटी (एमएनपी) के लिए सितंबर महीने में 1.51 करोड़ उपभोक्ताओं ने आवेदन किया।

संचार मंत्रालय द्वारा सोमवार को जारी आंकड़ों में बताया गया है कि कुल 1.51 करोड़ उपभोक्ताओं में से जोन-1 (उत्तर एवं पश्चिम भारत) के 84.5 लाख और जोन-2 (दक्षिण एवं पूर्वी भारत) के 66.8 लाख उपभोक्ता शामिल हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश सर्किल से सबसे अधिक 20.8 लाख उपभोक्ताओं ने एमएनपी के लिए आवेदन किया। दूसरे स्थान पर 14.5 लाख के साथ पश्चिमी उत्तर प्रदेश सर्किल का स्थान रहा। सितंबर में ब्रॉडबैंड उपभोक्ताओं की संख्या अगस्त की तुलना में 0.61 प्रतिशत बढ़ कर 99.56 लाख पर पहुंच गयी। इसमें 93.89 लाख मोबाइल ब्रॉडबैंड सबस्क्राइबर थे। सबसे अधिक 50.55 लाख ब्रॉडबैंड सबस्क्राइबर रिलायंस जियो के थे। भारती एयरटेल 31.04 लाख के साथ दूसरे और वोडाफोन आइडिया 12.78 लाख के साथ तीसरे स्थान पर रहा। मंत्रालय के अनुसार, सितंबर में रिलायंस जियो के मोबाइल सबस्क्राइबर 0.68 प्रतिशत, बीएसएनएल के 0.57 प्रतिशत और भारती एयरटेल के 0.11 प्रतिशत बढ़े। वोडाफोन आइडिया के सबस्क्राइबरों की संख्या 0.37 प्रतिशत घट गयी।

दूसरे चरण की एसआईआर कवायद आज से शुरु

12 राज्यों व केन्द्र शासित प्रदेशों की नई मतदाता सूचियां बनेंगी

- **मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने आज प्रैस कॉन्फ्रैंस में एसआईआर प्रक्रिया की पूरी जानकारी दी और कहा अगर किसी मतदाता को दो जगह नाम होने पर दो फॉर्म मिल जाते हैं तो बेहतर होगा वह एक ही फॉर्म जमा करवाएं, वरना उसके कृत्य का अपराध माना जाएगा।**
- **दूसरे चरण में राजस्थान में भी एसआईआर प्रक्रिया शुरु होगी। इसके अलावा मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, केरल, प.बंगाल, तमिलनाडु, गोवा के साथ 4 केन्द्र शासित प्रदेशों में भी एसआईआर प्रक्रिया शुरु होगी।**

नयी दिल्ली, 27 अक्टूबर। चुनाव आयोग ने उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, केरल, तमिलनाडु, पुडुचेरी समेत 12 राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में मतदाता सूचियों के विशेष गहन पनरीक्षण अर्थात स्पेशल इन्टेंसिव रिविज़न (एसआईआर) का काम मंगलवार से शुरू करने की घोषणा की है जो सात फरवरी तक संपन्न कर लिया जायेगा।

मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने सोमवार को यहां एक विशेष संवाददाता सम्मेलन में एसआईआर के दूसरे चरण के कार्यक्रम की घोषणा करते हुए विश्वास जताया कि इस संवैधानिक कार्य में आयोग को सभी राज्यों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। ज्ञानेश कुमार के साथ चुनाव आयुक्त डॉ सुखबीर सिंह संधू और डॉ विवेक जोशी उपस्थित थे।

उन्होंने कहा कि जिन राज्यों में दूसरे चरण में एसआईआर कराया जाना है, उनमें अंडमान-निकोबार, चंडीगढ़ , गोवा, गुजरात, केरल, लक्षद्वीप, मध्यप्रदेश, पुडुचेरी, राजस्थान, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल शामिल हैं। इन राज्यों की मतदाता सूचियों में आज आधी रात के बाद तब तक कोई बदलाव नहीं किया जायेगा जब तक कि एसआईआर का काम संपन्न नहीं हो जाता। इसके साथ ही इस कार्य से जुड़े अधिकारियों-कर्मचारियों के तबादले आयोग की अनुमति से ही किये जा सकेंगे।

आयोग द्वारा जारी कार्यक्रम के अनुसार एसआईआर के दूसरे चरण में तीन नवंबर तक फार्मों की छपाई और कर्मचारियों का प्रशिक्षण होगा, चार नवंबर से चार दिसंबर तक बूथ स्तरीय अधिकारियों (बीएलओ), प्रशासन के वॉलंटियर और राजनीतिक दलों के एजेंटों के माध्यम से घर-घर जाकर छपे हुए निर्वाचक गणना फार्मों का वितरण और उन्हें वापस एकत्रकर मतदाता पंजीकरण अधिकारियों (ईआरओ) के पास जमा करवाने की प्रक्रिया चलेगी।

कार्यक्रम के अनुसार गणना फार्मों की प्राप्ति के आधार पर संबंधित राज्यों और केन्द्र शासित क्षेत्रों की नयी मतदाता सूची का मसौदा नौ दिसंबर को प्रकाशित कर दिया जायेगा और उसी दिन से आठ जनवरी 2026 तक उन पर दावे और आपत्तियां प्राप्त की जायेंगी। नौ से 31 जनवरी तक नोटिस और सत्यापन की प्रक्रिया पूरी की जायेगी और पक्की मतदाता सूची सात फरवरी को जारी कर दी जायेगी।

मुख्य निर्वाचन आयुक्त ने एसआईआर के पहले चरण में पूरे उत्साह से भाग लेने के लिए बिहार के साढ़े सात करोड़ मतदाताओं की पूर्ण भागीदारी को लेकर उनके प्रति आभार जताया। उन्होंने कहा कि बिहार की पक्की सूची पर दावे और आपत्तियां शून्य के बराबर हैं, जो दर्शाती हैं कि राज्य की मतदाता सूची अधिकतम रूप से शुद्ध है। उन्होंने इन राज्यों के मतदाताओं को कानून के अनुसार केवल एक ही मतदाता गणना फॉर्म जमा कराने की सलाह दी।

मुख्य चुनाव आयुक्त ने कहा कि बिहार की ही तरह एसआईआर के दूसरे चरण में भी 2002 से लेकर 2004 के बीच में करायी गयी पिछली एसआईआर के बाद तैयार सूचियों को मिलान का आधार बनाया जायेगा। इन राज्यों और क्षेत्रों की वर्तमान सूचियों के मिलान का कार्य इनके मुख्य निर्वाचन अधिकारियों (सीईओ) ने कर लिया है।

बिहार में एसआईआर के राजनीतिक विरोध के बारे में एक सवाल पर मुख्य चुनाव आयुक्त ने कहा कि वह ऐसा नहीं मानते कि वहां राजनीतिक दलों का विरोध था। राज्य में 12 राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय दलों के 1.06 लाख बूथ स्तरीय एजेंटों ने बूथ स्तरीय अधिकारियों के साथ बढ़ -चढ़ कर सहयोग किया। सभी जिला अध्यक्षों ने भी इस कार्य में पूरा सहयोग दिया और चुनाव से पहले आयोग के दौरे में इन दलों ने नेताओं ने एसआईआर की सराहना की।

'अगर ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

चुनाव प्रचार के लिए उतारा है, इस उम्मीद में कि उन्हें बड़ी सफलता मिलेगी। लेकिन मोदी की सत्ता के चरम पर भाजपा अपने किसी खास को मुख्यमंत्री नहीं बना पाई है।

लेकिन पार्टी उम्मीद में जी रही है!!!

रूस ने दुनिया की पहली न्यूक्लियर पावर्ड मिसाइल का सफल टैस्ट किया

मॉस्को, 27 अक्टूबर। रूस ने दुनिया की पहली न्यूक्लियर पावर्ड, यानी परमाणु ऊर्जा से चलने वाली क्रूज मिसाइल बुरेवस्तनिक-9एम739 का सफल परीक्षण किया है। रूस ने दावा किया है कि यह मिसाइल अनलिमिटेड रेंज वाली है। राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने वीडियो कॉन्फ्रेंस के दौरान कहा कि इसके सभी टेस्ट पूरे हो चुके हैं। उन्होंने कहा कि ऐसी मिसाइल दुनिया के किसी भी देश के पास नहीं है। पहले कई एक्सपर्ट यकीन नहीं करते थे कि ऐसा हथियार भी बन सकता है, लेकिन यह हकीकत बन चुका है।

- **पुतिन ने कहा, इसकी अनलिमिटेड रेंज है, इसे कोई डिफेंस सिस्टम नहीं रोक सकता।**

रूसी सेना के प्रमुख वैलेरी गेरेसिमोव ने बताया कि मिसाइल का सफल टेस्ट 21 अक्टूबर को किया गया। इस टेस्ट में बुरेवस्तनिक ने करीब 15 घंटे तक उड़ान भरी। इस दौरान मिसाइल ने 14 हजार किलोमीटर की दूरी तय की। गेरेसिमोव ने यह भी बताया कि यह मिसाइल की अधिकतम रेंज नहीं है, यह इससे अधिक दूरी भी तय कर सकती है।

रूस ने ब्यूरेवस्तनिक को एक नाभिकीय-प्रेरित क्रूज़ मिसाइल के रूप में पेश किया है यानी इसमें एक छोटा परमाणु रिएक्टर भी रहेगा जो मिसाइल को अनवरत ऊर्जा देगा। जिससे उसकी रेंज सैद्धान्तिक तौर पर लगभग अनंत हो सकती है। अगर यह पूरी तरह से सच हुआ तो वाकई रूस दुनिया का पहला देश होगा, जिसके पास इतनी ताकतवर नाभिकीय-प्रेरित मिसाइल होगी।

आसियान सम्मेलन में रूबियो के अलावा कई नेताओं से भी मिले जयशंकर

- **इनमें न्यूज़ीलैंड, ऑस्ट्रेलिया, मलेशिया, वियतनाम आदि देशों के राष्ट्र प्रमुख शामिल थे**

नयी दिल्ली, 27 अक्टूबर। भारत-आसियान शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए कुआलालंपुर गए विदेश मंत्री डा.एस जयशंकर ने सोमवार को अमेरिकी विदेश मंत्री मार्क रूबियो और कई अन्य देशों के नेताओं के साथ मुलाकात की और द्विपक्षीय, क्षेत्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर चर्चा की। डा. जयशंकर ने इन नेताओं के साथ शिखर सम्मेलन से इतर मुलाकात की।

रूबियो से मिलने के बाद उन्होंने एक सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि उनके बीच द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर बात हुई। उन्होंने कहा , "आज सुबह कुआलालंपुर में मार्क रूबियो से मिलकर खुशी हुई। हमारे द्विपक्षीय संबंधों के साथ-साथ क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर हुई चर्चा की।"

विदेश मंत्री ने कहा कि उन्होंने न्यूज़ीलैंड के प्रधानमंत्री के साथ द्विपक्षीय सहयोग को आगे बढ़ाने और एक स्वतंत्र एवं खुले हिंद-प्रशांत क्षेत्र को विकसित करने के बारे में बात की। उन्होंने मलेशिया के विदेश मंत्री मोहम्मद हाजी हसन से भी मुलाकात की। द्विपक्षीय सहयोग में प्रगति पर चर्चा के साथ-साथ म्यांमार की स्थिति पर विचारों का आदान-प्रदान किया।

डा. जयशंकर आस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री एंथनी अल्बानीज़ से भी मिले। उन्होंने जापान के विदेश मंत्री मोटेगी तोशिमित्सु से मिलकर

द्विपक्षीय संबंधों पर व्यापक चर्चा की। दोनों के बीच सहयोग के अगले दशक के लिए संयुक्त दृष्टिकोण को लागू करने के बारे में मिलकर काम करने पर सहमति हुई। उन्होंने वैश्विक स्थिति और हिंद-प्रशांत सहयोग पर भी विचारों का आदान-प्रदान किया।

डा. जयशंकर ने वियतनाम के विदेश मंत्री ले होई ट्रुंग के साथ भी बैठक की। उन्होंने कहा कि इस दौरान रणनीतिक साझेदारी और द्विपक्षीय आर्थिक संबंध को और गहरा करने पर चर्चा हुई।

स्वदेशी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

क्षमता के साथ डिज़ाइन किया गया है, जो मानवीय सहायता और आपदा राहत (एचएडीआर) प्लेटफ़ॉर्म के रूप में और आपात स्थिति में अस्पताल जहाज के रूप में कार्य करने में सक्षम है।

इक्षक महिलाओं के लिए विशेष रूप से बनाये गये आवास की सुविधा वाला पहला एसवीएल जहाज भी है जो भविष्य के लिए तैयार बेड़े के प्रति भारतीय नौसेना के समावेशी और प्रगतिशील दृष्टिकोण को दर्शाता है।

राम मंदिर...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उन्होंने मंदिर निर्माण की प्रगति की जानकारी देश-दुनिया के भक्तों से सोशल मीडिया के जरिये साझा की। उन्होंने बताया कि 161 फीट ऊंचे राम मंदिर का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है। मंदिर का दूसरा तल पूरी तरह से बनकर तैयार है।

अब केवल फिनिशिंग का काम चल रहा है। अगले एक पखवाड़े के भीतर यह काम भी पूरा हो जाएगा। उन्होंने बताया है कि सप्त मंडप के सात मंदिरों (महर्षि वाल्मीकि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, अगस्त्य, निषाद राज, शबरी, ऋषि पत्नी अहिल्या) का निर्माण भी पूरा हो गया है। संत तुलसीदास का मंदिर भी पूरा हो गया है। गिद्ध राज जटायु और गिलहरी की मूर्ति भी परिसर में स्थापित हो गई है। ट्रस्ट महासचिव के अनुसार, दर्शनार्थियों की सुविधा और व्यवस्था से सीधे जुड़े सभी कार्य पूरे कर लिए गए हैं।

बताया कि, ध्वजारोहण समारोह के बाद परिसर के सभी मंदिरों में श्रद्धालुओं को दर्शन मिलने लगेंगे।

स्ट्रीट डॉग्स के केस में सुप्रीम कोर्ट ने कई राज्यों को फटकार लगाई

सुप्रीम कोर्ट ने प.बंगाल व तेलंगाना को छोड़कर सभी राज्यों के मुख्य सचिवों को तलब किया

- **इन सभी राज्यों को स्ट्रीट डॉग्स पर 22 अगस्त तक अनुपालना रिपोर्ट देनी थी।**

नई दिल्ली, 27 अक्टूबर। आवारा कुत्तों के मामले में सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने आज पश्चिम बंगाल और तेलंगाना को छोड़कर सभी राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों के मुख्य सचिवों को हलफनामा दाखिल न करने पर तलब किया।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि सिर्फ पश्चिम बंगाल, तेलंगाना और दिल्ली नगर निगम ने ही कंप्लायंस एफिडेविट फाइल किया है। अदालत ने पश्चिम बंगाल और तेलंगाना के अलावा, बाकी राज्यों और केन्द्र शासित राज्यों के चीफ सेक्रेटरी को 3 नवंबर को पेश होने का निर्देश दिया।(22 अगस्त को, कोर्ट ने राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों को कम्प्लायंस एफिडेविट फाइल करने का निर्देश दिया था। आज, जस्टिस विक्रम नाथ, जस्टिस संदीप मेहता और जस्टिस एनवी अंजारिया की बेंच ने नोट किया कि केवल पश्चिम बंगाल, तेलंगाना और दिल्ली नगर निगम ने ही कम्प्लायंस एफिडेविट फाइल किया है।

मामले पर नाराजगी जाहिर करते हुए जस्टिस विक्रम नाथ ने कहा कि कोर्ट ने सभी राज्यों और केन्द्र शासित राज्यों को नोटिस जारी किया था और आदेश की बड़े पैमानें पर रिपोर्टिंग भी हुई थी। जस्टिस नाथ ने कहा, "लगातार घटनाएं हो रही हैं और देश की इमेज दूसरे देशों की नजर में खराब हो रही है। हम न्यूज रिपोर्ट भी पढ़ रहे हैं।"(जस्टिस नाथ ने खास तौर पर एडिशनल सॉलिसिटर जनरल अर्चना पाठक दवे से यह भी पूछा कि दिल्ली सरकार ने एफिडेविट क्यों फाइल नहीं किया है।

जस्टिस नाथ ने कहा, " एनसीटी ने एफिडेविट फाइल क्यों नहीं किया? चीफ सेक्रेटरी को एक्सप्लेनेशन देना होगा...नहीं तो, कॉस्ट लगाई जा सकती है और सख्त कदम उठाए जाएंगे...सभी राज्यों/ यूटीएस को नोटिस जारी किए गए थे...आपके ऑफिसर अखबार या सोशल मीडिया नहीं पढ़ते? सभी ने इसकी रिपोर्ट की है...जब उन्हें पता चलेगा, तो उन्हें आगे आना चाहिए! सभी चीफ सेक्रेटरी 3 नवंबर को मौजूद रहें, नहीं तो हम कोर्ट ऑडिटोरियम में करेंगे।"

अमेरिका के विदेश ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मॉस्को के साथ अपने संबंधों को लेकर नई दिल्ली पर दबाव बनाने में कोई संकोच नहीं किया है। रूस पर लगाए गए पश्चिमी प्रतिबंधों में शामिल होने से भारत का इनकार वाशिंगटन को लगातार परेशान कर रहा है। इसलिए, रुबियो की यह नरम पहल यह स्वीकारोक्ति भी है कि दबाव की एक सीमा होती है, और अनुनय-विनय तब ज़्यादा कारगर होती, जब भारत को अमेरिकी रणनीतिक दायरे में बनाए रखना लक्ष्य हो।

नई दिल्ली के दृष्टिकोण से, इस बैठक ने दोहरा उद्देश्य भी पूरा किया। इसने वाशिंगटन को याद दिलाया कि भारत के साथ साझेदारी स्वत: नहीं होती, इसे भारत की आर्थिक प्राथमिकताओं और रणनीतिक स्वायत्तता के सम्मान के माध्यम से अर्जित किया जाना चाहिए। जयशंकर के संयमित स्वर, जिसमें उन्होंने "पारस्परिक हितों और पारस्परिक संवेदनशीलता" पर ज़ोर दिया, ने शांत दृढ़ता का संकेत दिया। भारत, अमेरिकी जुड़ाव का स्वागत करता है, लेकिन किसी के दबाव या निर्देश में नहीं चलेगा भारत। अंतत:, रुबियो की यह पहल तात्कालिक परिणामों से ज्यादा प्रतीकात्मक विश्वास बहाली की कोशिश थी, यह दिखाने के लिए कि ट्रंप की अनिश्चित नीतियों के बावजूद, अमेरिकी व्यवस्था के कुछ हिस्से अभी भी भारत को अमेरिका के दीर्घकालिक हितों के केन्द्र में देखते हैं। यह संदेश भारतीय जनता का भरोसा दोबारा जीत पाएगा या नहीं, यह तो समय बताएगा, लेकिन फिलहाल इस कूटनीति ने दोनों देशों के रिश्तों में कुछ राहत और शायद थोड़ी और उम्मीद पैदा की है।

पुणे में पकड़ा गया संदिग्ध आतंकी

- **तलाशी के दौरान एटीएस को आपत्तिजनक साहित्य, इलैक्ट्रोनिक उपकरण एवं दस्तावेज मिले।**

पुणे, 27 अक्टूबर। महाराष्ट्र के आतंकवाद निरोधी दस्ते (एटीएस) ने सोमवार को पुणे में कई जगहों पर छापेमारी की। इस कार्रवाई में एटीएस ने 28 वर्षीय जुबेर हंगरगीकर को गिरफ्तार किया। यह कार्रवाई कोंढ वा इलाके में की गई। यह कार्रवाई आतंकवादी गतिविधियों में मदद करने के संदिग्ध व्यक्तियों के खिलाफ की गई है। हंगरगीकर को 4 नवंबर तक पुलिस हिरासत में भेज दिया गया है। एटीएस ने 9 अक्टूबर को पुणे में आतंकवाद से जुड़े एक मामले में कई ठिकानों पर छापेमारी की थी।

इस तलाशी अभियान में कई इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, दस्तावेज़ और साहित्य ज़ब्त किए गए थे। जांच के दौरान सामने आई आपत्तिजनक सामग्री के आधार पर, 2008 में संशोधित गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम, 1967 के प्रासंगिक प्रावधानों के तहत एक प्राथमिकी दर्ज की गई है। एफआईआर दर्ज होने के बाद, एटीएस ने जुबेर हंगरगीकर को गिरफ्तार कर लिया। मामले की आगे की जाँच महाराष्ट्र एटीएस द्वारा की जा रही है।

इससे पहले, पुलिस ने दिल्ली में आईएसआईएस से प्रेरित एक मॉड्यूल का भंडाफोड़ करते हुए दो आतंकवादियों को गिरफ्तार किया था। दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने छापेमारी के दौरान दोनों संदिग्धों को गिरफ्तार किया। गिरफ्तार किए गए आतंकवादियों में से एक दिल्ली का रहने वाला है, जबकि दूसरा मध्य प्रदेश का बताया जा रहा है।

सूत्रों के अनुसार, दोनों आतंकवादी आईईडी विस्फोट की योजना बना रहे थे और अपनी योजना के अंतिम चरण में थे। जाँच में यह भी पता चला है कि ये आतंकवादी आत्मघाती हमलों का प्रशिक्षण ले रहे थे। गिरफ्तार किए गए दोनों संदिग्ध आईएसआईएस मॉड्यूल का हिस्सा हैं और विस्फोट के लिए पूरी तरह तैयार थे।

सीजेआई गवई पर ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कि सीजेआई ने उदारता दिखाते हुए राकेश किशोर को माफ कर दिया है, इसलिए इस मामले को समाप्त माना जाएगा। हालांकि, अदालत ने ऐसे कृत्यों के महिमामंडन और भविष्य में रोक लगाने के लिए दिशानिर्देश जारी करने पर विचार जारी रखने का संकेत दिया।

सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमाल्या बागची की पीठ सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन (एससीबीए) की याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जिसमें किशोर के खिलाफ आपराधिक अवमानना और सोशल मीडिया पर महिमामंडन रोकने के लिए आदेश की मांग की गथी। एससीबीए के अध्यक्ष विकास सिंह ने कहा कि शुरुआत में मामला समाप्त हो गया था, जब सीजेआई ने किशोर को माफ कर दिया था, लेकिन राकेश किशोर ने मीडिया से कहा कि भगवान ने मुझसे ऐसा करवाया और इस पर सोशल मीडिया पर मीम्स बन रहे हैं, जिससे न्यायपालिका का मजाक बन रहा है।

विकास सिंह ने बताया कि राकेश किशोर ने मीडिया को इंटरव्यू देते हुए अपने कृत्य को दोहराने की कसम भी खाई। इस पर जस्टिस सूर्यकांत ने स्वीकार किया कि राकेश किशोर का व्यवहार गंभीर आपराधिक अवमानना जैसा है, लेकिन जब सीजेआई ने माफ कर दिया, तो यह मामला आगे नहीं बढ़ सकता। जस्टिस बागची ने स्पष्ट किया कि न्यायालय की अवमानना के मामलों में अवमानना कार्रवाई का निर्णय संबंधित जज पर निर्भर होता है।

आखिर ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

तक कि जेडीयू नेता और वर्तमान मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, जो कथित तौर पर बीमार हैं, भी दर्जनों सभाओं को संबोधित कर चुके हैं, जैसे कि आरजेडी नेता तेजस्वी यादव ने किया है। जेएसपी नेता प्रशांत किशोर भी लगातार प्रचार दौरे पर हैं। इस बीच, राहुल गांधी को पुरानी दिल्ली की गलियों में 'इनमार्टिस (हस्तशिल्प) तैयार करते हुए देखा गया है।

कांग्रेस ने 2024 लोकसभा चुनावों में बिहार की तीन सीटों पर जीत हासिल की थी, जिनमें से दो सीटें सीमांचल क्षेत्र में है, जो पश्चिम बंगाल सीमा के पास स्थित हैं, और जहां मतदान दूसरे चरण में 11 नवम्बर को होना है। 2020 विधानसभा चुनावों में कांग्रेस ने 70 सीटों पर चुनाव लड़ा था तथा 19 सीटों पर जीत दर्ज की थी। अगर कांग्रेस इन आंकड़ों में सुधार करना चाहती है, तो चुनाव प्रचार में अपनी पूरी ताकत झोंकनी होगी। समय की कमी को देखते हुए, यह देखना होगा कि राहुल गांधी वह ऊर्जा और जादू दोबारा उत्पन्न कर पाते हैं कि नहीं, जो उन्होंने वोट अधिकार यात्रा के दौरान पैदा किया था।

बांग्लादेश के प्रमुख यूनुस ने पूर्वोत्तर भारत को बांग्लादेश का हिस्सा बताया

मोहम्मद यूनुस ने पाक जनरल को एक किताब दी है जिसमें बांग्लादेश के नक्शें में भारत का पूर्वोत्तर भाग भी है

- **यूनुस ने पाक जनरल साहिर शमशाद मिर्ज़ा को "आर्टऑफ ट्रायम्फ" भेंट की, जिसके कवर पर प्रदर्शित नक्शें में असम से लेकर अरुणाचल प्रदेश तक सातों राज्य बांग्लादेश के हिस्से के रुप में प्रदर्शित किए गए हैं।**

ढाका, 27 अक्टूबर। बांग्लादेश के अंतरिम नेता मुहम्मद यूनुस द्वारा एक पाकिस्तानी जनरल को दिए उपहार ने नया विवाद खड़ा कर दिया है। मोहम्मद यूनुस ने पाकिस्तानी जनरल साहिर शमशाद मिर्जा को एक विवादास्पद किताब "आर्ट ऑफ ट्रायम्फ" भेंट की, इस किताब के कवर पर छपे नक्शे में भारत के पूर्वोत्तर राज्यों को बांग्लादेश का हिस्सा दिखाया गया है। यूनुस के इस कदम को भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के मुद्दे पर कूटनीतिक हलचल उत्पन्न करने की कोशिश के तौर पर देखा जा रहा है।

बांग्लादेश यात्रा पर पहुंचे पाकिस्तान के ज्वाइंट चीफ्स ऑफ स्टाफ कमेटी के अध्यक्ष जनरल साहिर शमशाद मिर्जा को आर्ट ऑफ ट्रायम्फ भेंट की थी। जिसकी कवर पर दिखाए गए नक्शे में भारत के सातों पूर्वोत्तर राज्य असम से लेकर अरुणाचल तक को बांग्लादेश का हिस्सा दर्शाया गया है। बांग्लादेश सरकार के अंतरिम प्रमुख की इस हरकत की जमकर आलोचना भी की जा रही है।

इस पूरे मामले पर भारत सरकार की तरफ से फिलहाल कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया नहीं दी गई है। आर्ट ऑफ ट्रायम्फ जुलाई-अगस्त 2024 के छात्र आंदोलन के दौरान दीवारों पर बनाई गई ग्रैफिटी और अन्य चित्रों से भरी है।

जनरल साहिर शमशाद मिर्जा ने इस सप्ताहांत बांग्लादेश का दौरा ऐसे समय पर किया, जब दोनों देशों के बीच रिश्तों में करीबी बढ़ रही है। शमशाद मिर्जा पाकिस्तानी सेना में नंबर दो की हैसियत रखते हैं। जानकारी के मुताबिक, यूनुस पहले भी इस किताब को कुछ अन्य विदेशी हस्तियों को भेंट कर चुके हैं।

यह पहली बार नहीं है, जब यूनुस की ओर से इस तरह की हरकत की गई है। पिछले कुछ महीनों में वह विदेशों में आयोजित कार्यक्रमों के दौरान, पूर्वोत्तर राज्यों का कई बार जिक्र कर चुके हैं। अप्रैल में अपनी पहली चीन यात्रा के दौरान यूनुस ने यह दावा करके नई दिल्ली को नाराज कर दिया था कि बांग्लादेश इस क्षेत्र के लिए समुद्र का एकमात्र संरक्षक है, क्योंकि पूर्वोत्तर भारत भूमि से घिरा है। इसके जरिये उन्होंने चीन को इस क्षेत्र में अपना प्रभाव बढ़ाने और अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए प्रोत्साहित किया।

भारत ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कई अन्य मुद्दों पर भी मतभेद बने रहे।

भारत-अमेरिका व्यापार वार्ता के सकारात्मक घटनाक्रमों की जानकारी मुख्य आर्थिक सलाहकार वी. अनंत नागेश्वरन ने कलकत्ता में भारत चेंबर ऑफ कॉमर्स ने आयोजित एक सम्मेलन को संबोधित करते हुए दी। उन्होंने कहा कि सभी अड़चनें दूर हो गई हैं लेकिन समझौते में रुकावट डालने वाले कुछ नए मुद्दे भी हैं।

इस बीच, अमेरिका और चीन ने भी कथित रूप से अपने व्यापार विवादों को सुलझा लिया है और वे परस्पर व्यापार के लिए एक रूपरेखा समझौते पर पहुँचने के करीब हैं।

ट्रंप ने चीनी निर्यात पर भी शुल्क लगाए थे, लेकिन वे इन्हें लागू करने में बार-बार पीछे हटते रहे और कभी नरम तो कभी सख्त रुख अपनाते रहे। दरअसल वे चीन की संभावित जवाबी कार्रवाई से डर रहे थे।

चीन के पास अमेरिका के खिलाफ लड़ाई में एक बड़ा हथियार था, "दुर्लभ खनिज" का वैश्विक बाज़ार, जिस पर उसका नियंत्रण है। ये खनिज रक्षा वस्तुओं से लेकर इलेक्ट्रॉनिक सामानों तक, हर क्षेत्र में अत्यंत आवश्यक हैं। चीन ने अमेरिका को इन खनिजों की सभी शिपमेंट रोकने की धमकी दी थी, जिसके बाद अमेरिका को पीछे हटना पड़ा।

'एसआईआर लागू करने में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए'

- **जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्लाह ने कहा कि बिहार के नतीजे आने के बाद ही एसआईआर का दूसरा चरण शुरु होना चाहिए।**

श्रीनगर, 27 अक्टूबर। जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने सोमवार को कहा कि भारतीय चुनाव आयोग (ईसीआई) को मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को लागू करने में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। ।

अब्दुल्ला ने विधानसभा सत्र के बाद पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि बिहार में एसआईआर के कार्यान्वयन को लेकर पहले ही कुछ शिकायतें आ चुकी हैं। उन्होंने कहा, "हमें यह भी नहीं पता कि एसआईआर उन लोगों के लिए फायदेमंद होगा या नहीं जिन्हें यह मिलेगा। पहले बिहार में चुनाव पूरे हो जाने दीजिए, फिर देखेंगे कि एसआईआर वाकई फायदेमंद है या नहीं।"मुख्यमंत्री ने चुनाव आयोग से आग्रह किया कि वह इस प्रणाली को कहीं और लागू करने से पहले नतीजों का इंतज़ार करे। उन्होंने कहा, "बिहार के नतीजे अभी नहीं आए हैं। चुनाव आयोग को जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए क्योंकि तब ऐसा लगेगा कि आयोग अपनी स्वतंत्रता खो रहा है और किसी राजनीतिक दल के दबाव में काम कर रहा है।"

अब्दुल्ला ने अनुच्छेद 370 के निरस्त होने के बाद विधानसभा क्षेत्रों के पुनर्निर्धारण का हवाला देते हुए आरोप लगाया, "हमने पहले भी देखा है कि जम्मू-कश्मीर में परिसीमन यहाँ के लोगों के लाभ के लिए नहीं किया गया था। यह एक खास राजनीतिक दल को लाभ पहुँचाने के लिए किया गया था।" उन्होंने कहा कि जिस तरह से सीटों का बंटवारा किया गया।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा राष्ट्रदूत प्रेस, जी1/63 इंडस्ट्रीयल एरिया फेस प्रथम, जालौर, (राज.) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2006/17286 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908